दैनिक सीहोर जिले का प्रथम दैनिक K✌K RNI No.MPHIN/2003/10309

क्षितिज ✌ किरण

त्वदीय पाद पंकजम् नमामि देवी नर्मदे | सीहोर जिले, होशंगाबाद संभाग एवं जबलपुर से एक साथ प्रकाशित एकमात्र समाचार-पत्र

प्रेरणापुंज -विचित्र कुमार सिन्हा वर्ष-22 अंक-53 सीहोर, शुक्रवार 11 अप्रैल 2025 पृष्ठ-8 मूल्य -1 रूपये सम्पादक- कृष्णकान्त सक्सेना

मुंबई आतंकी हमलों के मास्टरमाइंड तहव्वुर राणा भारत लाया गया

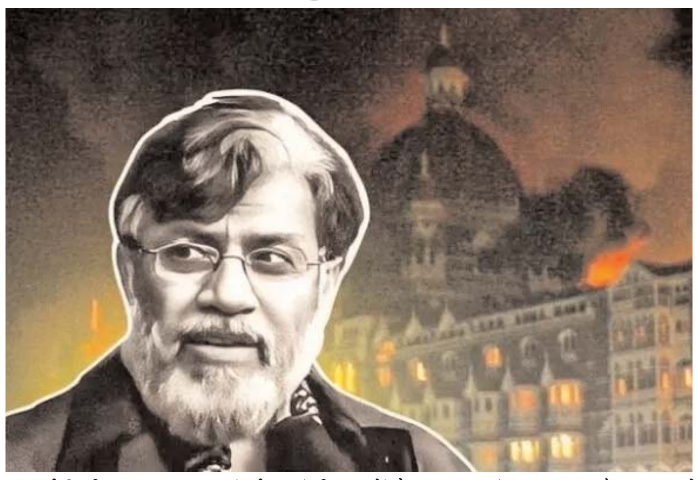

नई दिल्ली,(ए)। 26/11 मुंबई आतंकी हमलों के मास्टरमाइंड तहव्वुर हुसैन राणा को लेकर अमेरिका से विशेष विमान दिल्ली पहुंच गया है। तहव्वुर राणा 2009 से अमेरिका में बंद था। अब कड़ी सुरक्षा के बीच तहव्वुर राणा को एनआईए हेडक्वार्टर लाया जाएगा। यहां मेडिकल चेकअप होगा। फिर कोर्ट में पेश किया जाएगा। राणा को तिहाड़ जेल में रखा जाएगा। सबसे पहले राष्ट्रीय जांच एजेंसी (NIA) के अधिकारी पूछताछ करेंगे।

पाकिस्तान ने तहव्वुर राणा से पल्ला झाड़ा

इस बीच, पाकिस्तान ने तहव्वुर राणा से पल्ला झाड़ लिया है। पूरी दुनिया जानती है कि राणा पाकिस्तान मूल का कनाडाई नागरिक है, लेकिन अब पाकिस्तान के विदेश मंत्रालय का कहना है कि राणा ने 20 साल से अपने कागजात अपडेट नहीं किए हैं। इसलिए अब वह पाकिस्तान का नागरिक नहीं है।यह बात और है कि राणा का जन्म पाकिस्तान में हुआ, उसने वहीं पढ़ाई की, सेना में शामिल हुआ, 10 साल तक सेवा दी और कैप्टन तक बना। राणा के खिलाफ पटियाला हाउस कोर्ट में पेशी होगी।तहव्वुर हुसैन राणा के भारत पहुंचने पर उसे दिल्ली की तिहाड़ जेल में उच्च सुरक्षा वाले वार्ड में रखा जाएगा।

ममता बनर्जी के लिए कोई पति क्यों नहीं खोजते, सुप्रीम कोर्ट के पूर्व जज के बयान से सियासत में भूकंप

नई दिल्ली (आरएनएस)। वक्फ (संशोधन) अधिनियम को लेकर सियासत गरमाई हुई है। जिसको लेकर पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने कहा कि भले ही आप मुझे गोली मार दें, आप मुझे (उस) एकता से अलग नहीं कर पाएंगे। वहीं, अब सुप्रीम कोर्ट के पूर्व जज मार्कंडेय काटजू द्वारा ममता बनर्जी पर दिए गए बयान को लेकर सियासत और ज्यादा गर्मा गई है।सुप्रीम कोर्ट के पूर्व जज मार्कंडेय काटजू ने ममता बनर्जी के लिए 'पति' खोजने की सलाह दी है। इस पर राज्य में सत्तारूढ़ टीएमसी यानी तृणमूल कांग्रेस ने हिंसा तक की धमकी दे दी है। खास बात है कि अपने बयानों को लेकर काटजू खासे चर्चा में बने रहते हैं। टीएमसी नेता कुणाल घोष ने एक्स पर फोटो पोस्ट किया है। फोटो के अनुसार, 'क्यों बंगाली ममता बनर्जी के लिए अच्छा पति नहीं खोज लेते?' इसपर घोष ने बंगाली भाषा में किए पोस्ट पर काटजू के लिए धमकी जारी की है। उन्होंने लिखा, 'अगर ऐसा वास्तव में इस व्यक्ति ने कहा है और अगर वह माफी नहीं मांगते हैं और डिलीट नहीं करते हैं, तो इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि वह किस पद पर हैं।

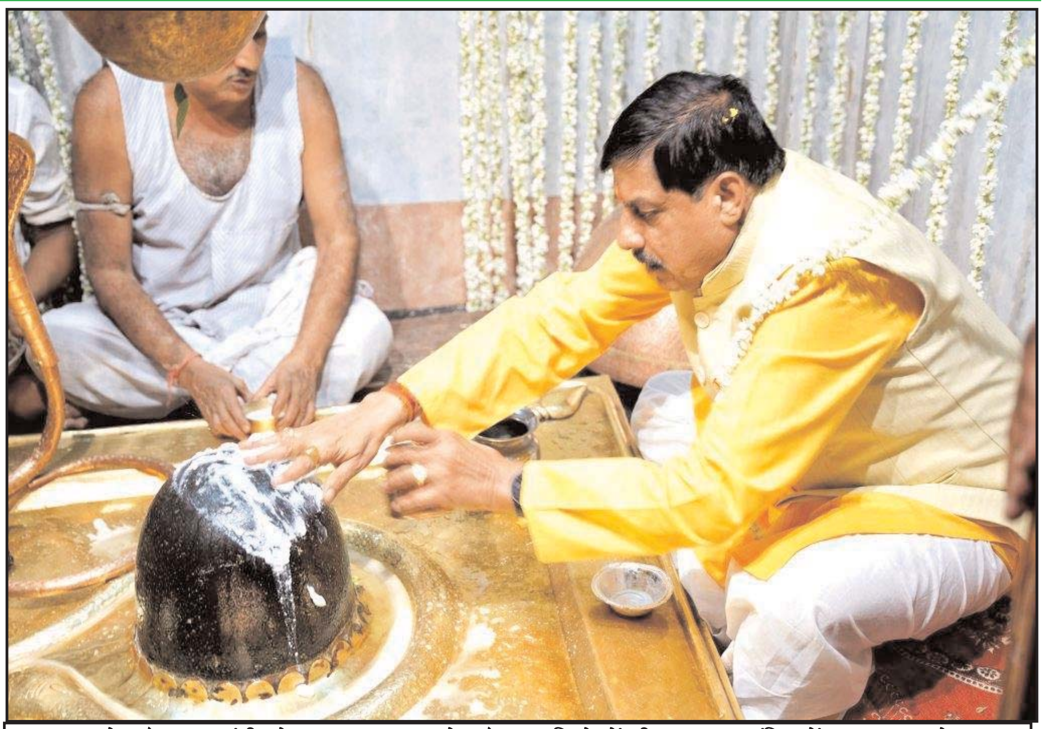

मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री मोहन यादव मध्य प्रदेश के धार जिले में श्री जगरदार मंदिर में अनुष्ठान करते हुए.

पंजाब में धमाके के बाद पाकिस्तान से सटे बॉर्डर पर रेड अलर्ट, इलाका सील

कलानौर ,(आरएनएस)। गुरदासपुर की अंतरराष्ट्रीय सीमा पर तैनात बीएसएफ की 58 बटालियन की बीओपी चौंतरा के इलाके में कंटीली तार के पार देश विरोधी तत्वों की ओर से लगाई गई माइन में से एक बम फटने से बुधवार को बीएसएफ का जवान सोहन सिंह जख्मी हो गया था। जिसके बाद अब रेड अलर्ट जारी कर दिया गया है।कंटीली तार के पार हुए बम धमाके के बाद बीएसएफ ने वीरवार को पाकिस्तान के साथ सटी पूरी अंतरराष्ट्रीय सीमा पर रेड अलर्ट जारी किया गया है। इसके अलावा बम ब्लास्ट वाले इलाके को पूरी तरह से सील कर दिया गया है। बीएसएफ की ओर से खोजी कुत्तों की मदद से इलाके की जांच की जा रही है। इसके अलावा इलाके में मिले दो अन्य बम भी डिफ्यूज कर दिए गए हैं। फिलहाल ब्लास्ट वाले इलाके में किसानों के जाने पर पाबंदी लगा दी गई है।

विमान लैंड करते ही आया पायलट को अटैक और हो गई मौत

-हाल ही में हुई थी शादी, एयर इंडिया ने कहा- मूल्यवान सहकर्मी खो दिया

नई दिल्ली,(ए)। श्रीनगर से दिल्ली की उड़ान पूरी करने के बाद एयर इंडिया एक्सप्रेस के एक पायलट की नई दिल्ली में हार्ट अटैक से मौत हो गई। पायलट की हाल ही में शादी हुई थी। एक रिपोर्ट के मुताबिक यह घटना विमान के इंदिरा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर उतरने के कुछ ही समय बाद हुई।

एयरलाइन के मुताबिक दिल्ली में विमान के उतरने के बाद पायलट को अस्वस्थ महसूस हुआ और उसे पास के एक अस्पताल ले जाया गया, जहां डॉक्टरों ने चेकअप के बाद उसे मृत घोषित कर दिया। यह घटना उस समय हुई जब पायलट ने श्रीनगर अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे से दिल्ली के लिए एयर इंडिया एक्सप्रेस उड़ान का संचालन कर रहा था। एयरलाइन के सूत्रों के मुताबिक दिल्ली में उतरने के बाद कैप्टन अरमान ने विमान के अंदर उल्टी की, डिस्पैच ऑफिस जाने से पहले उनमें परेशानी के शुरुआती लक्षण दिखे, जहां बाद में उन्हें दिल का दौरा पड़ा।आईजीआई हवाई अड्डे के एयर इंडिया एक्सप्रेस सुविधाओं में चिकित्सा कर्मियों को तुरंत घटनास्थल पर बुलाया गया, लेकिन उनकी त्वरित प्रतिक्रिया और अस्पताल ले जाने के बावजूद, पायलट अरमान को बचाया नहीं जा सका।

सुप्रीम कोर्ट के ऐतिहासिक फैसले के बाद क्या राज्यपाल नहीं रोक सकेंगे विधानसभा से पारित विधेयक?

नई दिल्ली,(ए)। सुप्रीम कोर्ट द्वारा मंगलवार को दिए गए ऐतिहासिक फैसले के बाद सवाल किए जा रहे हैं कि क्या राज्यपाल अब विधानसभा में पारित विधेयकों को अनिश्चितकाल के लिए रोक नहीं सकेंगे? वैसे कोर्ट ने आपने आदेश में स्पष्ट किया है कि राज्यपाल विधानसभा द्वारा पारित विधेयकों को अनिश्चितकाल तक रोक नहीं सकते। कोर्ट का यह निर्णय तमिलनाडु सरकार बनाम राज्यपाल मामले में आया है, जिससे न केवल तमिलनाडु, बल्कि देश के अन्य राज्यों की चुनी हुई सरकारों को बड़ी राहत मिलती दिख रही है।

सुप्रीम कोर्ट में जस्टिस जे.बी. पारदीवाला और आर. महादेवन की डबल बेंच ने तमिलनाडु सरकार बनाम तमिलनाडु के राज्यपाल मामले की सुनवाई करते हुए उक्त फैसला दिया है। कोर्ट ने आदेश में कहा है कि राज्यपाल के पास राज्य विधानसभा की तरफ से भेजे गए विधेयकों पर वीटो का अधिकार नहीं है। वे विधानसभा द्वारा पारित किसी बिल को अनिश्चितकाल के लिए रोक नहीं सकते हैं। कोर्ट ने स्पष्ट किया कि संविधान के अनुच्छेद 200 के तहत राज्यपाल के पास कोई विवेकाधिकार नहीं है।

मुख्यमंत्री डॉ.यादव और केन्द्रीय मंत्री श्री गडकरी ने 5800 करोड़ रूपए लागत वाली 10 राष्ट्रीय राजमार्ग परियोजनाओं का किया लोकार्पण एवं भूमि-पूजन

मध्यप्रदेश में दिखती हैं विकास की ललक : श्री गडकरी

भोपाल ,(ए)।केन्द्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी और मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने गुरूवार को धार जिले के बदनावर के ग्राम खेड़ा में आयोजित कार्यक्रम में 5800 करोड़ रूपए की लागत वाली 10 राष्ट्रीय राजमार्ग परियोजनाओं एवं संबद्ध अधोसंरचना निर्माण कार्यों का भूमि-पूजन एवं लोकार्पण किया। केन्द्रीय मंत्री श्री गडकरी ने कहा कि मध्यप्रदेश में डबल इंजन की सरकार है। यहां तेजी से विकास हो रहा है। सबको सुखी, समृद्ध और सशक्त बनाने का विजन लेकर मुख्यमंत्री डॉ. यादव बड़ी तेजी से प्रदेश को विकास के पथ पर आगे ले जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि राजमार्ग सिर्फ एक मार्ग नहीं, यह जन-जन का जीवन बदलने वाले प्रगति पथ होते हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के कुशल नेतृत्व में पिछले 10 सालों में हम देश की अधोसंरचना में व्यापक बदलाव लेकर आए हैं। देश को विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनाना है, इसमें मध्यप्रदेश की भागीदारी भी होगी। म.प्र. में विकास की ललक दिखाई देती है, इसलिए हम इसे देश के विकास का सबसे बड़ा अंशभागी राज्य बनायेंगे।केन्द्रीय मंत्री श्री गडकरी ने घोषणा करते हुए कहा कि अगले तीन साल में हम मध्यप्रदेश में उपलब्ध राष्ट्रीय राजमार्ग नेटवर्क को अमेरिका से अच्छा और सुंदर बनायेंगे। उन्होंने कहा कि अगले एक साल में हम देश में तीन लाख करोड़ रूपए से अधिक के राष्ट्रीय राजमार्ग व अन्य अधोसंरचना निर्माण कार्य पूरे करेंगे। उन्होंने कहा कि किसी भी देश-प्रदेश के विकास के लिए 4 प्रमुख संसाधनों जल, ऊर्जा, परिवहन और अधोसंरचनात्मक विकास की जरूरत होती है और उन्हें खुशी है कि मध्यप्रदेश इन चारों संसाधनों के विकास पर तेजी से बढ़ रहा है।केन्द्रीय मंत्री श्री गडकरी ने मुख्यमंत्री डॉ. यादव की मांग पर मंच से ही केन्द्रीय सड़क निधि से 12 हजार करोड़ रूपए लागत से 400 कि.मी. लंबाई 6 नई राष्ट्रीय राजमार्ग परियोजनाओं के निर्माण एवं विकास कार्यों को मंजूरी दी। केन्द्रीय मंत्री ने मध्यप्रदेश में 33 हजार करोड़ रूपए की लागत से एनएचएआई द्वारा निर्मित किए जाने वाले 5 नए ग्रीनफील्ड इकॉनामिक कॉरिडोर निर्माण कार्य, रिंग रोड, एलिवेटेड कॉरीडोर, सेतु एवं अन्य निर्माण कार्यों को भी मंजूरी देते हुए इन निर्माण कार्यों के पूर्ण होने की समय-सीमा भी घोषित की।

पैक्ड फूड में कितना शुगर, नमक या हानिकारक फैट साफ शब्दों में इसकी जानकारी दें

सुप्रीम कोर्ट ने केंद्र को तीन माह के अंदर नियम बनाने को कहा

नई दिल्ली,(ए)। सुप्रीम कोर्ट ने मोदी सरकार को साफ शब्दों में कह दिया हैं कि वह तीन महीने के अंदर पैक्ड फूड पर चेतावनी वाली लेबलिंग को लेकर नए और सख्त नियम बनाए। सुप्रीम कोर्ट ने आदेश एक पीआईए पर सुनवाई के दौरान दिया। आदेश में मांग की गई थी कि हर पैक्ड खाने की चीज पर सामने पर साफ शब्दों में चेतावनी दी जाए। इससे उस पैक्ड खाने को खाने वाला शख्स जान सकें कि उस चीज में कितना शुगर, नमक या हानिकारक फैट है।

सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई के दौरान केंद्र सरकार ने बताया कि जानकार कमेटी सुझावों के आधार पर रिपोर्ट तैयार करेगी। इतना ही नहीं केंद्र की ओर से कोर्ट को बताया कि 14 हजार से ज्यादा सुझाव और रिपोर्ट्स मुद्दे पर आ चुकी हैं। इसके लिए एक्सपर्ट कमेटी बनी है, जो इन सुझावों के आधार पर रिपोर्ट तैयार करेगी। कोर्ट ने आदेश दिया कि यह समिति जल्दी से जल्दी रिपोर्ट तैयार करे ताकि उसी आधार पर एफएसएसएआई लेबलिंग नियमों में संशोधन किया जा सके।

वहीं इंडियन काउंसिल ऑफ मेडिकल रिसर्च यानी आईसीएमआर के तहत हैदराबाद बेस्ड नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ न्यूट्रिशन (एनआईएन) ने भारतीय नागरिकों के लिए डाइटरी गाइडलाइन जारी की है। एनआईएन ने कहा, फूड सेफ्टी एंड स्टैंडर्ड अथॉरिटी ऑफ इंडिया (एफएसएसएआई) के सख्त मापदंड हैं, लेकिन लेबल पर दी गई जानकारी भ्रामक हो सकती है।

इस तारीख से होगी चारधाम यात्रा की शुरुआत, अलर्ट पर सरकार, एडवाइजरी की गई जारी

देहरादून (आरएनएस)। उत्तराखंड की विश्व प्रसिद्ध चारधाम यात्रा इस वर्ष 30 अप्रैल से शुरू होने जा रही है। हर साल की तरह इस बार भी लाखों श्रद्धालुओं के गंगोत्री, यमुनोत्री, केदारनाथ और बद्रीनाथ धाम के दर्शन के लिए पहुंचने का अनुमान है। यात्रा को सुगम, सुरक्षित और व्यवस्थित बनाने के लिए शासन और प्रशासन ने तैयारियां तेज कर दी हैं।इसी कड़ी में परिवहन विभाग ने चारधाम यात्रा के लिए एक विस्तृत एडवाइजरी जारी की है, जिसमें यात्रा मार्गों पर वाहन संचालन से लेकर चालकों के लिए विशेष नियम शामिल किए गए हैं। परिवहन विभाग की एडवाइजरी के अनुसार, पर्वतीय मार्गों पर रात के समय व्यवसायिक वाहनों के संचालन पर पूरी तरह से रोक लगा दी गई है। रात 10 से सुबह 4 बजे तक कोई भी व्यवसायिक वाहन चारधाम यात्रा मार्गों पर नहीं चल सकेगा।

वक्फ संशोधन बिल के विरोध में भोपाल में हुआ विरोध प्रदर्शन

-मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड का विरोध जारी रहेगा

भोपाल(ए)। वक्फ संशोधन एक्ट को लेकर देशभर में इसका जमकर विरोध हो रहा है। इसी कड़ी में गुरुवार को भोपाल में मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड के आहवान पर सेंट्रल लाइब्रेरी ग्राउंड पर भी विरोध प्रदर्शन किया गया है। प्रदर्शन में हजारो की संख्या में शामिल होकर लोगो ने अपना विरोध दर्ज कराया। इस दौरान जामियते उलेमा के अध्यक्ष हाजी मोहम्मद हारून ने कहा कि ये संशोधन देश के एक बड़े समुदाय के हितों को नजरअंदाज करते हुए जबरन थोपे जा रहे हैं, जो भारत जैसे लोकतांत्रिक देश की मूल भावना के खिलाफ है। हमें इस संशोधन में सिर्फ बुराइयां ही नजर आ रही हैं। भारत एक लोकतांत्रिक मुल्क है, यहां किसी पर कुछ थोपा नहीं जाता। अंग्रेजों के जमाने में भी कानून बनाने से पहले मशवरा किया जाता था, लेकिन आज बिना किसी सलाह के इतने महत्वपूर्ण बदलाव किए जा रहे हैं। उन्होंने कहा की वक्फ संपत्तियों को लेकर लोगो के बीच गलत धारणाएं फैलाते हुए कहा जा रहा हैं, की अगर वक्फ बोर्ड किसी संपत्ति पर दावा करता है, तो वह खुद-ब-खुद उसकी हो जाती है। जबकि हकीकत यह है, कि वक्फ बोर्ड ने कभी भी किसी संपत्ति पर अपने आप अधिकार नहीं जताया। उन्होनें भारत सरकार से मांग करते हुए कहा कि वक्फ एक्ट के संशोधनों पर पुनर्विचार किया जाए और मुस्लिम समुदाय की भावनाओं को ठेस न पहुंचाई जाए।

तीसरी आंख

चुनाव चिह्न विवाद : तेजस्वी यादव और मुकेश सहनी की मुश्किलें बढ़ी, कोर्ट ने भेजा नोटिस; पेश होने का आदेश

मुजफ्फरपुर (आरएनएस)। विकासशील इंसान पार्टी (वीआईपी) के संरक्षक मुकेश सहनी, राष्ट्रीय अध्यक्ष संतोष सहनी और विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव को चुनाव चिह्न के दुरुपयोग से जुड़े मामले में प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश की अदालत से नोटिस जारी किया गया है। कोर्ट ने सभी को 6 मई को स्वयं या अपने अधिवक्ता के माध्यम से उपस्थित होकर अपना पक्ष रखने का निर्देश दिया है। उपस्थिति न होने की स्थिति में कोर्ट एकपक्षीय सुनवाई कर आदेश पारित कर सकता है।

पिछले वर्ष 18 अप्रैल को भारती सार्थक पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष और अधिवक्ता सुधीर कुमार ओझा ने मुख्य न्यायिक दंडाधिकारी की अदालत में एक परिवाद दायर किया था। इसमें आरोप लगाया गया था कि वीआईपी नेताओं ने फर्जीवाड़ा और धोखाधड़ी कर नाव चुनाव चिह्न का दुरुपयोग किया।मुख्य न्यायिक दंडाधिकारी की अदालत ने सुनवाई के बाद परिवाद को खारिज कर दिया था। इसके खिलाफ अधिवक्ता ने प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश की अदालत में पुनरीक्षण याचिका (रिविजन वाद) दायर की, जिसे सुनवाई के लिए स्वीकार कर लिया गया।

एक पेड़ के लिए रेलवे को देना पड़ा 1 करोड़ रुपये का मुआवजा, किसान ने इस तरह जीता केस

नई दिल्ली(ए)। सेंट्रल रेलवे को 100 साल पुराने लाल चंदन के एक पेड़ के लिए 1 करोड़ रुपये जमा कराने का आदेश दिया गया है। यह आदेश बॉम्बे हाई कोर्ट की नागपुर बेंच ने जारी किया है। हाई कोर्ट के इन आदेशों के बाद, रेलवे ने यह पैसा जमा कर दिया है और हाई कोर्ट ने 9 अप्रैल को संबंधित किसान को इस राशि में से 50 लाख रुपये निकालने की अनुमति भी दे दी है।अभी उस पेड़ का मूल्यांकन बाकी है और किसान का कहना है कि पेड़ की कीमत इससे कहीं ज्यादा है। दरअसल, महाराष्ट्र के यवतमाल ज़िले के खारशी गांव के एक किसान केशव शिंदे और उनके पाँच बेटों ने 7 अक्टूबर 2024 को हाई कोर्ट में एक याचिका दायर की थी, जिसमें लाल चंदन के पेड़ के लिए मुआवज़ा मांगा गया था। केशव शिंदे, पुसाद तालुका के खारशी गांव में 2.29 हेक्टेयर

ज़मीन के मालिक हैं। लेकिन वर्धा-यवतमाल-पुसाद-नांदेड़ रेलवे लाइन उनके खेत से गुजरने के कारण, सेंट्रल रेलवे ने उनकी ज़मीन अपने कब्जे में ले ली थी। उन्हें सरकार द्वारा अधिग्रहित की गई ज़मीन का मुआवज़ा मिल गया था। लेकिन शिंदे ने अधिकारियों से यह मांग की थी कि खेत में मौजूद लाल चंदन के पेड़ के साथ-साथ येना, खैर जैसी उप-प्रजातियों के अन्य 8 से 10 पेड़ों और भूमिगत पाइपलाइन के लिए भी मुआवज़ा दिया जाए। लेकिन अधिकारियों ने कहा कि पहले लाल चंदन के पेड़ का मूल्यांकन करना होगा। इसके लिए वन विभाग को मूल्यांकन हेतु एक पत्र भी भेजा गया था। केशव शिंदे के बेटे और याचिकाकर्ता पंजाब शिंदे के अनुसार, उनके खेत की ज़मीन पर आम और अन्य फलों के बाग थे, जिनके लिए उन्हें भुगतान किया गया था।उन्होंने बताया कि उन्हें कुएं के लिए भी आठ लाख रुपये दिए गए। लेकिन उन्होंने कहा, "हमें पाइपलाइन और लाल चंदन समेत अन्य पेड़ों के लिए मुआवज़ा नहीं दिया गया।" इसी वजह से, 2014 से हम ज़िला कलेक्टर, वन विभाग, रेलवे और सिंचाई विभाग को पत्र लिख रहे हैं।

संत, महात्मा ज्ञान और सन्मार्ग के हैं प्रेरणा पुंज : मुख्यमंत्री डॉ. यादव

गौ-सेवा सहित जनकल्याण के कार्य होंगे निरंतर

महावीर जयंती पर रवीन्द्र भवन में हुआ विशेष कार्यक्रम

भोपाल (निप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि मध्यप्रदेश सरकार गौमाता की सेवा सहित जनकल्याण के विभिन्न कार्यों को संतजन का आशीर्वाद और मार्गदर्शन प्राप्त कर निरंतर रूप से कार्य करेगी। हमारे संत, महात्मा ज्ञान और सन्मार्ग के प्रेरणा पुंज हैं। भगवान महावीर ने अहिंसा, संयम, सत्य, समर्पण के मूल्यों को महत्व दिया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि महाराज जी और अन्य संतों के आशीर्वाद से राज्य सरकार महावीर स्वामी के सिद्धांतों का पालन करते हुए जनकल्याण की दिशा में आगे बढ़ रही है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव रवीन्द्र भवन सभागम, भोपाल में गुरूवार की शाम आयोजित महावीर जन्म कल्याणक महोत्सव और मुनि श्री प्रमाणसागर जी महाराज के 38वें दीक्षा दिवस कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। कार्यक्रम में जैन संप्रदाय के विभिन्न संगठनों द्वारा मुख्यमंत्री डॉ. यादव का अभिनन्दन किया गया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि भगवान महावीर और हमारे अन्य आराध्यों से भारत की विशेष पहचान विश्व में बनी है। विश्व के अधिकांश देशों में विभिन्न प्रकार के संघर्षों से संस्कृति की धारा प्रभावित हुई लेकिन भारत ऐसा राष्ट्र है जो संतों, मुनियों के बताए मार्ग पर आज भी चल रहा है। भारत में सन्मार्ग पर चलने की गौरवशाली परम्परा है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने मुनि श्री प्रमाणसागर जी महाराज के चरणों में नमन करते हुए कहा कि दुनिया में 200 से ज्यादा देश हैं, इनमें से अनेक देशों की संस्कृति कहां गई, किसी को पता नहीं चला। दुनिया भले उलझन में रहे लेकिन भारतमाता ने कई संस्कृतियों को पल्लवित-पोषित किया है। भगवान महावीर स्वामी ने जीवन का रहस्य भी समझाया है। अपरिग्रह, त्याग, ब्रह्मचर्य, समर्पण के मूल्यों को उन्होंने स्थापित किया। आचार्य विद्यासागर जी को देखकर भगवान महावीर का स्मरण होता था। आचार्य विद्यासागर जी महाराज जीते जी देवत्व को प्राप्त हो गए। उनके बारे में लिखे साहित्य को पढ़ने पर यह ज्ञात होता है कि वैचारिक रूप से वे कितने समृद्ध थे। इस अवसर पर मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने मुनि श्री से मुख्यमंत्री निवास पधारने का अनुरोध भी किया।

सत्ता के साथ श्रद्धा हो तो संस्कृति प्रतिष्ठित होती है

मुनि श्री प्रमाणसागर जी महाराज ने कहा कि आज देश का सौभाग्य है देश और देश के कई राज्यों में धर्मधारी सत्ता में हैं। सत्ता के साथ श्रद्धा हो, तो संस्कृति प्रतिष्ठित होती है। हमारी संस्कृति पर अनेक आघात भी हुए, लेकिन आज भी संस्कृति का स्वरूप सुरक्षित है। एआइ और रोबोट आ जाने से कार्य में सुविधा हो सकती है, लेकिन ये यंत्र संवेदना से दूर हैं। मनुष्य के पास संवेदना की शक्ति है। यदि संवेदना नहीं है तो मनुष्य भी रोबोट और यंत्र ही कहलाएंगे।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव और केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने खेड़ा (बदनावर) में राजमार्ग परियोजनाओं के भूमि-पूजन और लोकार्पण समारोह का दीप प्रज्ज्वलित कर शुभारंभ किया।

निमाड़ क्षेत्र का पहला 500 एम.व्ही.ए. क्षमता का पॉवर ट्रांसफार्मर ऊर्जीकृत

सिंगाजी थर्मल पॉवर से क्षेत्र को मिलेगी सीधे विद्युत सप्लाई

भोपाल (ए.)। मध्य प्रदेश पॉवर ट्रांसमिशन कंपनी (एमपी ट्रांसको) ने 400 केवी सबस्टेशन जुलवानिया में निमाड़ क्षेत्र का पहला और प्रदेश का तीसरा 500 एम.व्ही.ए. क्षमता का पॉवर ट्रांसफार्मर स्थापित किया है। इसके पहले मध्यप्रदेश में सिर्फ भोपाल में 500 एम.व्ही.ए. क्षमता के दो ट्रांसफार्मर स्थापित हुए हैं। ऊर्जा मंत्री प्रद्युम्न सिंह तोमर ने बताया कि खंडवा स्थित सिंगाजी सुपर थर्मल पॉवर प्लांट से निमाड़ क्षेत्र को सीधे विद्युत आपूर्ति के लिए 400 केवी सबस्टेशन जुलवानिया में इस ट्रांसफार्मर की व्यवस्था की गई है। उन्होंने बताया कि लगभग 30 करोड़ रुपए की अनुमानित लागत से इस ट्रांसफार्मर को स्थापित कर ऊर्जीकृत किया गया है।

छत से कूदकर महिला ने किया सुसाइड

भोपाल(आरएनएस) ।ईटखेड़ी इलाके में महिला ने अपने घर की छत से छलांग लगा दी। तीन साल पहले उसने लव मैरिज की थी। कुछ ही समय बाद पति से अलग हो गई थी। इस वजह से डिप्रेशन में रहने लगी थी। मामले में पुलिस ने मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है। घटना बुधवार रात की है, गुरुवार सुबह उसकी इलाज के दौरान मौत हो गई ।ईटखेड़ी थाना प्रभारी दुर्जन सिंह ने बताया कि 33 वर्षीय रानी सिकरवार पति रवि गौर ईटखेड़ी इलाके के एक गांव में रहती थी। बुधवार की रात करीब 2 बजे उसके छत से गिरने की सूचना मिली थी। इलाज के लिए उसे अस्पताल ले जाया गया था, जहां पर उसकी मौत हो गई थी। घटना की सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और जांच शुरू की ।शुरुआती जांच में पता चला है कि रानी की लव मैरिज हुई थी, बाद में वह अपने पति से अलग होकर मायके में रहने लगी थी। मायके में रहने के दौरान ही उसकी एक युवक से दोस्ती हो गई थी। बुधवार की रात उसकी बहनों ने देखा तो वह बिस्तर में नहीं थीं। बहनें उसकी तलाश करते हुए छत पर पहुंची तो वहां पर उन्होंने देखा कि रानी किसी से मोबाइल फोन पर बात कर रही है। पर जिस भी व्यक्ति से बात हो रही थी, उससे रानी का झगड़ा हो रहा था। बहनें कुछ समझ पातीं इसके पहले ही रानी ने दूसरी मंजिल स्थित छत से छलांग लगा दी। उसके छलांग लगाने के कुछ देर बाद ही वह युवक भी मौके पर पहुंच गया, जिससे वह बात कर रही थी। युवक और रानी के परिजन उसे अस्पताल लेकर पहुंचे थे, जहां पर इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई। गुरुवार को पीएम के बाद शव परिजनों को सौंप दिया गया है। पुलिस ने शिकायत के आधार पर आरोपी युवक के खिलाफ केस दर्ज कर लिया। बुधवार को एफआईआर की भनक लगते ही आरोपी युवक फरार हो गया। जिसकी तलाश में पुलिस जुटी हुई है। पुलिस का कहना है कि उसे जल्द ही गिरफ्तार कर लिया जाएगा।

यात्रियों की सुरक्षा और सुविधा के लिए रेल प्रशासन का सख्त रुख

बीना स्टेशन पर रेलवे मजिस्ट्रेट द्वारा औचक जांच, अव्यवस्थाओं पर त्वरित कार्रवाई

भोपाल (निप्र)। भोपाल, यात्रियों को स्वच्छ, सुरक्षित और नियमबद्ध यात्रा उपलब्ध कराने के लिए रेल प्रशासन लगातार प्रयासरत है। इसी क्रम में रेलवे मजिस्ट्रेट अनुराग खरे द्वारा बीना स्टेशन पर तथा कुछ महत्वपूर्ण ट्रेनों में औचक निरीक्षण किया गया। निरीक्षण का मुख्य उद्देश्य यात्रियों को दी जा रही सुविधाओं की गुणवत्ता का परीक्षण और रेलवे नियमों के पालन की स्थिति की समीक्षा करना था। गाड़ी संख्या 12137, 12108, 12618 एवं 12138 की पैंट्री कारों का निरीक्षण करते समय कुछ वेंडर बिना निर्धारित यूनिफॉर्म और गंदे कपड़ों में खाद्य सामग्री बेचते पाए गए। इसके अतिरिक्त पैंट्री कारों में स्वच्छता की स्थिति संतोषजनक नहीं पाई गई। इस संबंध में तुरंत संबंधित कर्मचारियों पर रेल अधिनियम के अंतर्गत कार्रवाई की गई तथा सुधार के निर्देश दिए गए। स्लीपर एवं एसी कोचों में टिकट चेकिंग के दौरान 68 यात्री बिना वैध टिकट यात्रा करते पाए गए, जिनके विरुद्ध रेलवे अधिनियम की धारा 137 के अंतर्गत कार्रवाई करते हुए 33,590 का अर्थदंड वसूला गया। इसके अतिरिक्त कुछ यात्रियों को चलती ट्रेन में पायदान पर खड़े होकर यात्रा करते हुए पकड़ा गया, जिस पर धारा 156 के तहत कार्रवाई की गई। कुछ मामलों में अवैध चैन पुलिंग की घटनाएं भी सामने आईं, जिन पर धारा 141 के अंतर्गत दंडात्मक कदम उठाए गए। बीना स्टेशन पर स्थित स्टालों का भी निरीक्षण किया गया। निरीक्षण में कुछ स्टाल बिना वैध लाइसेंस के खाद्य सामग्री बेचते हुए पाए गए तथा कई स्थानों पर स्वच्छता का अभाव मिला। इन मामलों में धारा 144 और 145 के तहत कार्रवाई करते हुए संबंधित व्यक्तियों पर जुर्माना लगाया गया। रिफ्रेशमेंट रूम के प्रबंधक और एक कर्मचारी पर गंदगी के लिए 2500-2500 का अर्थदंड लगाया गया। रेलवे की इस विशेष जांच के दौरान कुल 317 व्यक्तियों के विरुद्ध रेलवे अधिनियम के विभिन्न प्रावधानों के अंतर्गत कार्रवाई की गई तथा कुल 3,16,320 का अर्थदंड वसूला गया। रेलवे मजिस्ट्रेट अनुराग खरे ने कहा कि यह औचक जांच रेलवे द्वारा यात्रियों की सुविधा और सुरक्षा सुनिश्चित करने के उद्देश्य से की गई है। रेल प्रशासन सभी यात्रियों से अपील करता है कि वे नियमों का पालन करें, स्वच्छता बनाए रखें और सुरक्षित यात्रा में सहयोग करें।

बीजेपी का दलित विरोधी चेहरा एक बार फिर बेनकाब : संविधान और सामाजिक न्याय पर हमला अस्वीकार्य : जीतू पटवारी

भोपाल (आरएनएस) ।मध्य प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष जीतू पटवारी ने राजस्थान के अलवर में हुई शर्मनाक घटना पर बीजेपी को आड़े हाथों लिया है। यह घटना, जिसमें बीजेपी नेता और पूर्व विधायक ज्ञानदेव आहूजा ने दलित नेता टीकाराम जूली के मंदिर में पूजा-अर्चना करने के बाद मंदिर को गंगाजल से शुद्ध किया, यह बीजेपी की संकीर्ण, जातिवादी और दलित विरोधी मानसिकता का स्पष्ट प्रमाण है। पटवारी ने इस कृत्य को न सिर्फ एक व्यक्ति के सम्मान पर हमला करार दिया, बल्कि इसे पूरे दलित समाज, बाबासाहेब आंबेडकर के संविधान और सामाजिक समानता की भावना के खिलाफ षड्यंत्र बताया। पटवारी ने कहा, रामनवमी के पावन अवसर पर अलवर की एक सोसायटी में स्थित श्रीराम मंदिर में प्राण-प्रतिष्ठा समारोह का आयोजन हुआ था। इस समारोह में राजस्थान विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष और दलित समाज के गौरवशाली नेता टीकाराम जूली ने पूरी श्रद्धा और भक्ति के साथ पूजा-अर्चना की। लेकिन अगले ही दिन बीजेपी नेता ज्ञानदेव आहूजा ने इस पवित्र कार्य को 'अपवित्रता' करार देते हुए मंदिर में गंगाजल छिड़ककर उसे शुद्ध करने का दावा किया। यह बीजेपी का असली चेहरा है। यह पार्टी दलितों को मंदिर में पूजा करने का अधिकार भी नहीं देना चाहती। यह कृत्य सिर्फ टीकाराम जूली का अपमान नहीं, बल्कि पूरे दलित समाज की आस्था और गरिमा पर हमला है।

उन्होंने आगे कहा, ज्ञानदेव आहूजा ने सफाई देने की कोशिश की कि लेकिन अब बीजेपी के नेताओं का कोई भी कुतर्क या कोई भी बहाना किसी को मूर्ख नहीं बना सकता। सच्चाई यह है कि यह घटना एक दलित नेता के मंदिर में प्रवेश से जुड़ी थी, और बीजेपी की जातिवादी सोच ने इसे बर्दाश्त नहीं किया। यह वही सोच है, जो मनुस्मृति को संविधान से ऊपर मानती है और दलितों को दोयम दर्जे का नागरिक समझती है। पटवारी ने मध्यप्रदेश में बीजेपी शासन के दौरान दलितों पर हुए अत्याचारों की एक लंबी फेहरिस्त पेश करते हुए कहा, बीजेपी का दलित विरोधी रवैया कोई नई बात नहीं है। मध्यप्रदेश में सीधी जिले में एक बीजेपी कार्यकर्ता प्रवेश शुक्ला ने एक आदिवासी युवक पर पेशाब करके दलित-अदिवासी समाज का अपमान किया। मंदसौर के भानपुरा में एक दलित युवक को नंगा घुमाया गया, उसका मुंह काला किया गया और चप्पल की माला पहनाई गई।

निमाड़ क्षेत्र का पहला 500 एम.व्ही.ए. क्षमता का पॉवर ट्रांसफार्मर ऊर्जीकृत

भोपाल (आरएनएस) ।मध्य प्रदेश पॉवर ट्रांसमिशन कंपनी (एमपी ट्रांसको) ने 400 केवी सबस्टेशन जुलवानिया में निमाड़ क्षेत्र का पहला और प्रदेश का तीसरा 500 एम.व्ही.ए. क्षमता का पॉवर ट्रांसफार्मर स्थापित किया है। इसके पहले मध्यप्रदेश में सिर्फ भोपाल में 500 एम.व्ही.ए. क्षमता के दो ट्रांसफार्मर स्थापित हुए हैं। ऊर्जा मंत्री प्रद्युम्न सिंह तोमर ने बताया कि खंडवा स्थित सिंगाजी सुपर थर्मल पॉवर प्लांट से निमाड़ क्षेत्र को सीधे विद्युत आपूर्ति के लिए 400 केवी सबस्टेशन जुलवानिया में इस ट्रांसफार्मर की व्यवस्था की गई है। उन्होंने बताया कि लगभग 30 करोड़ रुपए की अनुमानित लागत से इस ट्रांसफार्मर को स्थापित कर ऊर्जीकृत किया गया है। इस ट्रांसफार्मर के ऊर्जीकृत होने से न केवल निमाड़ क्षेत्र के कृषि उपभोक्ताओं को अगले रबी सीजन में गुणवत्तापूर्ण विद्युत आपूर्ति हो सकेगी बल्कि इस ट्रांसफार्मर के स्थापित होने से क्षेत्र के लिफ्ट इरिगेशन सिस्टम के लिए भी पर्याप्त मात्रा में विद्युत की उपलब्धता रहेगी। ऊर्जा मंत्री श्री तोमर ने इस सफलता के लिए एमपी ट्रांसकों को बधाई दी है।

स्पेशल ट्रेन अब दिल्ली सफदरजंग के स्थान पर दिल्ली सराय रोहिल्ला से होगी रवाना

भोपाल (निप्र)। गाड़ी संख्या 04004/04003 दिल्ली सराय रोहिल्ला-अशोकनगर स्पेशल ट्रेन को अब दिल्ली सफदरजंग के स्थान पर दिल्ली सराय रोहिल्ला से संचालित किया जा रहा है। गाड़ी संख्या 04004 दिनांक 11 अप्रैल 2025 को दोपहर 12:15 बजे दिल्ली सराय रोहिल्ला से रवाना होकर, निर्धारित मार्ग पर होते हुए 12 अप्रैल को प्रात: 04:00 बजे अशोकनगर पहुंचेगी।

वापसी दिशा में, गाड़ी संख्या 04003 दिनांक 15 अप्रैल 2025 को सायं 17:00 बजे अशोकनगर से प्रस्थान कर, 16 अप्रैल को प्रात: 07:45 बजे दिल्ली सराय रोहिल्ला पहुंचेगी। वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक सौरभ कटारिया ने बताया कि इस विशेष गाड़ी में 01 तृतीय वातानुकूलित, 02 स्लीपर, 19 सामान्य श्रेणी एवं 02 दिव्यांगजन कोच सहित कुल 24 कोच होंगे। रेल प्रशासन यात्रियों से अनुरोध करता है कि यात्रा से पूर्व गाड़ी की समय-सारणी एवं ठहराव संबंधी अद्यतन जानकारी के लिए NTES/139 सेवा का उपयोग करें।

राज्यपाल श्री मंगुभाई पटेल ने राजभवन के प्रवेश द्वार क्रमांक- 1 और 2 के जीर्णोद्धार एवं सुदृढ़ीकरण कार्य का शिलान्यास और गेती चलाकर शुभारंभ किया।

भगवान महावीर स्वामी के सिद्धांत ही मानवता के मार्गदर्शक : सबनानी

भोपाल(निप्र)। महावीर जयंती पर भगवान का जन्म कल्याणक श्रद्धा भक्ति भाव के साथ मनाया गया। चौक बाजार से दिगंबर जैन पंचायत कमेटी के नेतृत्व में भगवान की भव्य शोभायात्रा चौक जैन मंदिर से निकली गई जो सुभाष चौक लखेरापुरा जनकपुरी इतवारा बुधवारा एवं मंगलवार से होते हुए श्री जी के मंदिर पहुंची, शोभायात्रा में भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश महामंत्री व विधायक भगवानदास सबनानी विशेष रूप से उपस्थित रहे, और उन्होंने रथ यात्रा में भगवान के रथ का सारथी बन यात्रा के साथ चले, कार्यक्रम में हजारों की संख्या में जैन समुदाय के बंधु उपस्थित रहे, पंचायत कमेटी के अध्यक्ष मनोज जैन वागा उपाध्यक्ष आलोक जैन पंचरत्न पूर्व अध्यक्ष प्रमोद जैन हिमांशु राकेश जैन अनुपम अमित जैन कड़ियां संजय जैन मुगावली विशेष रूप से उपस्थित रहे, भव्य रथ यात्रा का जगह-जगह स्वागत किया गया, अपने जन प्रतिनिधि को भगवान के रथ का सारथी बना देख उनकी भूरी-भूरी प्रशंसा की, ढोल धमाकों की ताल पर नाचते गाते सभी के साथ सबनानी भी भगवान की भक्ति में लीन दिखे, इस अवसर पर सबनानी ने भगवान महावीर स्वामी की आरती उतारी एवं सभी को भगवान महावीर स्वामी की जयंती पर अपनी शुभकामनाएं दी,साथ ही भगवान महावीर स्वामी के सिद्धांतों पर चलना आज की आवश्यकता बताया आज पूरे विश्व में शांति की स्थापना के लिए भगवान महावीर के दिखाए गये मार्ग पर चलना ही पड़ेगा और उनके सिद्धांतों से ही विश्व में शांति की स्थापना हो सकती है। हमारे यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने भी भगवान महावीर स्वामी के दिखाए गए मार्ग पर चलने के लिए सभी को प्रेरित किया है। शोभा यात्रा बड़े ही पारंपरिक हर्सोल्लास एवं धूमधाम से निकल गई।

विविध-समाचार

वित्तीय वर्ष 2024-25 में एम.पी. ट्रांसको के नेटवर्क का उल्लेखनीय विस्तार

भोपाल (निप्र)। ऊर्जा मंत्री प्रद्युम्न सिंह तोमर ने बताया कि वित्तीय वर्ष 2024-25 में मध्यप्रदेश पॉवर ट्रांसमिशन कंपनी (एम.पी. ट्रांसको) ने ट्रांसमिशन नेटवर्क (पारेषण प्रणाली) को सुदृढता प्रदान करते हुये सिस्टम में उल्लेखनीय विस्तार किया है। कंपनी ने 456 सर्किट कि.मी. की नई एकस्ट्रा हाईटेंशन लाइनों का निर्माण कर उन्हें ऊर्जीकृत किया है, इससे मध्यप्रदेश पॉवर ट्रांसमिशन कंपनी की ट्रांसमिशन लाइनें बढ़कर 42 हजार 520 सर्किट कि.मी. की हो गई है। इस दरम्यान स्थापित ट्रांसफार्मेशन कैपेसिटी (स्थापित क्षमता) में भी पर्याप्त वृद्धि हुई है। पिछले वित्तीय वर्ष 2024 की समाप्ति में जहां 79 हजार 815 एम.व्ही.ए. की कुल ट्रांसफार्मेशन कैपेसिटी (स्थापित क्षमता) थी वह अब मार्च 2025 की स्थिति में बढ़कर 81 हजार 911 एम.व्ही.ए. की हो गई है। उन्होंने जानकारी दी कि इस वित्तीय वर्ष में अतिरिक्त क्षमता वृद्धि के लिए एम.पी. ट्रांसको में कुल 46 नये पॉवर ट्रांसफार्मर स्थापित कर ऊर्जीकृत किये गए हैं। मंत्री श्री तोमर ने बताया कि मध्यप्रदेश में इस समय एम.पी. ट्रांसकों अपने 417 एकस्ट्रा हाईटेंशन सब स्टेशनों के माध्यम से विद्युत पारेषण करती है, जिसमें 400 के.व्ही. के 14 सब स्टेशन, 220 के.व्ही. के 88 एवं 132 के.व्ही. के 315 सब स्टेशन क्रियाशील है।

आगामी नेशनल लोक अदालत 10 मई के संबंध में प्री- सीटिंग बैठक का आयोजन किया गया

भोपाल (आरएनएस)। प्रधान जिला न्यायाधीश मनोज कुमार श्रीवास्तव के मार्गदर्शन मे एवं नोडल अधिकारी नेशनल लोक अदालत विशेष न्यायाधीश राजर्षि श्रीवास्तव एवं सचिव सुनीत अग्रवाल की उपस्थिति में बुधवार को आगामी नेशनल लोक अदालत 10 मई 2025 के सफल आयोजन के लिए न्यायालयों में लंबित क्लेम प्रकरणों के निराकरण के लिए बीमा कंपनी अधिकारीगण, अधिवक्तागण एवं क्लेमेंट अधिवक्तागण के साथ संबंधित न्यायाधीशगण एवं नोडल अधिकारीगण की उपस्थिति में प्री- सीटिंग बैठक का आयोजन किया गया।

महापौर ने सेकण्ड स्टॉप स्थित जैन मंदिर में पूजा-अर्चना की एवं झण्डावंदन भी किया

भोपाल (आरएनएस) ।भगवान महावीर जयन्ती के अवसर पर महापौर मालती राय ने सेकण्ड स्टॉप स्थित श्री श्वेताम्बर जैन मंदिर में भगवान श्री महावीर जी की पूजा-अर्चना की एवं झण्डावंदन भी किया और उपस्थितजन को शुभकामनाएं भी दी। भगवान महावीर जयन्ती के अवसर पर गुरूवार को आयोजित कार्यक्रम में जोन अध्यक्ष बृजुला सचान सहित बड़ी संख्या में सामाजिक बंधु उपस्थित थे।

महिला ने एक साथ 4 बच्चों को दिया जन्म,दो की हालत गंभीर

भोपाल (आरएनएस) ।कैलाशनाथ काटजू अस्पताल में बुधवार को एक चौंकाने वाला और दुर्लभ मामला सामने आया, जब एक महिला ने एक साथ चार बच्चों को जन्म दिया। इनमें दो बेटियां और दो बेटे शामिल हैं। यह अस्पताल के इतिहास में पहली बार हुआ है, जब किसी महिला ने एक साथ चार बच्चों को जन्म दिया हो। इससे पहले, पिछले साल एक महिला ने तीन बच्चों को जन्म दिया था ।डॉक्टरों के अनुसार, बच्चों का जन्म समय से पहले, यानी गर्भावस्था के सातवें महीने में ऑपरेशन के जरिए कराया गया। चारों नवजातों का वजन 800 ग्राम से 1 किलो के बीच है, जो सामान्य से काफी कम माना जाता है। फिलहाल सभी बच्चों को अस्पताल के आईसीयू में रखा गया है, जिनमें से दो की हालत गंभीर है और उन्हें वॉर्मर पर रखा गया है ।डॉक्टर के अनुसार एक साथ तीन बच्चों का जन्म अब आम होता जा रहा है, लेकिन चार बच्चों का जन्म एक दुर्लभ घटना है। महिला जब पहली बार जांच के लिए अस्पताल आई थी, तब सोनोग्राफी में चार भ्रूणों की पुष्टि हो चुकी थी ।सातवें महीने में प्रसव पीड़ा शुरू होने पर महिला को तत्काल इमरजेंसी में भर्ती किया गया। इस प्रकार के मामलों में महिला और बच्चों दोनों की विशेष देखभाल जरूरी होती है।

नैचुरल गैस कनेक्शन देने की प्लानिंग कर रोडमेप प्रस्तुत करें

-आयुक्त खाद्य श्री शर्मा ने की सिटी गैस डिस्ट्रीब्यूशन की समीक्षा

भोपाल (आरएनएस)। हितग्राहियों को पाइप्ड नैचुरल गैस कनेक्शन देने की प्लानिंग कर इसका रोडमेप विभाग को शीघ्र प्रस्तुत करें। आयुक्त खाद्य कर्मवीर शर्मा ने यह निर्देश सिटी गैस डिस्ट्रीब्यूशन नेटवर्क की समीक्षा के दौरान दिये। प्रदेश में शहरी गैस वितरण नेटवर्क विकास एवं विस्तार नीति 2025 जारी की गई है। इन नीति के माध्यम से प्रदेश में जहां घर-घर गैस की पहुंच आसान होगी, वहीं वाहनों में स्वच्छ ईंधन भरने के लिये सीएनजी गैस स्टेशन का विस्तार होगा। नीति लागू होने से स्वच्छ ऊर्जा का विस्तार होने के साथ ही पर्यावरण की रक्षा भी हो सकेगी। इस नीति से प्रदेश में बड़े पैमाने पर अधोसंरचना का निर्माण होगा और रोजगार के अवसर भी बढ़ेंगे। शहरी गैस वितरण संस्थाओं के लिये सिंगल विंडो सिस्टम से अनुमति देने का प्रावधान किया गया है। समीक्षा बैठक में जानकारी दी गई कि प्रदेश में अब तक 3 लाख 17 हजार घरों में पाइप्ड नैचुरल गैस (पीएनजी) कनेक्शन उपलब्ध कराये गये हैं। इसी तरह 368 सीएनजी स्टेशन स्थापित किये गये हैं। आयुक्त खाद्य श्री शर्मा ने इस कार्य में तेजी लाने के निर्देश दिये।

समर्थन मूल्य पर गेहूं उपार्जन के लिए 15.33 लाख किसानों ने कराया पंजीयन : खाद्य मंत्री श्री राजपूत

भोपाल (आरएनएस)। प्रदेश में समर्थन मूल्य पर गेहूं उपार्जन हेतु पंजीयन की प्रक्रिया 20 जनवरी से 9 अप्रैल 2025 तक संचालित की गई। इस अवधि में प्रदेश के 15 लाख 33 हजार किसानों ने अपना पंजीयन कराया ।खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण मंत्री गोविन्द सिंह राजपूत ने बताया कि उपार्जन की अवधि 15 मार्च से 5 मई 2025 तक निर्धारित है। किसानों को गेहूं के लिए 2,425 प्रति क्विंटल समर्थन मूल्य के साथ 175 प्रति क्विंटल बोनस, कुल 2,600 प्रति क्विंटल का भुगतान किया जा रहा है ।खाद्य मंत्री श्री राजपूत ने बताया कि प्रदेश में 3,528 उपार्जन केंद्रों की स्थापना की गई है। अब तक कुल 3.09 लाख किसानों से 26.73 लाख मीट्रिक टन गेहूं का उपार्जन किया गया है। इसमें से 24.44 लाख मीट्रिक टन का परिवहन तथा 21.86 लाख मीट्रिक टन का भंडारण किया जा चुका है। मंत्री श्री राजपूत ने बताया कि अब तक किसानों को 5,027 करोड़ का भुगतान किया जा चुका है। शेष भुगतान 3 से 5 कार्य दिवसों में पूर्ण कर लिया जाएगा। मंत्री श्री राजपूत ने कहा कि राज्य सरकार किसानों को समय पर उचित मूल्य और पारदर्शी व्यवस्था उपलब्ध कराने के लिए संकल्पबद्ध है। उपार्जन प्रक्रिया को सरल, व्यवस्थित और किसान हितैषी बनाने के लिए सभी आवश्यक प्रबंध किए गए हैं।

गर्मी से बेहाल मप्र, कई शहरों में लू और ओलों ने भी मचाई तबाही

इंदौर (ए.)। मध्यप्रदेश में इस समय तेज गर्मी और लू के साथ कुछ स्थानों पर बारिश और ओले भी गिर रहे हैं। गुरुवार को प्रदेश के कुछ हिस्सों में गर्मी का असर देखा गया। धार और रतलाम में सबसे अधिक तापमान दर्ज किया गया, जहां धार में 42.3 डिग्री और रतलाम में 42.2 डिग्री तापमान रहा। इंदौर में दो दर्जन से ज्यादा मोरों की मौत की खबर आई, हालांकि प्राणी संग्रहालय के प्रभारी डॉ. उत्तम यादव ने दो मोरों की मौत को हीट वेव से होने की बात कही। इस बीच शिवपुरी में शाम को बादल गरजे और बूंदाबांदी हुई, वहीं सागर में तेज हवाओं के साथ बारिश और ओले गिरे। मुरैना में भी तेज हवाओं और बारिश के साथ ओले गिरने से फसलों को नुकसान हुआ है। मौसम वैज्ञानिक डॉ. दिव्या ई. सुरेंद्रन के अनुसार वेस्टर्न डिस्टरबेंस और ट्रफ एक्टिव होने के कारण अगले तीन दिनों तक यह मौसम बना रहेगा।

प्रदेश में तापमान लगातार बढ़ रहा

मध्यप्रदेश के बड़े शहरों में तापमान में भारी वृद्धि देखी गई है। भोपाल में तापमान 41.3 डिग्री, इंदौर में 40.3 डिग्री, ग्वालियर में 39.6 डिग्री, उज्जैन में 41 डिग्री, और जबलपुर में 40.6 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। इसके अलावा खंडवा में 42.1 डिग्री, गुना-नर्मदापुरम में 42 डिग्री, टीकमगढ़-दमोह में 41.8 डिग्री, सागर में 41.5 डिग्री, खरगोन-नौगांव में 41 डिग्री, मंडला में 40.8 डिग्री, और सिवनी और शिवपुरी में पारा 40 डिग्री सेल्सियस तक पहुंचा। इस बढ़ते तापमान के कारण प्रदेश के कई हिस्सों में गर्मी का जोर बना हुआ है।

कई जिलों में स्कूलों का समय बदला

प्रदेश में बढ़ती गर्मी के कारण कई जिलों में स्कूलों का समय बदलने की घोषणा की गई है। खासतौर पर भोपाल, रतलाम, शिवपुरी, उज्जैन, नीमच समेत अन्य जिलों में दोपहर 12 बजे तक कक्षाएं आयोजित करने का निर्देश दिया गया है ताकि बच्चों को तेज गर्मी से राहत मिल सके और उनकी सेहत पर कोई बुरा असर न पड़े। इस कदम से बच्चों को अत्यधिक गर्मी से बचाया जा सकेगा और वे आराम से अपनी पढ़ाई जारी रख सकेंगे।

मुरैना और सागर में ओलों से फसलें खराब

गुरुवार शाम मुरैना में अचानक तेज हवाओं के साथ बारिश शुरू हुई और बड़े आकार के ओले गिरे, जिससे खेतों में रखी फसलें नष्ट हो गईं। कैलारस, सबलगढ़ और रामपुर क्षेत्र के किसानों को सबसे ज्यादा नुकसान हुआ है, जहां गेहूं की कटाई की गई फसलें खेतों में रखी हुई थीं। वहीं, सागर में भी मौसम ने अचानक पलटी मारी। तेज हवाओं के साथ बारिश हुई और ओले गिरे, जिससे क्षेत्र में फसलों को नुकसान हुआ। सागर का अधिकतम तापमान गुरुवार को 41 डिग्री था।

मां की डांट से नाराज युवती ने लगा ली फांसी, देर से उठने पर लगाई थी फटकार

इंदौर (ए.)। इंदौर में एक युवती ने मां की डांट से नाराज होकर फांसी लगा ली। मां को युवती के देरी से उठने की आदत अच्छी नहीं लगती थी। इसी बात को लेकर उनसे डांटा था। जिसे युवती ने दिल पर ले लिया और फांसी लगाकर अपनी जान दे दी।

द्वारकापुरी क्षेत्र में रहने वाली युवती रेणुका को उसकी मां ने सुबह उठाया और देरी से उठने की आदत पर खूब डांटा। मां और बेटी को दूसरे दिन रिश्तेदार के यहां जाना था। दोपहर में रेणुका ने अपने कमरे में फांसी लगा ली। शाम को चचेरा भाई घर आया तो उसने युवती को फंदे पर लटके देखा और परिजनों को सूचना दी। परिजन युवती को अस्पताल ले गए। डाक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया।

माहुलझिर थाना अंतर्गत हत्या के आरोपी को हुई आजीवन कारावास एवं जुर्माना

-छिन्दवाड़ा के माहुलझिर थाना अंतर्गत हत्या के आरोपी को हुई आजीवन कारावास एवं जुर्माना से दण्डित किया गया ।

छिंदवाड़ा(आरएनएस)। 22 फरवरी 2024 को विनोद सल्लाम और टोरा उर्फ अरविन्द उइके का डैम के किनारे आपस मे झगड़ा हो गया । कुछ देर बाद विनोद सल्लाम अपने काले रंग के ट्यूब पर बैठकर डेम के पानी मे उतर गया और बीच गहरे पानी मे पहुंचा ही था कि किनारे पर खड़ा अरविंद उइके तैरकर विनोद के पास पहुंचा और ट्यूब पर बैठे विनोद सल्लाम को ट्यूब पलटाकर पानी मे गिरा दिया और उसके पैर पकड़कर पानी से बाहर ऊपर कर दिया जिससे विनोद पानी मे डूब गया और विनोद की डूबने से मृत्यु हो गयी । जिसकी सूचना सूचनाकर्ता ममला बाई उम्र 30 वर्ष निवासी ग्राम चाखला द्वारा दी गयी थी । घटना की सूचना पर पुलिस द्वारा पूछताछ कर अपराध क्र.12/24 धारा 302 भादवि पंजीबद्ध कर न्यायालय में विचारण हेतु चालान प्रस्तुत किया गया ।

माननीय न्यायालय द्वारा अभियोजन की प्रकरण में कुल 11 गवाहों के कथन न्यायालय में लेख बद्ध किए गए तथा विचारण उपरांत आरोपी अरविंद उर्फ टोरा पिता देहलन उइके उम्र 28 वर्ष निवासी ग्राम चाखला को धारा 302 भा.द.वि. के तहत दोष सिद्ध पाते हुए आरोपी को दिनांक 09/04/2025 को अपर सत्र न्यायाधीश जुन्नारदेव महेंद्र मांगोदिया द्वारा सत्र प्रकरण क्रमांक 21/2024 में निर्णय पारित करते हुए आजीवन कारावास एवं ?5000 रूपए के अर्थदंड से दंडित किए जाने का निर्णय दिया गया।

मध्यप्रदेश राज्य की ओर से प्रकरण में पैरवी अपर लोक अभियोजक पंकज श्रीवास्तव द्वारा की गई तथा प्रकरण की संपूर्ण विवेचना कार्यवाही थाना प्रभारी माहुलझिर उपनिरी. रविन्द्र पवार द्वारा की गई हैं । पुलिस अधीक्षक छिन्दवाड़ा द्वारा विवेचना कार्यवाही हेतु थाना प्रभारी उप निरीक्षक रविंद्र पवार को पुरुष्कृत करने की घोषणा की गई ।

कार पलटने से दो महिलाओं की मौतः घायल बाप- बेटे मेडिकल कॉलेज में भर्ती, दोनों मृतक एक ही परिवार के

जबलपुर (आरएनएस)। मध्यप्रदेश में रफ्तार का कहर थम नहीं रहा है। तेज रफ्तार वाहनों के अनियंत्रित होने से रोज रोज सड़क हादसे हो रहे हैं। ताजा मामला जबलपुर जिले का है जहां सड़क हादसे में दो महिलाओं की मौत हो गई और बाप-बेटे घायल है। घायलों को मेडिकल कॉलेज अस्पताल में भर्ती कराया गया है। दरअसल घटना कटंगी थाना अंतर्गत कटंगी बायपास के समीप की है जहां तेर रफ्तार कार अचानक पलट गई। कार पलटने से दो महिलाओं रानी माली और शारदा माली की मौत हो गई है। दोनों मृत महिलाएं एक ही परिवार से थी। हादसे में बाप बेटे भी बुरी तरह से घायल हुए है। घायल बाप बेटे को मेडिकल कॉलेज अस्पताल में भर्ती कराया गया है। कार में सवार सभी लोग रिश्तेदारी में पनागर जा रहे थे, तभी हादसे के शिकार हो गए। मृतक और घायलों का परिवार तिलवारा थाना अंतर्गत धनवंती नगर इलाके में रहता है। पुलिस ने मामला कायम कर घटना की विवेचना शुरू कर दी है।

बेटी ने पड़ोसी युवक के साथ किया ऐसा काम, पिता ने मौत को लगाया गले, नाराज मृतक के परिजनों ने लड़के के घरवालों को पीटा

ग्वालियर(आरएनएस)। मध्य प्रदेश के ग्वालियर में एक पिता ने लाइसेंसी बंदूक से खुद को गोली मारकर आत्महत्या कर ली। बताया जा रहा है कि मृतक की बेटी ने पड़ोसी युवक जो दूसरे समाज से था, उसके साथ शादी रचा ली थी। इससे नाराज होकर पिता ने यह खौफनाक कदम उठाया। वहीं नाराज मृतक के परिजनों ने लड़के के घरवालों की पिटाई कर दी। जिससे इलाके में तनाव जैसी स्थिति बन गई। फिलहाल पुलिस फोर्स मौके पर मौजूद है। यह पूरी घटना झांसी रोड थाना क्षेत्र की है। जानकारी के मुताबिक, नाका चंद्रबदनी इलाके में ऋषिराज उर्फ संजू जायसवाल ने बीती देर रात अपने घर मे लाइसेंसी रायफल से खुद को गोली मार ली। संजू की मौके पर ही मौत हो गई। जानकारी मिलते ही झांसी रोड थाना पुलिस मौके पर पहुंची। स्क कृष्ण लालचंदानी ने बताया कि ऋषिराज की बेटी हर्षिता 15 दिन पहले पड़ोस में रहने वाले एक युवक आनंद प्रजापति के साथ लापता हो गई थी। परिजनों ने झांसी रोड़ थाने में गुमशुदगी दर्ज कराई थी, पुलिस ने बेटी हर्षिता को इंदौर से बरामद किया था, उसने पड़ोसी युवक आनंद प्रजापति से शादी कर ली थी।

पुलिस ने हर्षिता को उसके पिता और घरवालों के हवाले कर दिया। परिजनों ने हर्षिता को उसके मामा के घर भेज दिया था। इस बीच आनंद ने कोर्ट में बंदी प्रत्यक्षीकरण याचिका लगा दी। तीन दिन पहले कोर्ट में सुनवाई हुई तो ऋषिराज की बेटी हर्षिता ने कोर्ट में अपने पति के पक्ष में बयान दिए और उसी के साथ चली गई थी। इस घटना से ऋषिराज कल से दुखी थे। बीती रात खाना खाने के बाद कमरे में गए और फायर कर लिया।

फिलहाल फोरेंसिक एक्सपर्ट की शुरुआती जांच के बाद शव को पोस्टमार्टम के लिए भिजवाया है। ऋषि राज की खुदकुशी के बाद उसके परिजनों का आक्रोश फूट पड़ा। ऋषि राज के परिजन आनंद के घर पहुंचे और वहां उसके परिवार के लोगों के साथ मारपीट की इस घटना का वीडियो भी सामने आया है। फिलहाल झांसी रोड थाना पुलिस ने मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है।

होमगार्ड को कॉल ऑफ देने मामले में हाईकोर्ट ने रखा फैसला सुरक्षितः इस व्यवस्था को सवैधानिक घोषित करने की मांग

जबलपुर (आरएनएस)। होमगार्ड (नगर सैनिक) को कॉल ऑफ देने मामले में हाईकोर्ट ने फैसला सुरक्षित रखा है। होमगार्ड के 10 हजार से ज्यादा सैनिकों को दो माह का कॉल ऑफ देने को लेकर सुनवाई हुई है। दोनों पक्षों को सुनने के बाद हाईकोर्ट ने फैसला सुरक्षित रखा है।

बता दें कि होमगार्ड जवानों के कॉल ऑफ को लेकर 490 याचिकाएं लंबित थी। हाईकोर्ट में लगातार 5 दिनों तक मामले में सुनवाई हुई है। कॉल ऑफ की व्यवस्था को और संवैधानिक घोषित करने की मांग की गई है। पहले 2 साल में 3 महीने का कॉल ऑफ दिया जाता था। जस्टिस संजीव सचदेवा और जस्टिस विनय सराफ की बेंच में सुनवाई हुई है। कॉल ऑफ का मतलब है कि होमगार्ड जवानों को कुछ समय के लिए ड्यूटी से हटा दिया जाता है, लेकिन वे अपनी नौकरी से नहीं निकाले जाते हैं।

दर्दनाक सड़क हादसे में चार की मौतः नहर के पुल से नीचे गिरी तेज रफ्तार कार, दो की हालत गंभीर

जबलपुर (आरएनएस)। मध्य प्रदेश के जबलपुर से भीषण सड़क हादसे की खबर सामने आई है। यहां तेज रफ्तार एक कार पुल से नीचे जा गिरी जिसमें मौके पर ही चार लोगों की दर्दनाक मौत हो गई। जबकि दो लोग घायल हुए हैं। जिन्हें पास के अस्पताल में भर्ती कराया गया है। घटना की सूचना मिलते ही मौके पर पुलिस की टीम पहुंची और जांच शुरू की। मामला चरगंवा थाना क्षेत्र का है। जहां सोमती नहर के पुल पर बुधवार को एक दर्दनाक सड़क हादसा हो गया। गोटेगांव से जबलपुर की ओर आ रही तेज रफ्तार कार पुल से नीचे जा गिरी। घटना में चार लोगों की मौके पर ही दर्दनाक मौत हो गई, जबकि दो अन्य गंभीर रूप से घायल हो गए हैं। जिन्हें गंभीर हालत में मेडिकल अस्पताल रेफर किया गया। घटना स्थल पर मौजूद लोगों की माने तो हादसे के समय गाड़ी की रफ्तार काफी थी। जिसके कारण गाड़ी ने नियंत्रण खो दिया और कार सीधे पुल की रेलिंग तोड़ते हुए नीचे गिर गई। मामले की सूचना मिलते ही मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेजा। फिलहाल पुलिस मामले की जांच कर रही।

व्यापार समाचार

भारत और यूके के बीच फ्री ट्रेड एग्रीमेंट पर बातचीत जारी, सप्लाई चेन को मजबूत करने के लिए उठाए कदम

नई दिल्ली (ए)- दुनिया में बदलते वर्ल्ड ट्रेड ऑर्डर के बीच, भारत और यूके ने दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय संबंधों को मजबूत करने और फ्री ट्रेड एग्रीमेंट (एफटीए) और द्विपक्षीय निवेश संधि (बीआईटी) के लिए बातचीत जारी रखने की प्रतिबद्धता जताई है। यह जानकारी लंदन में आयोजित '13वें इकोनॉमिक एंड फाइनेंशियल डायलॉग' में दी गई, जिसकी सह-अध्यक्षता केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण और ब्रिटेन की चांसलर ऑफ एक्सचेकर रेचल रीव्स ने की।

इवेंट के बाद जारी किए गए साझा बयान में कहा गया कि ब्रिटिश पक्ष को अपनी आगामी औद्योगिक रणनीति के बारे में जानकारी देने में खुशी हुई, जिसके तहत यह साझेदारी औद्योगिक रणनीति के प्राथमिकता वाले विकास को बढ़ावा देने वाले क्षेत्रों, जैसे उन्नत विनिर्माण और लाइफ साइंस, को सपोर्ट कर सकती है, जहां ब्रिटिश विशेषज्ञता और रिसर्च क्षमता भारत को एक वैश्विक विनिर्माण केंद्र के रूप में उभरने में मदद कर सकती है। साथ ही स्वच्छ ऊर्जा, पेशेवर और व्यावसायिक सेवाओं, वित्तीय सेवाओं, क्रिएटिव उद्योगों और रक्षा में नौकरियों और आर्थिक विकास को समर्थन दे सकती है।

दोनों पक्ष औद्योगिक क्षेत्रों के बीच संबंधों को मजबूत करने और सप्लाई चेन को सपोर्ट करने के लिए 'भारत-ब्रिटेन रक्षा औद्योगिक रोडमैप' पर हस्ताक्षर करने पर विचार कर रहे हैं। भारत और यूके ने हाल के वर्षों में हुए फाइनेंशियल सर्विसेज ट्रेड का स्वागत किया, इसे और आगे बढ़ाने के लिए मिलकर काम करने की प्रतिबद्धता व्यक्त की।

संयुक्त बयान के अनुसार,卐दिसंबर 2024 में भारत की गिफ्ट सिटी आईएफएससी में आयोजित फाइनेंशियल मार्केट्स डायलॉग (एफएमडी) ने बैंकिंग, इंश्योरेंस, पेंशन, कैपिटल मार्केट्स और सस्टेनेबल फाइनेंस में हमारे सहयोग को गहरा करने का अवसर प्रदान किया और हमारी टीमें इस वर्ष के अंत में लंदन में अगले एफएमडी के लिए मिलेंगी।卐 इस डायलॉग में भारतीय रुपये के अंतरराष्ट्रीकरण पर भी चर्चा की गई। इससे रुपये को एक अंतरराष्ट्रीय करेंसी के रूप में विकसित होने में भी मदद मिलेगी।

पासपोर्ट में जीवनसाथी का नाम जुड़वाना हुआ आसान, मैरिज सर्टिफिकेट समेत इन डाक्यूमेंटस की अब नहीं पड़ेगी जरूरत

नई दिल्ली(ए)- पासपोर्ट में जीवनसाथी का नाम जुडवाना अब और भी आसान हो गया है। इसके लिए पहले शादी के रजिस्ट्रेशन व मैरिज सर्टिफिकेट की जरूरत होती थी, लेकिन अब इसके बिना ही आप जीवनसाथी का नाम पासपोर्ट में जुड़वा सकेंगे।विदेश मंत्रालय की तरफ से एनेक्सर जे का विकल्प दिया गया है। अब आप एनेक्सर जे पर जाकर शादी की अपनी तस्वीर या फिर कोई अन्य जॉइंट फोटो दोनों के साथ के अपलोड कर देंगे। इसे ही प्रमाण पत्र के तौर पर मान लिया जाएगा। आमतौर पर शादियों का पंजीकरण कराना एक जटिल प्रक्रिया है और लोग इससे बचने के लिए सालों तक इसे लटकाए रहते हैं। फिर कभी किसी नौकरी में ट्रांसफर या फिर पासपोर्ट आदि के लिए जरूरत होती है तो उन्हें परेशानी का सामना करना होता है। अब पासपोर्ट में पति या पत्नी का नाम जुड़वाने में आने वाली परेशानी को तो विदेश मंत्रालय ने पूरी तरह से दूर कर दिया है।

यहां बताना होगा कि वे मैरिड कपल के तौर पर साथ हैं। इसके अलावा आवेदक को यह बताना होगा कि उसके पति या पत्नी का नाम शामिल करते हुए ही पासपोर्ट जारी किया जाए। एनेक्सर जे में जो विकल्प दिया गया है, उसके तहत जॉइंट फोटोग्राफ के साथ साइन करने होंगे। इसके अलावा अपना स्थान और साइन करने की तारीख भी लिखनी होगी और अपने नाम, आधार कांड नंबर, वोट आईडी नंबर और पासपोर्ट नंबर आदि का भी जिक्र करना होगा।

EPFO कर्मचारियों के लिए वरदान बनी ये एप, जानिए क्या-क्या कर सकेंगे

नई दिल्ल (ए)। कर्मचारी भविष्य निधि संगठन (ईपीएफओ) ने बुधवार को कहा कि उसके सदस्य अब उमंग मोबाइल ऐप के जरिए आधार फेस ऑथेंटिकेशन टेक्नोलॉजी (एफएटी) का उपयोग करके अपना यूनिवर्सल अकाउंट नंबर (यूएएन) जनरेट और एक्टिव कर सकते हैं।इस संपर्क रहित और सुरक्षित सर्विस से ईपीएफओ के करोड़ों लोगों को राहत मिलेगी। इससे पहले यूएएन को मुख्यत: नियोक्ताओं द्वारा ईपीएफओ को प्रस्तुत कर्मचारी डेटा का उपयोग करके जनरेट किया जाता था। श्रम एवं रोजगार मंत्रालय के अनुसार,आधार डिटेल्स को सत्यापित किया गया है, लेकिन पिता का नाम, मोबाइल नंबर या जन्मतिथि जैसी जानकारियों में गलतियां आम थीं। इन गलतियों को अकसर क्लेम प्रोसेस के दौरान या अन्य ईपीएफओ सेवाओं का उपयोग करते समय सुधार की आवश्यकता होती है। अकेले वित्त वर्ष 2024-25 में आवंटित 1.26 करोड़ यूएएन में से केवल 44.68 लाख (35.30 प्रतिशत) ही सदस्यों द्वारा सक्रिय किए गए।

अब टेलीकॉम कंपनियों की वेबसाइट पर नेटवर्क कवरेज मैप देख सकेंगे मोबाइल यूजर्स, TRAI ने जारी किए निर्देश

नई दिल्ली (ए)- टेलीकॉम सेक्टर में पारदर्शिता बढ़ाने और यूजर्स को सशक्त बनाने के लिए ट्राई की ओर से दिए गए आदेश के बाद, टेलीकॉम सर्विस प्रोवाइडर्स (टीएसपी) ने अपनी वेबसाइट पर टेलीकॉम कवरेज मैप पब्लिश कर दिए हैं। कवरेज मैप स्टैंडर्ड कलर स्कीम के साथ आसान पहुंच और नेविगेशन के लिए विभिन्न यूजर्स फ्रेंडली सुविधाएं प्रदान करते हैं।यह संबंधित टेलीकॉम कंपनी द्वारा उनके क्षेत्र में प्रदान की जाने वाली 2जी, 3जी, 4जी या 5जी के कवरेज को देखने का विकल्प भी प्रदान करता है। संचार मंत्रालय के अनुसार, यूजर्स अपनी मौजूदा लोकेशन को नेविगेट करने के लिए अपने डिवाइस पर सर्च विकल्प या लोकेशन इनेबल कर सकते हैं। टॉगल स्विच या टेक्नोलॉजी सिलेक्शन बटन का उपयोग अपनी रुचि की टेक्नोलॉजी (3जी, 4जी या 5जी) के कवरेज मैप को देखा जा सकता है। भारतीय दूरसंचार विनियामक प्राधिकरण (ट्राई) ने सभी टेलीकॉम कंपनियों (वायरलेस) के लिए नेटवर्क कवरेज मैप को अपनी वेबसाइट के माध्यम से उपलब्ध कराना अनिवार्य कर दिया है, जिससे यूजर्स को नेटवर्क कवरेज के बारे में अधिक जानकारी मिलेगी।

वैश्विक चुनौतियों के बावजूद वित्त वर्ष 2025 में भारत का निर्यात रिकॉर्ड 820 बिलियन डॉलर

नई दिल्ली (ए)। वाणिज्य मंत्रालय द्वारा जारी आंकड़ों के अनुसार, वैश्विक बाजारों में आर्थिक अनिश्चितताओं के बावजूद, भारत का माल और सेवा निर्यात वित्त वर्ष 2025 में रिकॉर्ड 820 बिलियन डॉलर को पार कर गया है, जो पिछले वित्त वर्ष के 778 बिलियन डॉलर के इसी आंकड़े से करीब 6 प्रतिशत की वृद्धि दर्शाता है। उभरते व्यापार परिदृश्य पर चर्चा करने के लिए वाणिज्य और उद्योग मंत्री (सीआईएम) पीयूष गोयल द्वारा निर्यात संवर्धन परिषदों और उद्योग निकायों के साथ आयोजित बैठक में ये आंकड़े सामने आए।केंद्रीय मंत्री ने लाल सागर संकट, खाड़ी क्षेत्र में इजरायल-हमास संघर्ष, रूस-यूक्रेन संघर्ष के लगातार बने रहने और कुछ विकसित अर्थव्यवस्थाओं में धीमी वृद्धि सहित कई प्रतिकूल परिस्थितियों के बावजूद निर्यात में सर्वकालिक उच्च उपलब्धि के लिए निर्यातकों की सराहना की। केंद्रीय मंत्री ने निर्यातकों की उनके प्रयासों की सराहना की।बैठक के दौरान, सीआईएम गोयल ने निर्यातकों को पारस्परिक रूप से लाभकारी बहु-क्षेत्रीय द्विपक्षीय व्यापार समझौते (बीटीए) के लिए अमेरिका के साथ चल रही चर्चाओं के बारे में भी जानकारी दी। वार्ता की शुरुआत प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने की, जो फरवरी 2025 में अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के साथ अपनी बैठक में बीटीए पर सहमत होने वाले पहले वैश्विक नेताओं में से एक थे।केंद्रीय मंत्री ने निर्यातकों को आश्वासन दिया कि सरकार वैश्विक व्यापार वातावरण में हाल के बदलावों को सफलतापूर्वक नेविगेट करने में सक्षम बनाने के लिए अनुकूल वातावरण प्रदान करने के लिए काम करेगी।

सम्पादकीय

अभिव्यक्ति हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है, सत्य प्रस्तुत करना हमारा कर्तव्य

भारत-चीन रिश्तों में सुधार के संकेत

आजकल कूटनीतिक जगत में भारत–चीन संबंधों में सुधार को लेकर काफी चर्चा है। 2020 में लद्दाख की गलवान घाटी में हुए घटनाक्रम के बाद पिछले वर्ष अक्टूबर में रूस में आयोजित ब्रिक्स शिखर सम्मेलन के दौरान प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग के बीच मुलाकात हुई थी।इस बैठक में दोनों शीर्ष नेताओं ने सीमा पर तनाव कम करने और द्विपक्षीय संबंधों को पटरी पर लाने का प्रयास किया था। विवाद के कुछ क्षेत्रों से सैनिकों की वापसी जरूर हुई लेकिन अन्य मामलों में प्रगति नहीं हुई। इधर, अमेरिका में डोनाल्ड ट्रंप के दूसरी बार राष्ट्रपति बनने के बाद दुनिया में बहुत तेजी से बदलाव हो रहे हैं। ट्रंप प्रशासन के फैसलों से अमेरिका की घरेलू राजनीति और अंतरराष्ट्रीय राजनीति का नक्शा बदल रहा है। अमेरिका और यूरोपीय देशों के बीच तनातनी बढ़ रही है तो दूसरी ओर राष्ट्रपति ट्रंप और राष्ट्रपति पुतिन के बीच जुगलबंदी आकार ले रही है। इस बदलते अंतरराष्ट्रीय परिदृश्य में भारत और चीन ने कुछ लचीला रुख अपनाया है जिससे आशा बंधती है कि द्विपक्षीय संबंध पटरी पर आ सकते हैं। एक अप्रैल, 1950 को दोनों देशों के बीच कूटनीतिक संबंध हुआ था। नई दिल्ली और बीजिंग के कूटनीतिक रिश्तों के 75 वर्ष पूरे होने पर दोनों देशों के राष्ट्रपतियों के बीच शुभकामनाओं और पारस्परिक रिश्तों को और बेहतर बनाने के संदेशों का आदान–प्रदान हुआ। राष्ट्रपति जिनपिंग ने भारतीय राष्ट्रपति द्रोपदी मुमरु को प्रेषित अपने संदेश में दोनों देशों के रिश्तों के द्योतक ड्रैगन और हाथी के बीच बेहतर तालमेल बनाने की बात की जबकि राष्ट्रपति मुमरु ने कहा कि भारत और चीन के बीच स्थाई, स्थिर और सौहार्दपूर्ण संबंध का फायदा नई दिल्ली और बीजिंग के अलावा पूरी दुनिया को मिलेगा। वैश्विक मामलों के जानकार किशोर मेहबुबानी का विश्वास है कि अतीत की तरह दोनों देशों के सामने फिर से दुनिया का सिरमौर बनने का अवसर है। लेकिन दोनों ने आपसी संघर्ष का रास्ता अख्तियार किया तो वे यह अवसर गंवा सकते हैं। वास्तव में यह दावा तो कोई नहीं कर सकता कि हाल–फिलहाल भारत और चीन की समस्याओं का स्थायी समाधान हो जाएगा लेकिन दोनों देश जिस रास्ते पर चल रहे हैं, उससे यह आशा जरूर बंधती है कि भविष्य में सैन्य संघर्ष की स्थिति नहीं बनेगी।

शराबबंदी मजबूत राजनीतिक इच्छाशक्ति बड़ी मिसाल

ओपी सांस्कृत्यायन

सार्वजनिक जीवन में नैतिक शुचिता और पारदर्शिता बड़ी दरकार है। इस मूल्यबोध की समझ दुनिया में चाहे जब बनी-बिगड़ी हो भारत में राष्ट्रीय आंदोलन के दिनों से इसे महत्त्व मिला। महात्मा गांधी के नेतृत्व में स्वाधीनता आंदोलन की तो कसौटी ही यह रही कि इसने अहिंसक मूल्य-निष्ठा को सर्वोपरि माना। 1917 में गांधी जब चंपारण में नील किसानों पर जुल्म के खिलाफ सत्याग्रह की सैद्धांतिकी का जमीनी परीक्षण कर रहे थे, तब उन्होंने कहा था कि बिहार की धरती पर उन्हें अहिंसा देवी के दर्शन हुए। दर्शन का यह बोध जहां आगे चल कर उनके नेतृत्व में चले स्वाधीनता संघर्ष में दिखा वहीं सेवा से जुड़े रचनात्मक कार्यक्रमों को लेकर भी उन्होंने एक गंभीर तकाजे को देश-समाज के सामने रखा।

दुर्भाग्य रहा देश का कि आजादी के करीब आते–आते ये सारे बोध और तकाजे कमजोर पड़ते गए। आजाद भारत में अहिंसक मूल्य–निष्ठा की आखिरी गूंज बिहार आंदोलन के दौरान सुनाई पड़ी। लोकनायक जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में आरंभ हुए आंदोलन की नाटकीय राजनीतिक परिणिति की चर्चा आज खूब होती है, पर ज्यादा जरूरी है यह समझना कि इस आंदोलन की वैचारिकी जेपी ने क्या तय की थी। कांग्रेस की समाजवादी धारा के पुरोधा रहे जेपी के मन में गांधी को लेकर असंदिग्ध आस्था थी। इसलिए जब संपूर्ण क्रांति की अलख के साथ वे सड़कों पर उतरे तो उन्होंने अपने साथ चल रही जमात के सामने अहिंसक मूल्य–निष्ठा की कसौटी सबसे पहले रखी।

यह और बात है कि आपातकाल की घोषणा के बाद संपूर्ण क्रांति सीधे–सीधे लोकतंत्र और संविधान को बचाने की फौरी लड़ाई के रूप में तब्दील हुई और देश में प्रचलित राजनीतिक संस्कृति में बदलाव की मुराद दम तोड़ गई। इतिहास का यह भी दिलचस्प चक्र है कि आज बिहार सत्ता और राजनीति में ऐसे ही कुछ अहिंसक मूल्यों को लेकर फिर से चर्चा में

है। बिहार में शराबबंदी के नौ वर्ष पूरे हो रहे हैं। राज्य में शराबबंदी का फैसला ऐसा है, जो राजनीतिक नफा–नुकसान को छोड़कर इस निर्णय को लेने के नीतीश कुमार के नैतिक साहस को तारीखी अहमियत देता है।

यह अहमियत तब ज्यादा समझ में आती है जब हम देखते हैं कि एक तरफ दिल्ली के मुख्यमंत्री के पद पर बैठा व्यक्ति शराब घोटाले में जेल की हवा खाता है, तो वहीं अपने राज्य में शराबबंदी का फैसला लेने वाला राजनेता नौ साल बाद भी अपनी नैतिकता पर कायम है। गांधी की वैचारिक चेतना और दृष्टि में मद्य निषेध को लेकर एक गंभीर आग्रह रहा है। आज आजादी के इतने समय बाद इस तरह के किसी नैतिक जोर या संकल्प की बात बेमानी लगती है। खास तौर पर बीते कुछ दशकों में समय और समाज ने जिस जीवन–दृष्टि को तेजी से अंगीकार किया है, उसमें न तो निजी और न ही सार्वजनिक जीवन में किसी नैतिक दरकार के लिए जगह छोड़ी है। सभ्यता और संस्कृति के इतिहास में यह एक ऐसा दौर है, जिसके नैतिक पराभव ने मनुष्य को विश्व युद्ध के बाद एक नई अधोगति तब पहुंचा दिया है।

बहरहाल, बात अकेले शराबबंदी की करें तो इस फैसले का नैतिक के साथ सामाजिक आधार काफी बड़ा है। बिहार में नीतीश कुमार के इस बड़े फैसले की नींव उस संवाद से पड़ी जब वे जीविका दीदियों से बात कर रहे थे। नीतीश भारतीय राजनीति में उस समाजवादी परंपरा से आते हैं, जिसने अपने वैचारिक तेज को जहां सामाजिक–राजनीतिक स्तर पर नई वैचारिकी में ढाला, वहीं गांधी के अहिंसावादी विचारबोध को भी समान रूप से अपनाया। शराबबंदी लागू करने के उनके फैसले को इस लिहाज से देखें–समझें तो इसका सिरा सीधे समाज में महिलाओं की स्थिति में सुधार से जुड़ता है। बिहार ने देश और दुनिया के आगे सुशासन का वह मॉडल रखा है, जिसमें महिलाएं न सिर्फ आत्मविश्वास से भरी हैं, बल्कि शिक्षा और स्वावलंबन के क्षेत्र में भी तेजी से आगे बढ़ रही हैं। शराबबंदी का फैसला इस बदलाव के रकबे को और बढ़ा देता है। गौरतलब है कि नीतीश सरकार ने बिहार में शराबबंदी का फैसला अप्रैल, 2016 में जरूर लिया पर इससे पहले महिला सशक्तीकरण के लिहाज से कई बड़े फैसले ले चुके थे। 2006 में बिहार में पंचायती राज संस्थाओं में 50 प्रतिशत आरक्षण दिया गया। तब ऐसा करने वाला बिहार देश का पहला राज्य था। 2006 में ही बिहार सरकार ने प्रारंभिक शिक्षक नियुक्ति में महिलाओं को 50 प्रतिशत आरक्षण देने का ऐतिहासिक निर्णय लिया।

इसी तरह 2007 से नगर निकायों में महिलाओं को 50 प्रतिशत आरक्षण मिला। 2013 से बिहार पुलिस में महिलाओं को 35 प्रतिशत आरक्षण का मार्ग प्रशस्त हुआ। प्रदेश में महिलाओं के बीच बहाल हुए आत्मविश्वास का नतीजा है कि बिहार आज सबसे ज्यादा 10.81 लाख स्वयंसहायता समूह बना कर देश में पहले स्थान पर है। इससे 1.35 करोड़ से अधिक महिलाएं आत्मनिर्भर बनी हैं। बिहार में नौ वर्षो से लागू शराबबंदी की सफलता के नैतिक और सामाजिक मूल्यांकन करते हुए जान लेना जरूरी है कि इस फैसले के प्रशासनिक पेचोखम भी कम नहीं हैं। इसलिए चुनावी मौसम में इस फैसले को हटाने तक की अनैतिक पराकाष्ठा तक कई सियासी जमातें पहुंच जाती हैं। बात करें पूरे देश की तो 1960 में बॉम्बे से अलग होकर जब गुजरात बना तभी से वहां शराबबंदी लागू है। पूर्वोत्तर के कई राज्यों में भी शराबबंदी है। अलबत्ता, मणिपुर से हरियाणा तक ऐसे कई प्रदेश भी हैं, जो इस बड़े फैसले पर अटल नहीं रह सके। आज जब भारत सॉफ्ट पावर के तौर पर दुनिया में अपनी चमक बिखेर रहा है तो इस नैतिक और सांस्कृतिक मूल्य–निष्ठा पर ज्यादा गंभीर होने की जरूरत है। आखिरकार, शराबबंदी का फैसला महज नैतिक फैसला भर नहीं, बल्कि सामाजिक बदलाव का बड़ा आधार भी है। याद रहे कि हमारे संविधान में भी इस बात पर जोर दिया गया है। संविधान के अनुच्छेद 47 में राज्य नीति–निर्देशक सिद्धांतों में कहा गया है कि राज्य को मादक पेय पदाथरे और स्वास्थ्य के लिए हानिकारक पदाथरे के सेवन पर प्रतिबंध लगाने का प्रयास करना चाहिए। ऐसे में कह सकते हैं कि बिहार में शराबबंदी के नौ वर्ष मजबूत राजनीतिक इच्छाशक्ति के साथ संवैधानिक दरकार पर भी खरा उतरने की बड़ी मिसाल हैं।

केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण तथा रसायन एवं उर्वरक राज्य मंत्री अनुप्रिया पटेल ने लखनऊ स्थित राजभवन में उत्तर प्रदेश की राज्यपाल आनंदीबेन पटेल से मुलाकात की।

वक्फ अधिनियम में संशोधन

विनीत नारायण

वक्फ संशोधन बिल, जिसे हाल में भारतीय संसद में पेश किया गया और 2–3 अप्रैल, 2025 को लोक सभा और राज्य सभा से पारित किया गया, देश में गहन बहस का विषय बन गया है। यह बिल 1995 के वक्फ अधिनियम में संशोधन करने और वक्फ संपत्तियों के प्रबंधन को अधिक पारदर्शी और समावेशी बनाने का दावा करता है। सरकार इसे प्रगतिशील कदम के रूप में पेश कर रही है, जबकि विपक्ष और कई मुस्लिम संगठन इसे धार्मिक स्वायत्तता पर हमला मानते हैं। इस लेख में हम इस बिल के समर्थन और विरोध के तकरे को तटस्थ दृष्टिकोण से देखेंगे और इसके संभावित प्रभावों का आकलन करेंगे।

वक्फ इस्लामी परंपरा है जिसमें कोई व्यक्ति अपनी संपत्ति को धार्मिक, शैक्षिक या परोपकारी उद्देश्यों के लिए समर्पित कर देता है। भारत में वक्फ संपत्तियों का प्रबंधन 1995 के वक्फ अधिनियम के तहत होता है, जिसके अंतर्गत राज्य वक्फ बोर्ड और केंद्रीय वक्फ परिषद कार्य करते हैं। वक्फ संशोधन बिल, 2024 में कई बदलाव प्रस्तावित हैं, जैसे वक्फ बोर्ड में गैर–मुस्लिम और महिला सदस्यों की अनिवार्यता, संपत्ति सर्वेक्षण के लिए कलेक्टर की भूमिका और विवादों में हाई कोर्ट की अपील का प्रावधान। सरकार का कहना है कि यह बिल वक्फ पण्राली में पारदर्शिता और जवाबदेही लाएगा जबकि विरोधी इसे वक्फ की मूल भावना के खिलाफ मानते हैं। इस बिल का समर्थन करने वालों का कहना है कि वक्फ बोडरे में भ्रष्टाचार और कुप्रबंधन की शिकायतें लंबे समय से चली आ रही हैं।

देश में 8.7 लाख से अधिक वक्फ संपत्तियां हैं, जिनकी कीमत लगभग 1.2 लाख करोड़ रु पये आंकी गई है, लेकिन इनका उपयोग गरीब मुस्लिम समुदाय के कल्याण के लिए प्रभावी ढंग से नहीं हो पा रहा। कलेक्टर द्वारा संपत्ति सर्वेक्षण और रिकॉर्ड डिजिटलीकरण जैसे प्रावधानों से इन संपत्तियों का बेहतर प्रबंधन संभव होगा। बिल में वक्फ बोर्ड में कम से कम दो महिलाओं और गैर–मुस्लिम सदस्यों को शामिल करने का प्रावधान भी है। समर्थकों का तर्क है कि इससे बोर्ड में लैंगिक और सामाजिक समावेशिता बढ़ेगी। विशेष रूप से पसमांदा मुस्लिम समुदाय, जो सामाजिक–आर्थिक रूप से पिछड़ा है, इस बिल का समर्थन करता है, क्योंकि उनका मानना है कि मौजूदा व्यवस्था में धनी और प्रभावशाली लोग वक्फ संपत्तियों पर कब्जा जमाए हुए हैं।पहले वक्फ ट्रिब्यूनल का फैसला अंतिम माना जाता था, जिसे अदालत में चुनौती नहीं दी जा सकती थी। नये बिल में हाई कोर्ट में अपील का अधिकार दिया गया है, जिसे समर्थक संविधान के अनुरूप और न्यायसंगत मानते हैं। उनका कहना है कि इससे वक्फ बोर्ड के मनमाने फैसलों पर अंकुश लगेगा।

(चिंतन-मनन) सर्वव्यापी है आत्मा

केवल वह जो क्षणिक है, छोटा या नर है, उसे ही सुरक्षा की आवश्यकता है; जो स्थायी है, बड़ा या विशाल है, उसे सुरक्षा की जरूरत नहीं। सुरक्षा का अर्थ है समय विशेष को लंबा कर देना; इसीलिए सुरक्षा परिवर्तन में बाधक भी होती है। पूर्ण सुरक्षा की स्थिति में रूपांतरण नहीं हो सकता। सुरक्षा के बिना इच्छित रूपांतरण नहीं हो सकता। एक बीज को पौधे में परिवर्तित होने के लिए सुरक्षा चाहिए; एक पौधे के वृक्ष बनने के लिए सुरक्षा चाहिए। अत्यधिक सुरक्षा रूपांतरण में या तो सहायक हो सकती है या बाधक, इसीलिए रक्षक को यह समझ होनी चाहिए कि किस मात्रा तक उसे रक्षा करनी है।सुरक्षा और रूपांतरण– दोनों काल और समय के अनुसार होते हैं और समय से परे होने के लिए इन नियमों का सम्मान आवश्यक है। सुरक्षा एक विशेष समय और नर चीजों तक ही सीमित है। चिकित्सक कब तक किसी को स्वस्थ रख सकता है या बचा सकता है? सदा के लिए? नहीं। सत्य को किसी सुरक्षा की आवश्यकता नहीं। शांति और खुशी को सुरक्षा की आवश्यकता नहीं, क्योंकि वे क्षणिक नहीं। तुम्हारे शरीर को सुरक्षा की आवश्यकता है, तुम्हारी आत्मा को नहीं; तुम्हारे मन को सुरक्षा की जरूरत है, स्वरूप को नहीं। आत्मा केवल मन और शरीर का समिश्रण नहीं है। आत्मा न मन है, न शरीर। शरीर के अस्तित्व का एकमात्र उद्देश्य है तुम्हें सचेत करना कि तुम कितने सुंदर हो; और तुमको जागरूक करना कि तुम जिन आदर्शों का सम्मान करते हो, उन सभी को तुम अपने जीवन में ढालकर, अपने चारों ओर एक दिव्य–जगत की सृष्टि करो।

मेष राशि: आज का दिन आपके लिए अच्छा रहने वाला है। आज आप एक से अधिक स्रोतों से आय प्राप्त करेंगे। शासन व प्रशासन के कार्यों में सावधानी बरतें। आज निवेश संबंधी योजनाओं को गति मिलेगी। आज किसी अजनबी पर सोच समझकर भरोसा करें। विद्यार्थियों को आज किसी उलझन से छुटकारा मिलेगा, जिससे वे अपने पढ़ाई पर ज्यादा ध्यान देंगे।

वृष राशि: आज का दिन आपके लिए उत्तम रहने वाला है। दिनचर्या में सुबह की सैर को शामिल करेंगे, जिससे आप अपने आप को काफी ऊर्जावान महसूस करेंगे। मित्र या रिश्तेदार आपसे आर्थिक मदद मांग सकता है आप उसे निराश नहीं करेंगे। आप अपने रुके हुए सभी कार्यों को पूरा करने में सफल होंगे। घर से जुड़ी समस्याओं पर विचार करने की जरूरत है।

मिथुन राशि: आज का दिन आपके लिए उत्तम रहने वाला है। आज आपकी योजनाओं को गति मिलेगी। आज आपकी कुछ नए लोगों से मुलाकात होगी। आज आपको बड़ों का साथ व सहयोग भरपूर मात्रा में मिलेगा। आज आपको शिक्षा में आ रही समस्या से छुटकारा मिलेगा, आपको खुशी होगी। आज आप किसी मांगलिक कार्यक्रम में बढ़ चढ़कर हिस्सा लेंगे। आज जीवनसाथी से मनपसंद उपहार मिलेगा।

कर्क राशि: आज आपका दिन बेहद खुशहाल रहने वाला है। आज अपने बिजनेस को आगे बढ़ाने की नयी योजना बनायेंगे, जिससे आपकी कामयाबी आसमान की बुलंदियों पर होगी। आपकी मुलाकात बचपन के किसी दोस्त से होगी, आपकी पुरानी यादें ताज़ा होंगी। आमोद–प्रमोद में आपका ज्यादा मन लगेगा। अर्थराईटिस की परेशानी से आज आपको राहत मिलेगी। आज परिवार में सुख– शांति का माहौल बना रहेगा।

सिंह राशि: आज का दिन आपके लिए आनंदायक रहने वाला है। आपको अपनी वाणी की मधुरता को बनाए रखना है। मित्र आपसे मिलने आयेंगे, जिनसे मिलकर अपकी यादें ताजा होंगी। छात्र खूब मन लगाकर पढ़ाई करते हुए नजर आएंगे। जो लोग घर से दूर रहकर नौकरी कर रहे हैं, उन्हें अपने परिवार से मिलने का मौका मिलेगा। अगर आपने पहले कोई निवेश किया हुआ है तो आज उसका अच्छा लाभ मिलेगा।

कन्या राशि: आज आपका दिन आपके लिए खुशियां लाने वाला है। परिवार में आपके अच्छे काम की तारीफ़ होगी। महिलाओं के लिए आज का दिन बेहद ख़ास रहने वाला है। आज आपके पास बिजनेस को आगे बढ़ाने का अच्छा मौका है। कम्पटीशन की तैयारी कर रहे छात्रों को तैयारी जारी रखनी चाहिए।

तुला राशि: आज का दिन आपके लिए सुनहरा रहने वाला है। आपका विनम्र स्वभाव सराहा जाएगा। आपका धन कहां खर्च हो रहा है, इस पर आपको नजर बनाए रखने की जरूरत है, नहीं तो आने वाले समय में आपको थोड़ी परेशानी हो सकती है। आज आपको बेवजह किसी बात को लेकर उलझने से बचना चाहिए। जिंदगी में चल रही भागदौड़ के बीच आज आपको अपने लिए पर्याप्त समय मिलेगा।

वृश्चिक राशि: आज आपका दिन कॉन्फिडेंस से भरा रहेगा। नवविवाहित दंपत्ति के बीच आज मीठी नोक–झोक होगी, इससे रिश्ते में मधुरता बढ़ेगी। आप अपने मित्रों के साथ किसी मनोरंजन के कार्यक्रम में सम्मिलित होंगे। ऑफिस में आज आपको नया प्रोजेक्ट मिलेगा, जिसे पूरा करने में कलीग आपकी सहायता करेंगे। संतान पक्ष से आपको सुख प्राप्त होगा। पिता का आशिर्वाद आप पर बना रहेगा।

धनु राशि: आज का दिन आपके लिए ठीक–ठाक रहने वाला है। आज किसी कानूनी मामले में जल्दबाजी न दिखाएं। आज अपने काम को समय रहते पूरा कर लेंगे। किसी नए काम की शुरुआत करना चाह रहे हैं तो दिन शुभ है। आज आपके जीवनसाथी को करियर में सफलता मिलेगी। आज अपनी आय और व्यय में संतुलन बना कर चलें। आज आप दान–धर्म के कार्यों में बढ़–चढ़कर हिस्सा लेंगे।

मकर राशि: आज का दिन फेवरेबल रहने वाला है। स्वास्थ्य के लिहाज से दिन अच्छा रहेगा। आज आपके बढ़ते खर्चे आपको थोड़ी उलझन में डाल सकते है। आज किसी संपत्ति का सौदा जल्दबाजी में न करें। राजनीति से जुड़े लोगों को बड़े नेताओं से मिलने का अवसर मिलेगा। कार्यक्षेत्र में आपकी उन्नति का मार्ग प्रशस्त होगा।

कुंभ राशि: आज का दिन आपके अनुकूल रहेगा। आज परिवार के साथ घर पर मूवी देखने की प्लानिंग करेंगे। सेहत के लिहाज से आप खुद को तंदुरुस्त महसूस करेंगे। मार्केटिंग से जुड़े लोगों के लिए आज का दिन बेहतर रहेगा। किसी मित्र से लंबे समय बाद मुलाकात होगी, जिनसे मिलकर आपको खुशी होगी। यदि आपने बचत संबंधी योजनाओं पर पूरा ध्यान लगाया तो आप भविष्य के लिए धन संचय करने में कामयाब रहेंगे।

मीन राशि: आज आपका दिन अच्छा रहेगा। नौकरी में तरक्की मिलने से आपकी खुशी का ठिकाना नहीं रहेगा। आज कुछ बड़ा और अलग काम करने की सोच सकते है। संतान के साथ आज किसी धार्मिक स्थल पर घूमने जायेंगे। इस राशि की जो महिलाएं बिजनेस कर रही हैं, उनका दिन व्यस्तता से भरा रहेगा।

फीस के नाम पर जेब पर 'डाका' डाल रहे निजी स्कूल

दिलीप कुमार पाठक

स्कूलों में नया सत्र शुरू हो गया है छोटे – छोटे बच्चों के स्कूल जाने की बड़ी – बड़ी चिंताएं पैरेंट्स के चेहरों पर साफ़ तौर पर देखी जा सकती हैं द्य ये विकसित भारत के रास्ते पर बढ़ते हुए नए भारत की नई इबारत है जो बच्चों की पढ़ाई के नाम पर जमकर लूटकर लिखी जा रही है।

हम दूसरों के उदहारण बताते रहते हैं दर–असल मेरे भतीजे के लिए नए स्कूल का चुनाव बड़ा कठिन था क्योंकि सुविधाओं के नाम पर प्राईवेट स्कूलों में पढ़ाई की फीस के नाम पर डाका ड़ाला जा रहा है द्य हमारे 04 साल के भतीजे के स्कूल में एडमिशन फीस 35 हज़ार लिए गए द्य वहीँ 08 साल के बच्चे के एडमिशन के लिए 50 हज़ार लिए गए द्य इसको फीस के नाम पर डाका क्यों न कहा जाए ? हमारे देश में अधिकांश लोग मुश्किल से रोज़ी – रोटी कमा पाते हैं, अब सवाल ये उठता है कि जब देश की अधिकांश जनता अभी आर्थिक रूप से कमज़ोर है तो क्या ये स्कूल गरीबों के मखौल उड़ाने के लिए खुले हैं? इन स्कूलों में ऐसा क्या पढ़ाया जाता है कि 05 साल के बच्चों की फीस 50 हज़ार रुपए उगाह ली जाती है। किसी किसी स्कूलों में तो ये फीस लाखों में है। जबकि इन्हीं स्कूलों के अध्यापकों की फीस देखा जाए तो ज़्यादा से ज़्यादा 20–25 हज़ार होती है द्य सरकारी स्कूल के अध्यापकों की सैलेरी लाखों में है वहीँ प्राईवेट स्कूलों के अध्यापक कुछ ही हज़ार रुपए में गुज़र – बसर कर रहे हैं। सरकारी स्कूल में पढ़ाने वाले अध्यापकों के बच्चे प्राईवेट स्कूलों में पढ़ते हैं जबकि प्राईवेट स्कूलों में पढ़ाने वाले अध्यापकों के बच्चे सरकारी स्कूलों में पढ़ते हैं । सोचकर देखा जाए तो समझ आता है कि शिक्षा के नाम पर देश के लोगों का कितना कबाड़ा बनाया जा रहा है। अध्यापकों सहित पूरे देश को पता है कि सरकारी स्कूलों में ढंग से पढ़ाई ही नहीं होती, तो वे अपने बच्चों को क्यों पढ़ाएं ! क्योंकि उन्हें पता है कि वे क्या पढ़ा रहे हैं द्य सरकारी स्कूलों में जो थोड़ा बहुत ढंग के अध्यापक होते हैं तो उनसे तरह – तरह के सर्वे कराए जाते हैं। जैसे कहीं पोलियो कहीं टीका, कहीं जानवरों की गणना तो कहीं जानवरों का बीमा कराया जाता है द्य और बांकी वोटिंग कराने में व्यस्त रहते हैं। अब पढ़ाई कब होगी? हमारे देश को इस सिस्टम ने अंधेर नगरी में

तब्दील कर दिया है।

सबसे प्रमुख बात प्राईवेट स्कूलों में सरकार एवं बड़ी – बड़ी संस्थाएं उन्हें मान्यता, रजिस्ट्रेशन दे देती हैं फिर कभी झांकने नहीं जातीं । जब प्राइवेट स्कूलों में नहीं जाते तो सरकारी स्कूलों में भला कौन जाता होगा। स्कूलों के लिए एक नियमावली बनना चाहिए कि कितनी फीस हो सकती है, एक पाठ्यक्रम होना चाहिए हर स्कूल अपना पाठ्यक्रम खोलकर बैठा हुआ है! शिक्षा विभाग हाथों में मेहंदी लगाकर क्यों बैठा है! प्राईवेट स्कूलों में बच्चों को पढ़ाओ तो क्या यह भी नियम होना चाहिए कि बच्चों की स्कूल ड्रेस, किताबें सामाग्री सबकुछ स्कूलों ऐ क्यों खरीदा जाए? स्कूल चला रहे हैं या मार्केट हालांकि पूरी तरह उनका दोष नहीं है क्योंकि शिक्षा विभाग ने पूरी तरह से उन्हें लूटने के लिए छोड़ रखा है, और प्राईवेट स्कूलों वाले जमकर लोगों को लूट रहे हैं द्य ये तो हद ही हो गई है हमारे एक मित्र अपने बच्चों की किताबें लाएं हैं और किताबें आई हैं 14 हजार 635 रुपये की...किताबें कागज की ही हैं या चांदी का वर्क लगा है? समझ नहीं आ रहा पुस्तकों एवं शिक्षा के नाम पर ये लूट पाट कब बंद होगी? कब लगाम लगेगी।

प्रशासन स्कूलों के खिलाफ मुकम्मल कार्रवाई नहीं कर रहा जिससे उनके इरादे बुलंद होते जा रहे हैं। अभिभावकों के लिए बढ़ी फीस अदा करना चुनौती के समान है। ट्यूशन फीस, स्कूल मेनटेनेंस फीस, इंटरनेट फीस सहित विभिन्न मदों में निजी स्कूलों ने अपनी सुविधा के अनुसार बढ़ोतरी की है। कुल मिलाकर फीस में पंद्रह से बीस फीसद तक का इजाफा किया गया है। जिन अभिभावकों के दो या तीन बच्चे निजी स्कूलों में पढ़ रहे हैं, उनकी परेशानी बढ़ गई है।

सेंट्रल बोर्ड आफ सेकेंड्री एजुकेशन (सीबीएसई) के द्वारा हर स्टेट में एक एडमीशन एंड फी रेगुलेटरी कमेटी का गठन किया जाता है। कमेटी की जिम्मेदारी होती है कि वह हर वर्ष यह तय करेगी कि स्कूलों में कितनी फीस बढ़ाई जाए। लेकिन स्कूल अपनी मनमर्जी दिखाते हुए फीस बढ़ाते हैं। यही कारण है कि स्कूलों के द्वारा बढ़ाई गई फीस अलग–अलग है। कोई नियम कानून नहीं है। फीस में हर वर्ष हजारों रुपये की बढ़ोतरी कर स्कूल अपनी जेब भर रहे हैं। आम आदमी अपने बच्चों को किस प्रकार पढ़ा रहा है स्कूलों को इससे कोई लेना देना नहीं है। सैलरी डेढ़ दो हजार रुपये बढ़ती है। स्कूल में बच्चों की फीस हज़ारों रुपये तक बढ़ गई है। ऐसे में परेशानी बढ़ गई है। प्रशासन को चाहिए करोड़ों अभिभावकों की परेशानी को देखते हुए स्कूलों के खिलाफ कार्रवाई करे। जिन अभिभावकों के दो बच्चे निजी स्कूल में पढ़ रहे हैं। उनकी परेशानी सबसे अधिक बढ़ गई है। प्रशासन को चाहिए कि निजी स्कूलों पर लगाम लगाने के लिए सख्त कदम उठाए। बच्चों की फीस देने के लिए अभिभावक अपने दूसरे खर्चों में कटौती करने को विवश हैं। अभिभावकों की जेब काटकर स्कूल अपनी जेब भर रहे हैं। इस पर सरकार को नियम बनाना चाहिए।

साथ ही आदेश पारित होना चाहिए कि सरकारी स्कूल में पढ़ाने वालों के बच्चे अब प्राईवेट स्कूलों में नहीं पढ़ पाएंगे द्य जब सरकारी स्कूल के कर्मचारियों के बच्चे केवल सरकारी स्कूलों में पढ़ेंगे तो गुणवत्ता में सुधार होगा और प्राइवेट स्कूलों में कुछ दबाव कम होगा जिससे उनकी दादागिरी कुछ कम होगी द्य साथ ही सरकारी स्कूल के अध्यापकों से अनावश्यक काम न लिए जाएं जिससे अध्यापक बहाना न करें! साथ ही प्राईवेट स्कूलों में अध्यापकों की वेतन में कुछ बढोत्तरी होना चाहिए। साथ ही देश के अध्यापकों को एवं स्कूल चलाने वालों को नैतिकता नहीं त्यागना चाहिए आप शिक्षा से जुड़े हुए हैं कृपया डाका मत डालें। हमारे मुल्क में लोग सख्ती से ही सुधरते हैं इस समस्या का समाधान जल्द ही होना चाहिए अन्यथा ये एकदिन विकराल रूप धारण कर लेगी! हालांकि अब तो कर भी चुकी है।

संक्षिप्त समाचार

पादरी बजिंदर के बाद अब उसके साथी पर पुलिस का शिकंजा, यूट्यूब पर पीड़िता के वीडियो अपलोड करने का आरोप

मोहाली ,(आरएनएस)। दुष्कर्म मामले में उम्रकैद की सजा काट रहे पादरी बजिंदर सिंह के एक सहयोगी के खिलाफ बलौंगी पुलिस थाने में केस दर्ज किया गया है। आरोप है कि आरोपी सहयोगी ने पीड़िता से जुड़ी कई वीडियो क्लिप्स अपने यूट्यूब चैनल पर अपलोड कर न केवल उसकी पहचान उजागर की, बल्कि आपत्तिजनक भाषा का भी इस्तेमाल किया। पीड़िता की शिकायत पर पुलिस ने तत्काल कार्रवाई करते हुए बजिंदर सिंह के सहयोगी आशीष राज कुमार के खिलाफ आईटी एक्ट समेत भारतीय दंड संहिता की कई धाराओं के तहत मामला दर्ज किया है। पुलिस ने साथ ही उन यूट्यूब चैनलों को बंद करवाने की प्रक्रिया भी शुरू कर दी है, जिन पर यह आपत्तिजनक सामग्री पोस्ट की गई थी। पुलिस रिपोर्ट के अनुसार, एक वीडियो में आशीष राज कुमार को एक अन्य सहयोगी से फोन पर बात करते हुए सुना गया, जिसमें वह पीड़िता के खिलाफ आपत्तिजनक शब्दों का प्रयोग कर रहा है। वीडियो में पीड़िता और उसके पति की पहचान भी उजागर की गई है, जो कानूनन अपराध है। बुधवार को पीड़िता के पति ने मीडिया से बात करते हुए कहा कि पादरी बजिंदर सिंह के समर्थकों द्वारा यूट्यूब पर लगातार इस मामले को लेकर भ्रामक और अपमानजनक वीडियो अपलोड किए जा रहे हैं। उन्होंने यह भी आरोप लगाया कि यह सब कोर्ट के फैसले को गलत साबित करने और पीड़िता को बदनाम करने के लिए किया जा रहा है। पुलिस मामले की गंभीरता को देखते हुए आरोपित की तलाश में जुट गई है और जल्द ही उसे गिरफ्तार किए जाने की संभावना है।

सैफ अली खान हमला मामला : मुंबई पुलिस ने किया आरोपी शरीफुल इस्लाम की जमानत याचिका का विरोध

मुंबई ,(आरएनएस)। बॉलीवुड अभिनेता सैफ अली खान पर हमला करने के मामले में गिरफ्तार किए गए आरोपी मोहम्मद शरीफुल इस्लाम शहजाद ने मुंबई के सेशन कोर्ट में जमानत के लिए याचिका दाखिल की है। हालांकि, मुंबई पुलिस ने आरोपी की जमानत याचिका का विरोध किया है। इस मामले में अगली सुनवाई 17 अप्रैल को होगी। मुंबई पुलिस ने आरोपी की तरफ से दाखिल की गई जमानत याचिका मामले में अपना जवाब कोर्ट में दाखिल किया। उन्होंने कहा कि जिस चाकू से सैफ अली खान पर हमला किया गया था, फोरेंसिक जांच में चाकू के तीनों टुकड़े मेल खाते पाए गए हैं। पुलिस का कहना है कि यह आरोपी के खिलाफ महत्वपूर्ण सबूत है। अगर आरोपी को जमानत दी गई तो उसके फरार होने की संभावना है, इसलिए शरीफुल की जमानत अर्जी मंजूर न की जाए।बता दें कि आरोपी शरीफुल ने अपनी जमानत याचिका में दावा किया कि उसे झूठे मामले में फंसाया गया है और पुलिस के पास कोई मजबूत सबूत नहीं है। इतना ही नहीं, एफआईआर में कई खामियां भी हैं।इससे पहले मंगलवार को बॉलीवुड अभिनेता सैफ अली खान पर हुए हमले के मामले में पुलिस ने बांद्रा कोर्ट में चार्जशीट दायर की थी। यह चार्जशीट एक हजार से अधिक पन्नों की है और इसमें कई महत्वपूर्ण साक्ष्य पेश किए गए हैं, जो जांच के दौरान आरोपी शरीफुल इस्लाम के खिलाफ प्राप्त हुए थे। पुलिस के अनुसार, इस चार्जशीट में फोरेंसिक लैब की रिपोर्ट का भी उल्लेख किया गया है, जो इस मामले में एक अहम बिंदु साबित हो सकती है। रिपोर्ट के मुताबिक, घटनास्थल से जो चाकू का टुकड़ा सैफ अली खान के शरीर से और आरोपी के पास से मिला था, वह सभी एक ही चाकू के तीन अलग-अलग टुकड़े थे। इससे यह साफ होता है कि हमलावर ने सैफ अली खान पर हमला करने के लिए उसी चाकू का इस्तेमाल किया था। इसके अलावा, पुलिस को जांच के दौरान आरोपी शरीफुल इस्लाम के बाएं हाथ की उंगलियों के निशान भी मिले हैं।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का 50वां वाराणसी दौरा, भव्य स्वागत की तैयारी

वाराणसी (आरएनएस)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 11 अप्रैल को अपने संसदीय क्षेत्र वाराणसी का 50वां दौरा करने जा रहे हैं। इस खास मौके पर वे काशीवासियों को 3,884 करोड़ रुपये की 44 परियोजनाओं की सौगात देंगे। इसमें 1,629 करोड़ रुपये की 19 परियोजनाओं का लोकार्पण और 2,255 करोड़ रुपये की 25 परियोजनाओं का शिलान्यास शामिल है। प्रधानमंत्री मोदी के इस दौरे को लेकर वाराणसी में उत्साह का माहौल है और भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने उनके भव्य स्वागत की तैयारियां पूरी कर ली हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अपने दौरे के दौरान वाराणसी के रोहनिया क्षेत्र में मेहंदीगंज में एक जनसभा को संबोधित करेंगे। इस जनसभा में लगभग 50 हजार लोग उनके संबोधन को सुनने के लिए मौजूद रहेंगे।स्थानीय प्रशासन और भाजपा कार्यकर्ताओं ने इसकी तैयारियां जोर-शोर से की हैं।

तहव्वुर राणा का प्रत्यर्पण मोदी सरकार की कूटनीतिक जीत : अमित शाह

नई दिल्ली (ए.)। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने एक कार्यक्रम में कहा कि अविभाजित भारत के मुसलमान विभाजन नहीं चाहते थे, जबकि उस समय के कांग्रेस नेता और उनकी तुष्टिकरण की रणनीति विभाजन के लिए जिम्मेदार है। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि आज मैं विशेषकर देश के युवाओं से कहना चाहता हूं कि बाकी कुछ भी सहन करना, मगर तुष्टिकरण नहीं। क्योंकि यह ऐसा जहरीला नासूर है जिसे देश से हमेशा के लिए उखाड़कर फेंक देना चाहिए। शाह ने यह भी कहा कि तहव्वुर राणा का प्रत्यर्पण मोदी सरकार की बड़ी कूटनीतिक जीत है। ऐसा इसलिए क्योंकि बम धमाकों के समय जो लोग सत्ता में थे, वे उसे प्रत्यर्पित नहीं कर पाए थे, लेकिन हमने यह कर दिखाया! वक्फ कानून का बचाव करते हुए शाह ने कहा कि पसमांदा मुस्लिम समाज जो गरीब है, ओबीसी है, उनको वक्फ में प्रतिनिधित्व मिलना चाहिए या नहीं मिलना चाहिए। शिया, आगाखानी, दाऊदी बोहरा, महमदिया और अहमदिया... इन सारे मुसलमानों का कोई प्रतिनिधित्व नहीं है। वो भी मुसलमान हैं, क्यों नहीं मिलना चाहिए। ये जो अभी वक्फ का बिल आया है वो मुस्लिम समाज के हरेक अंग का प्रतिनिधित्व करने वाला बिल है। उन्होंने कहा कि राहुल गांधी और उनकी पार्टी ने झूठा दावा किया कि नागरिकता संशोधन अधिनियम (सीएए) के लागू होने से लोगों की नागरिकता चली जाएगी। हालांकि, सीएए लागू होने के दो साल बाद भी एक भी मुसलमान की नागरिकता नहीं गई है। शाह ने कहा कि कांग्रेस पार्टी ने इंडी गठबंधन के साथ मिलकर इन बेबुनियाद आरोपों से देश को गुमराह किया और इसके बाद हुई अशांति और हिंसा के लिए वे ही जिम्मेदार हैं। उन्होंने दावा किया कि मोदी जी को कांग्रेस के लोगों ने जितनी बार गालियां दी हैं, मोदी जी और मजबूत होकर बाहर आए हैं। उनको मालूम नहीं है... हमारा चुनाव चिन्ह कमल है, जो कीचड़ में ही खिलता है।

दिल्ली के उपराज्यपाल विनय कुमार सक्सेना, दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता और दिल्ली के मंत्री प्रवेश वर्मा ने नई दिल्ली में पुराने बारापुला पुल के नाले का निरीक्षण किया।

आज उपेक्षित रही परंपराएं और विरासत पुनर्जीवित हो गई : जयशंकर

नई दिल्ली,(ए)। भारत के विदेश मंत्री एस जयशंकर ने कहा है कि लंबे समय से उपेक्षित रही परंपराएं और विरासत अब पुनर्जीवित हो गई हैं। ज्यादा भाषाओं को शास्त्रीय दर्जा प्राप्त है और भारतीय प्रथाओं को नया प्रोत्साहन और गति मिल रही है। उन्होंने कहा कि इसका सार यह है कि इंडिया आज भारत बन चुका है। यह बात बुधवार को जयशंकर एक कार्यक्रम में कही। उन्होंने कहा कि भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद (आईसीसीआर) परिवर्तन को मान्यता देता है और मुझे यकीन है कि यह इसे अपने भविष्य के कार्यों में शामिल करेगा। आईसीसीआर विदेश मंत्रालय के अंतर्गत आता है। जयशंकर ने कहा कि किसी भी संस्था के लिए 75 साल विकास और विस्तार का अहम समय होता है...। उन्होंने यह भी कहा कि यह समय और भी अहम हो जाता है। खासकर उस परिवेश को देखते हुए जिसमें ये संस्थाएं काम करती हैं। जयशंकर ने कहा कि हमारा राष्ट्र और हमारा समाज काफी बदल गया है। आज हम अपनी पहचान व्यक्त करने और इसकी समझ को बढ़ावा देने के मामले में पहले की तुलना में ज्यादा आश्वस्त, प्रामाणिक और प्रतिबद्ध हैं। उन्होंने कहा कि आज देश में हमारी संस्कृति, विरासत और परंपराओं के प्रति जागरूकता बढ़ी है।

खालसा साजना दिवस : 6,600 सिख श्रद्धालु पाकिस्तान रवाना, 50 साल बाद सभी को मिला वीजा

अमृतसर (आरएनएस)। खालसा साजना दिवस (वैसाखी) के मौके पर गुरुवार को (10 अप्रैल) पूरे भारत से करीब 6,600 सिख श्रद्धालु पाकिस्तान स्थित गुरुद्वारों के दर्शन के लिए रवाना हुए। यह जत्था अटारी-वाघा बॉर्डर के रास्ते पाकिस्तान पहुंचेगा। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी (एसजीपीसी) की ओर से 1,942 तीर्थयात्रियों का एक विशेष जत्था तैयार किया गया, जो बोले सो निहाल के जयकारों के साथ शिरोमणि कमेटी कार्यालय से रवाना हुआ। इस जत्थे का नेतृत्व एसजीपीसी सदस्य जंग बहादुर और उपनेता बीबी जोगिंदर कौर कर रहे हैं। यह तीर्थयात्री 10 दिनों तक पाकिस्तान में रहेंगे और 19 अप्रैल को भारत लौट आएंगे। एसजीपीसी ने बताया कि 50 साल बाद ऐसा पहली बार हुआ है, जब सभी आवेदन करने वाले श्रद्धालुओं को वीजा मिला है। इस बार शिरोमणि कमेटी ने 1,942 श्रद्धालुओं के नाम दिल्ली स्थित पाकिस्तान दूतावास को भेजे थे, और सभी को वीजा जारी कर दिया गया। इस उपलब्धि के लिए एसजीपीसी ने भारत और पाकिस्तान सरकारों के साथ-साथ दूतावास अधिकारियों का धन्यवाद किया। कमेटी के मैनेजर सतनाम सिंह और प्रताप सिंह ने कहा कि पहले कई बार कुछ श्रद्धालुओं को वीजा नहीं मिलता था, लेकिन इस बार सभी को वीजा मिलने से संगत में खुशी की लहर है।यह जत्था पाकिस्तान में ननकाना साहिब, पंजा साहिब, लाहौर साहिब, करतारपुर साहिब और अन्य गुरुद्वारों के दर्शन करेगा। खालसा साजना दिवस का मुख्य समारोह गुरुद्वारा पंजा साहिब, हसन अब्दाल में होगा। सतनाम सिंह ने बताया कि शिरोमणि कमेटी के अध्यक्ष एडवोकेट हरजिंदर सिंह धामी के निर्देश पर एक प्रतिनिधिमंडल ने हाल ही में दिल्ली में पाकिस्तान दूतावास के अधिकारियों से मुलाकात की थी। इस मुलाकात में सभी श्रद्धालुओं को वीजा देने की मांग रखी गई थी, जिसे स्वीकार कर लिया गया।

अगर बैंकों में मराठी का इस्तेमाल नहीं हुआ तो...राज ठाकरे ने आईबीए को लिखी चिट्ठी

मुम्बई (ए.)। महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना (मनसे) के अध्यक्ष राज ठाकरे ने शीर्ष बैंक निकाय से कहा है कि वह बैंकों को निर्देश दे कि वे अपनी सेवाओं में आरबीआई के मानदंडों के अनुसार मराठी का उपयोग करें, अन्यथा उनकी पार्टी अपना आंदोलन तेज करेगी। मनसे नेताओं द्वारा बुधवार को भारतीय बैंक संघ को सौंपे गए पत्र में ठाकरे ने यह भी कहा कि यदि बैंक अपनी सेवाओं में तीन-भाषा फार्मूले अंग्रेजी, हिंदी और स्थानीय भाषा (महाराष्ट्र के मामले में मराठी) का पालन नहीं करते हैं, तो कानून और व्यवस्था के लिए बैंक स्वयं जिम्मेदार होंगे। ठाकरे ने आईबीए को लिखे पत्र में कहा, 卐आप बैंकों को मराठी भाषा का उपयोग करने के लिए आवश्यक निर्देश दें, अन्यथा मनसे अपना आंदोलन तेज कर देगी और उसके बाद कानून एवं व्यवस्था की जिम्मेदारी संबंधित बैंकों की होगी।

पेट्रोल पंप मैनेजर की गोली मारकर हत्या, बोतल में पेट्रोल देने से मना करने पर हमला

बुलंदशहर (आरएनएस)। उत्तर प्रदेश के बुलंदशहर जिले में सिकंदराबाद कोतवाली क्षेत्र के जौली गांव के पास सिकंदराबाद-जेवर स्टेट हाइवे पर स्थित एक पेट्रोल पंप पर देर रात सनसनीखेज वारदात हुई। बाइक सवार दो हथियारबंद हमलावरों ने पंप मैनेजर राजू शर्मा की गोली मारकर हत्या कर दी। यह घटना बोतल में पेट्रोल देने से मना करने को लेकर हुए विवाद के बाद हुई। हमलावर वारदात को अंजाम देने के बाद मौके से फरार हो गए।पुलिस के मुताबिक, बीती रात दो लोग बाइक से पेट्रोल पंप पर आए। उन्होंने अपनी मोटरसाइकिल में 200 रुपये का पेट्रोल डलवाया। इसके बाद उन्होंने पंप कर्मियों से एक खाली बोतल में भी पेट्रोल देने की मांग की। पंप के सेल्समैन ने सुरक्षा नियमों का हवाला देते हुए बोतल में पेट्रोल देने से इनकार कर दिया। इस बात पर दोनों हमलावरों और पंप कर्मियों के बीच कहासुनी शुरू हो गई।

हीरा कारखाने के वाटर कूलर में मिलाई सल्फास, पानी पीने से 150 कारीगरों की बिगड़ी तबीयत; हड़कंप मचा

सूरत ,(आरएनएस)। गुजरात के सूरत शहर में स्थित एक हीरा कारखाने में उस समय हड़कंप मच गया, जब वहां काम करने वाले 150 से अधिक कारीगरों की अचानक तबीयत खराब हो गई। यह घटना कापोदरा थाना क्षेत्र के अंतर्गत अनभ जेम्स नामक डायमंड फैक्ट्री में हुई, जहां कारीगर रोजाना की तरह हीरा तराशने का काम कर रहे थे। पुलिस और कारखाना प्रबंधन के अनुसार, कुछ कारीगरों ने फैक्ट्री में लगे वाटर कूलर से पानी पिया, जिसके बाद उन्हें चक्कर आने और उल्टी की शिकायत शुरू हुई। अन्य कर्मचारियों ने पानी से असामान्य गंध आने की बात प्रबंधन को बताई, जिसके बाद यह मामला गंभीर रूप लेता चला गया। घटना की सूचना मिलते ही कापोदरा पुलिस मौके पर पहुंची और जांच शुरू की। प्रारंभिक तफ्तीश में वाटर कूलर के पास सल्फास का एक पैकेट बरामद हुआ। पुलिस ने बताया कि पैकेट का कवर फटा हुआ था, हालांकि अंदर का पैकेट अभी सुरक्षित था। मामले की गंभीरता को देखते हुए कारखाना मालिकों ने तत्काल सभी कर्मचारियों को मेडिकल जांच के लिए अस्पताल पहुंचाया। कुल 104 लोगों को किरण अस्पताल और 14 को डायमंड अस्पताल में भर्ती कराया गया। इनमें से दो कारीगरों की हालत गंभीर होने के कारण उन्हें आईसीयू में रखा गया है, जबकि बाकी को मामूली शिकायतों के चलते जनरल वार्ड में भर्ती किया गया है।

सुचारु संचालन के दिए निर्देश किसानों व आमजन को निर्बाध बिजली आपूर्ति के लिए राज्य सरकार प्रतिबद्ध : भजनलाल शर्मा

जयपुर (आरएनएस)। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा दो दिवसीय हनुमानगढ़-श्रीगंगानगर दौरे के तहत बुधवार को श्रीगंगानगर के सूरतगढ़ सुपर क्रिटिकल थर्मल पावर स्टेशन पहुंचे। यहां उन्होंने पावर स्टेशन का निरीक्षण किया तथा संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए कि विद्युत उत्पादन के लिए संचालित इकाइयों का सुव्यवस्थित संचालन किया जाए जिससे ग्रीष्म ऋतु में किसानों व आमजन को निर्बाध विद्युत आपूर्ति सुनिश्चित हो सके।शर्मा ने पावर स्टेशन के कॉन्फ्रेंस हॉल में बैठक में अधिकारियों को निर्देशित किया कि पॉवर स्टेशन के सभी तकनीकी पहलुओं का समय-समय पर निरीक्षण किया जाए जिससे ब्रेक-डाउन जैसी स्थिति के कारण विद्युत उत्पादन प्रभावित नहीं हो तथा तकनीकी खराबी के कारण उत्पादन इकाइयों के शट डाउन जैसी स्थिति से बचा जा सके। उन्होंने सभी इकाइयों की विद्युत उत्पादन क्षमता की नियमित मॉनिटरिंग करने के भी निर्देश दिए। प्रदेश की बिजली उत्पादन क्षमता को बढ़ाने के लिए राज्य सरकार प्रतिबद्ध-मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार नवीन तकनीक से कम लागत में प्रदेश के बिजली उत्पादन की क्षमता को बढ़ाने के लिए प्रतिबद्धता के साथ कार्य कर रही है। इसी क्रम में सूरतगढ़ थर्मल पावर स्टेशन में 125/250 मेगावॉट ऑवर बैटरी एनर्जी स्टोरेज सिस्टम की स्थापना के कार्यादेश जारी किए जा चुके हैं। वहीं, आरवीयूएनएल एवं कोल इंडिया के संयुक्त उपक्रम द्वारा सूरतगढ़ थर्मल पॉवर स्टेशन में 100 मेगावॉट सौर ऊर्जा संयंत्र की स्थापना के लिए एमओयू किया जा चुका है। इन अहम निर्णयों से राज्य सरकार का किसानों को दिन में बिजली देने का संकल्प पूरा होगा। इस दौरान खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मंत्री सुमित गोदारा, जल संसाधन मंत्री सुरेश सिंह रावत, ऊर्जा राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) हीरालाल नागर, अतिरिक्त मुख्य सचिव जल संसाधन अभय कुमार, राजस्थान राज्य विद्युत उत्पादन निगम लिमिटेड के सीएमडी देवेन्द्र श्रृंगी, मुख्य अभियंता एवं अतिरिक्त सचिव (पश्चिम) अमरजीत सिंह, सूरतगढ़ सुपर क्रिटिकल थर्मल पॉवर स्टेशन के चीफ इंजीनियर के.सी. सिंघल सहित विभिन्न जनप्रतिनिधिगण एवं वरिष्ठ अधिकारीगण उपस्थित रहे।

तरनतारन में सब-इंस्पेक्टर की गोली मारकर हत्या, दो पक्षों के बीच झगड़ा सुलझाने पहुंचे थे अधिकारी

तरनतारन ,(आरएनएस)। पंजाब के तरनतारन जिले के कोट मोहम्मद खान गांव में देर रात एक दर्दनाक घटना सामने आई, जहां झगड़ा सुलझाने पहुंचे पुलिस दल पर अज्ञात हमलावरों ने गोलियां चला दीं। इस गोलीबारी में श्री गोइंदवाल साहिब थाने के सब-इंस्पेक्टर चरणजीत सिंह की मौत हो गई, जबकि एक अन्य पुलिस अधिकारी भी हमले में घायल हुआ है। प्राप्त जानकारी के अनुसार, गांव में दो पक्षों के बीच लंबे समय से विवाद चल रहा था। बुधवार रात एक बार फिर झगड़ा बढ़ने पर पुलिस को ऑनलाइन शिकायत दी गई। शिकायत मिलते ही सब-इंस्पेक्टर चरणजीत सिंह अपनी टीम के साथ मौके पर पहुंचे और मामले को शांत कराने की कोशिश करने लगे।इसी दौरान कुछ लोगों ने अचानक गोलियां चला दीं, जिसमें चरणजीत सिंह गंभीर रूप से घायल हो गए। उन्हें तुरंत इलाज के लिए अस्पताल ले जाया गया, लेकिन डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। इस हिंसक झड़प में एक अन्य पुलिस अधिकारी भी घायल हुआ है।घटना की जानकारी मिलते ही डीआईजी फिरोजपुर रेंज और एसएसपी हरमन बीर सिंह गिल मौके पर पहुंचे और जांच शुरू कर दी गई है। शुरुआती जांच में यह भी आशंका जताई जा रही है कि गोलीबारी के दौरान किसी पुलिस अधिकारी की रिवॉल्वर का भी इस्तेमाल हुआ हो, लेकिन इसकी आधिकारिक पुष्टि अब तक नहीं की गई है। इस हमले के बाद गांव में दहशत का माहौल है और भारी पुलिस बल तैनात कर दिया गया है। मामले की गंभीरता को देखते हुए आरोपियों की तलाश तेज कर दी गई है और पूरे घटनाक्रम की जांच की जा रही है।

केंद्रीय मंत्री जी. किशन रेड्डी को छत्तीसगढ़ के कोरबा जिले के गेवरा व्यू पॉइंट पर पहुंचने पर केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल (सीआईएसएफ) द्वारा औपचारिक गार्ड ऑफ ऑनर दिया गया।

भारत-अमेरिका ट्रेड में लंबी अवधि का नजरिया रखें निर्यातक : पीयूष गोयल

नई दिल्ली (आरएनएस)। नए उभरते हुए व्यापार चुनौतियों के बीच, केंद्रीय वाणिज्य और उद्योग मंत्री, पीयूष गोयल ने निर्यातकों से कहा कि वे भारत-अमेरिका ट्रेड में लंबी अवधि का नजरिया रखें। केंद्रीय मंत्री की ओर से बदलते वैश्विक व्यापार परिदृश्य के बीच एक्सपोर्ट प्रमोशन काउंसिल और इंडस्ट्री बॉडीज के साथ चर्चा की गई। यह बैठक उभरते और अत्यंत गतिशील परिदृश्यों से उत्पन्न होने वाले प्रभावों और अवसरों पर विचार-विमर्श करने और उद्योग एवं व्यापार जगत को सरकार द्वारा उठाए जा रहे कदमों से अवगत कराने के लिए बुलाई गई थी।गोयल ने कहा, विभिन्न एक्सपोर्ट प्रमोशन काउंसिल और इंडस्ट्री बॉडीज के पक्षकारों के साथ एक बहुत ही उपयोगी बैठक हुई। विचार-विमर्श में अमेरिका के साथ पारस्परिक रूप से लाभकारी बहु-क्षेत्रीय द्विपक्षीय व्यापार समझौते (बीटीए) के लिए चल रही चर्चाओं से सभी पक्षकारों को अवगत कराया गया।

गोयल ने आगे कहा, उन्हें (निर्यातकों) को अपने

वाणिज्यिक निर्णय लेते समय भारत-अमेरिका व्यापार और आर्थिक संबंधों के दीर्घकालिक दृष्टिकोण को अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया गया और आश्वासन दिया कि सरकार वैश्विक व्यापार वातावरण में हाल में हुए बदलावों के बीच एक अनुकूल वातावरण प्रदान करने के लिए काम करेगी।

केंद्रीय मंत्री ने वित्त वर्ष 2024-25 में 820 अरब डॉलर से अधिक का अब तक का उच्चतम निर्यात हासिल करने के लिए निर्यातकों और उद्योग की सराहना की, जो पिछले वित्त वर्ष की तुलना में लगभग 6 प्रतिशत अधिक है।केंद्रीय मंत्री ने कहा कि लाल सागर संकट, खाड़ी क्षेत्र में फैल रहे इजरायल-हमास संघर्ष, रूस-यूक्रेन संघर्ष और कुछ विकसित अर्थव्यवस्थाओं में धीमी वृद्धि सहित कई प्रतिकूल परिस्थितियों के बावजूद, यह उपलब्धि की सराहनीय है।बैठक के दौरान, गोयल ने निर्यातकों को पारस्परिक रूप से लाभकारी बहु-क्षेत्रीय द्विपक्षीय व्यापार समझौते (बीटीए) के लिए अमेरिका के साथ चर्चा के बारे में भी जानकारी दी।

इसके अलावा, बैठक में विभिन्न क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व करने वाली अलग-अलग एक्सपोर्ट प्रमोशन काउंसिल ने वैश्विक व्यापार में उभरती चुनौतियों के मद्देनजर अपने विचार और दृष्टिकोण प्रस्तुत किए और सरकार से इन चुनौतीपूर्ण समय में निर्यात उद्योग को समर्थन देने के लिए सक्रिय कदम उठाने का अनुरोध किया।

नुसरत भरूचा का बोल्ड अवतार, हॉटनेस से बढ़ाया तापमान

बॉलीवुड एक्ट्रेस नुसरत भरूचा अपने बोल्ड और स्टाइलिश लुक के लिए जानी जाती हैं. हाल ही में उन्होंने अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर कुछ ग्लैमरस तस्वीरें शेयर की हैं, जिसमें वह बेहद हॉट और स्टनिंग नजर आ रही हैं. नुसरत ने वाइट डीप-नेक टॉप और ब्लैक ग्लिटरी स्कर्ट पहनी है, जिसमें उनका लुक बेहद ग्लैमरस लग रहा है. उन्होंने अपने लुक को सिल्वर ज्वेलरी और न्यूड मेकअप से कम्प्लीट किया है. उनके स्टाइलिश हेयरडू और एक्सप्रेशन्स ने फैंस का दिल जीत लिया है.इइन तस्वीरों के सामने आते ही सोशल मीडिया पर हलचल मच गई है. फैंस नुसरत के इस लुक की जमकर तारीफ कर रहे हैं. कोई उन्हें फायर बता रहा है तो कोई गॉर्जियस कह रहा है. एक यूजर ने लिखा, आपकी हॉटनेस ने इंटरनेट पर आग लगा दी! वर्कफ्रंट की बात करें तो नुसरत भरूचा जल्द ही कई दिलचस्प प्रोजेक्ट्स में नजर आएंगी. उनके फैन्स उनकी अपकमिंग फिल्मों को लेकर बेहद एक्साइटेड हैं.

बॉक्स ऑफिस पर सलमान खान की सिकंदर का हाल-बेहाल, 10वें दिन कमाए केवल इतने करोड़ रुपये

ईद के मौके पर आई सलमान खान की फिल्म सिकंदर बॉक्स ऑफिस पर मुंह के बल गिरी है। न तो दर्शकों ने फिल्म को सराहा और न ही समीक्षकों से इसे हरी झंडी मिली, जिसके चलते पहले दिन से ही यह टिकट खिड़की पर दर्शकों के लिए संघर्ष करती दिख रही है।बॉक्स ऑफिस पर फिल्म का हाल-बेहाल है। हर गुजरते दिन के साथ इसकी कमाई में गिरावट जारी है।आइए जानें सिकंदर ने 10वें दिन कितने करोड़ रुपये कमाए।बॉक्स ऑफिस ट्रैकर सैकनिल्क के मुताबिक, सिकंदर ने अपनी रिलीज के 10वें दिन यानी दूसरे मंगलवार को 1.35 करोड़ रुपये का कारोबार किया, जिसके बाद इसका कुल बॉक्स ऑफिस कलेक्शन 105.60 करोड़ रुपये हो गया है।दुनियाभर में सिकंदर ने 200 करोड़ रुपये की कमाई का आंकड़ा पार कर लिया है। इस फिल्म ने अब तक दुनियाभर में 200.93 करोड़ रुपये कमा लिए हैं।फिल्म का अनुमानित बजट लगभग 200 करोड़ रुपये बताया जा रहा है।सिकंदर के निर्देशन की कमान एआर मुरुगदॉस ने संभाली है, जिन्होंने ब्लॉकबस्टर फिल्म गजनी बनाई थी। साजिद नाडियाडवाला फिल्म के निर्माता हैं।

इस फिल्म में सलमान की जोड़ी पहली बार रश्मिका मंदाना के साथ बनी है। फिल्म में प्रतीक बब्बर, काजल अग्रवाल, सत्यराज और शरमन जोशी सहित कई कलाकार सहायक भूमिका में नजर आ रहे हैं।

सिकंदर की कहानी एक ऐसे इंसान की है, जो भ्रष्ट सिस्टम से परेशान हो चुका है और अब इसके खिलाफ आवाज उठा रहा है।

मुनव्वर फारुकी की फर्स्ट कॉपी का टीजर जारी, अमेजन एमएक्स प्लेयर पर होगा प्रीमियर

मशहूर स्टैंडअप कॉमेडियन और बिग बॉस 17 के विजेता मुनव्वर फारूकी काफी समय से अपनी वेब सीरीज फर्स्ट कॉपी को लेकर सुर्खियों में बने हुए हैं।

खास बात यह है कि यह मुनव्वर के करियर की पहली सीरीज है, जिसकी दर्शक लंबे समय से राह देख रहे हैं।

अब निर्माताओं ने फर्स्ट कॉपी का टीजर जारी कर दिया है, जिसे प्रशंसक खूब पंसद कर रहे हैं। मुनव्वर की अदाकारी की भी लोग काफी तारीफ कर रहे हैं।

फर्स्ट कॉपी का प्रीमियर ओटीटी प्लेटफॉर्म अमेजन एमएक्स प्लेयर पर होगा। इस सीरीज को आप जून, 2025 में अमेजन एमएक्स प्लेयर पर मुफ्त में देख पाएंगे। फिलहाल सीरीज की रिलीज तारीख सामने नहीं आई है।

अमेजन एमएक्स प्लेयर ने टीजर साझा करते हुए लिखा, नकली माल की असली दमदार कहानी लेकर हम आ रहे हैं।

मुनव्वर के अलावा इस सीरीज में गुलशन ग्रोवर, मेयांग चांग, साकिब अयूब, क्रिस्टल डिसूजा और आशी सिंह जैसे कलाकार भी नजर आएंगे।

22 साल बाद अभिनय की दुनिया में लौट रहीं राखी गुलजार, बंगाली फिल्म अमर बॉस में आएंगी नजर

दिग्गज अभिनेत्री राखी गुलजार इन दिनों खूब चर्चा में हैं और हों भी क्यों ना, वह लगभग 22 साल बाद अभिनय की दुनिया में जो लौट रही हैं।

वह जल्द ही बंगाली फिल्म अमर बॉस में नजर आएंगी। फिल्म का टीजर रिलीज हो चुका है, जिसे प्रशंसक खूब पसंद कर रहे हैं। हमेशा की तरह राखी की अदाकारी की लोग जमकर तारीफ कर रहे हैं।

नंदिता रॉय और शिबोप्रसाद मुखर्जी ने इस फिल्म के निर्देशन की कमान संभाली है।

अमर बॉस को 9 मई, 2025 को सिनेमाघरों में रिलीज किया जाएगा। राखी इस फिल्म में शिबोप्रसाद मुखर्जी, श्राबंती चटर्जी, सौरसेनी मैत्र, गौरव चटर्जी और शाबित्री चटर्जी जैसे अन्य कलाकार के साथ नजर आएंगी।

बता दें कि राखी ने 1967 में बंगाली फिल्म बदहू बरण के जरिए अपने अभिनय करियर की शुरुआत की।

इसके बाद 1970 में उन्होंने बॉलीवुड का रुख किया और धर्मेंद्र के साथ फिल्म जीवन मृत्यु में नजर आईं।

ज्वेल थीफ का पहला गाना जादू जारी, रोमांस करते नजर आए सैफ अली खान

सैफ अली खान जल्द ही ज्वेल थीफ फिल्म से नेटफ्लिक्स पर लौट रहे हैं। इस बार वह इस फिल्म में एक लुटेरा बन कर आ रहे हैं। ज्वेल थीफ का निर्देशन कूकी गुलाटी और रॉबी ग्रेवाल ने किया है। फैंस इस फिल्म की रिलीज का बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं। फिल्म का पहला लुक फरवरी में जारी किया गया था। नेटफ्लिक्स ने समय-समय पर फिल्म के बारे में अपडेट दी हैं, ताकि इस पर चर्चा होती रहे। अब फिल्म निर्माताओं ने फिल्म का नया गाना जारी किया है।

फिल्म निर्माताओं ने फिल्म के गाने के रिलीज के बारे में कल ही बताया था। इसके बाद आज ज्वेल थीफ का गाना जादू रिलीज हुआ है। गाने को यूट्यूब पर देखा जा सकता है। गाने में सैफ अली खान, जयदीप अहलावत, कुणाल कपूर और निकिता दत्ता हैं। इस गाने को राघव चैतन्य ने आवाज दी है। इसे गीतकार कुमार ने लिखा है।गाने में देखा जा सकता है कि सैफ अली खान एक शाही कुर्सी पर बैठे हैं। उनके इशारे पर एक दरवाजा खुलता है और लड़की नाचने लगती है। इसके बाद सैफ अली खान निकिता दत्ता के साथ रोमांस करते हैं। एक दूसरे सीन में जयदीप अहलावत लाल हीरे के साथ नजर आते हैं।

देश में अशिक्षा है सबसे बड़ा सामाजिक मुद्दा : संजना सांघी

संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (यूएनडीपी) की यूथ चैंपियन अभिनेत्री संजना सांघी ने संयुक्त राष्ट्र महासभा को संबोधित करते हुए शिक्षा के महत्व को रेखांकित किया। अभिनेत्री का मानना है कि अशिक्षा ही हमारे देश में सबसे बड़ा सामाजिक मुद्दा है।

उन्होंने अपने अंतरराष्ट्रीय काम के अनुभव पर भी बात की। संजना ने बताया कि उन्हें किस बात ने प्रेरित किया। सांघी ने कहा, मुझे याद है कि मैंने एम्मा वाटसन को यूएन में बोलते हुए देखा था और मेरे पर वहीं से प्रभाव पड़ा। बच्चों को पढ़ाने से मुझे उनसे जुड़ाव का एहसास हुआ। आखिरकार, मैंने वॉलंटियर्स को सलाह देना शुरू कर दिया और उस पहल को आगे बढ़ाया। मेरा सपना एक ऐसे संगठन के निर्माण करने का है, जहां हमारे देश में कोई भी अशिक्षित न हो, मुझे लगता है कि शिक्षा की कमी हमारे देश में सबसे बड़ा सामाजिक मुद्दा है।

सांघी का मानना है कि शिक्षा से जेंडर और वेतन असमानता तथा स्वास्थ्य जागरूकता की कमी जैसे कई मुद्दों का समाधान हो सकता है।संजना ने आगे कहा, शिक्षा की कमी हमारे सामने आने वाले बड़े मुद्दों की जड़ है। इसे हल करें और आप लिंग और वेतन असमानता, मासिक धर्म स्वास्थ्य जागरूकता, महिला अधिकार जैसे विषयों पर खुलकर बात कर सकेंगे। दुर्भाग्य से लॉकडाउन में अध्ययनों से पता चलता है कि 10 मिलियन लड़कियों को स्कूल छोड़ने और घर में रहने के लिए मजबूर किया गया। वहीं, लड़कों की संख्या एक मिलियन से कम थी।शुरुआती सफलता और चुनौतियों से निपटने के बारे में उन्होंने बताया, ओम का बॉक्स ऑफिस पर सकारात्मक प्रदर्शन न करने से मुझे एहसास हुआ कि प्रक्रिया ही पुरस्कार है।उन्होंने आगे बताया, मुझे याद है कि मैंने शुक्रवार को रिलीज के जश्न के लिए अपने सभी दोस्तों को बुलाया था, क्योंकि यह एक ऐसी यात्रा थी, जिसका मैंने बहुत आनंद लिया और यह मेरे लिए एक अनुभव के रूप में एक मजेदार यात्रा थी।

केसरी 2 से अक्षय कुमार का नया लुक आया सामने, पहले नहीं देखा होगा ऐसा अवतार

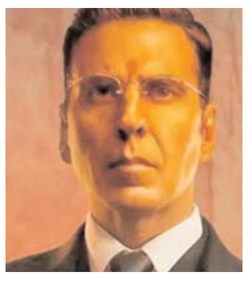

अभिनेता अक्षय कुमार जल्द ही फिल्म केसरी: चैप्टर 2 में नजर आएंगे। यह फिल्म इस साल की बहुचर्चित फिल्मों में से एक है। इस फिल्म की कहानी जलियांवाला बाग हत्याकांड पर आधारित है। अक्षय फिल्म में वरिष्ठ वकील सी शंकरन नायक की भूमिका निभा रहे हैं।अब केसरी: चैप्टर 2 से अक्षय का नया लुक सामने आ गया है, जिसे प्रशंसक खूब पसंद कर रहे हैं। अभिनेता का ऐसा अवतार आपने पहले कभी नहीं देखा होगा। अक्षय ने लिखा, यह कोई पोशाक नहीं है। यह प्रतीक है- परंपरा का, प्रतिरोध का, सत्य का, मेरे राष्ट्र का। सी शंकरन नायर ने हथियार से लड़ाई नहीं की। उन्होंने ब्रिटिश साम्राज्य से कानून से लड़ाई लड़ी। हम आपके लिए वह अदालती मुकदमा लेकर आ रहे हैं, जो आपने कभी पाठ्यपुस्तकों में नहीं पढ़ा। केसरी 2 को 18 अप्रैल, 2025 को सिनेमाघरों में रिलीज किया जाएगा।

रजनीकांत की पैन-इंडिया एक्शन फिल्म कुली की रिलीज डेट तय, निर्माताओं ने पोस्टर जारी कर शेयर की जानकारी

रजीकांत इन दिनों अपनी आगामी फिल्म कुली को लेकर लगातार सुर्खियों में बने हुए हैं। रजनीकांत के फैंस को उनकी फिल्म कुली की रिलीज का बेसब्री से इंतजार है। आज निर्देशक लोकेश कनगराज ने सोशल मीडिया पर फिल्म कुली की रिलीज की आधिकारिक घोषणा कर फैंस को खुश कर दिया है।फिल्म कुली का निर्देशन लोकेश कनगराज ने किया है। लोकेश कनगराज ने अपने इंस्टाग्राम पर रजनीकांत का ब्लैक एंड व्हाइट पोस्टर में एक पोस्टर शेयर किया है, जिसमें रजनीकांत सीटी बजाते दिख रहे हैं। और साथ ही कैप्शन में लिखा, देवा आ रहा है, कुली 14 अगस्त से दुनिया भर में। एक्शन ड्रामा फिल्म कुली के निर्माताओं ने रिलीज की तारीख बताकर फैंस को खुश कर दिया है। यह फिल्म लोकेश कनगराज के निर्देशन में बनी है। कुली 14 अगस्त को स्वतंत्रता दिवस के मौके पर दुनिया भर के सिनेमाघरों में रिलीज होगी। सन पिक्चर्स ने अपने आधिकारिक एक्स हैंडल पर भी इसकी रिलीज की जानकारी दी है।

गर्मियों के दौरान पपीता खरीदते समय इन 5 बातों का रखें ध्यान, होगा सही चयन

गर्मियों के दौरान पपीते का सेवन करना फायदेमंद होता है क्योंकि यह एक समर सुपरफूड है। इसमें विटामिन-ए, विटामिन-सी, पोटेशियम, फोलेट, मैग्नीशियम, फाइबर और एंटी-ऑक्सीडेंट्स जैसे कई जरूरी तत्व होते हैं। ये तत्व शरीर को हाइड्रेट रखने और पाचन को सही रखने में मदद करते हैं। इसके लिए सही पपीता चुनना जरूरी है ताकि आप इसके फायदों का पूरा लाभ उठा सकें।

आइए पपीता खरीदने के सही तरीके जानते हैं।

पपीते की त्वचा पर दें ध्यान

पपीते की त्वचा पर ध्यान देना जरूरी है क्योंकि इससे आपको पपीते के स्वाद का अंदाजा हो सकता है।

अगर पपीते की त्वचा पर हरे रंग की छाया होती है तो समझ जाइए कि यह कच्चा है और इसे खाने से मीठा नहीं लगेगा।दूसरी ओर अगर पपीते की त्वचा पर पीले रंग की छाया होती है तो इसका मतलब है कि यह पक गया है और यह खाने में मीठा और नरम होगा।

आकार पर न दें ध्यान

अगर आप आकार के आधार पर पपीते को चुनते हैं तो यह सही नहीं है।दरअसल, कई लोग बड़े आकार के पपीते को चुनते हैं क्योंकि उनका मानना है कि ऐसे पपीते में अधिक मात्रा में पोषक तत्व होते हैं, जबकि ऐसा कुछ नहीं है।आकार से ज्यादा पपीते की गुणवत्ता मायने रखती है। ऐसे में बेहतर होगा कि आप आकार की बजाय पपीते की गुणवत्ता पर ध्यान दें और उसे ही खरीदें।

सुगंध का करें पता

पपीते की सुगंध से भी इसकी पक्की जानकारी मिल सकती है।अगर पपीते से मीठी और सुगंधित सुगंध आ रही है तो समझ जाइए कि यह पका हुआ है और इसे खरीद लेना चाहिए।दूसरी ओर अगर पपीते से कोई सुगंध नहीं आ रही है तो इसका मतलब है कि यह कच्चा है और इसे खरीदने से बचना चाहिए। ऐसे पके पपीते खाने में मीठा और नरम होता है, जबकि कच्चे पपीते का स्वाद खट्टा होता है।

दाग-धब्बों पर दें ध्यान

पपीते पर दाग-धब्बे होने से भी इसके स्वाद पर असर पड़ सकता है।अगर पपीते पर हल्के दाग-धब्बे हैं तो उसे खाया जा सकता है, लेकिन अगर दाग-धब्बे गहरे और काले रंग के हैं तो ऐसे पपीते को खरीदने से बचना चाहिए क्योंकि इसका स्वाद कड़वा हो सकता है।इसलिए जब भी आप बाजार से पपीता खरीदने जाएं तो इस बात का खास ख्याल रखें।

बीजों पर दें ध्यान

पपीते के बीज भी आपको इसके स्वाद के बारे में बता सकते हैं।अगर पपीते के बीज सफेद होते हैं तो इसका मतलब है कि यह पक गया है और इसे खरीद लेना चाहिए।दूसरी ओर अगर पपीते के बीज काले होते हैं तो समझ जाइए कि यह कच्चा है और इसे खरीदने से बचें। इस तरह से आप सही पपीते का चयन करके अपने परिवार को स्वादिष्ट और पौष्टिक पपीते का आनंद दे सकते हैं।

अपने नाखूनों को स्वस्थ और सुंदर बनाना चाहते हैं? आजमाएं ये 5 घरेलू नुस्खे

नाखूनों की देखभाल करना उतना ही जरूरी है, जितना कि चेहरे और बालों की। सुंदर और स्वस्थ नाखून आपके व्यक्तित्व को निखारते हैं।

इस लेख में हम आपको कुछ आसान और प्रभावी घरेलू नुस्खे बताएंगे, जिनसे आपके नाखून मजबूत, चमकदार और आकर्षक बन सकते हैं। इन उपायों को अपनाकर आप अपने नाखूनों की प्राकृतिक सुंदरता को बढ़ा सकते हैं और उन्हें टूटने-छिलने से बचा सकते हैं।

आइए जानते हैं कैसे।

जैतून के तेल का करें उपयोग

जैतून का तेल नाखूनों को पोषण देता है और उन्हें मजबूत बनाता है।

रोजाना सोने से पहले अपने नाखूनों पर जैतून का तेल लगाएं और हल्के हाथों से मालिश करें। इससे आपके नाखून नमी बनाए रखते हैं और टूटने-छिलने की संभावना कम हो जाती है।इसके अलावा यह नाखूनों को चमकदार भी बनाता है। जैतून के तेल में मौजूद विटामिन और फैटी एसिड नाखूनों को मजबूत करने में मदद करते हैं।

लहसुन का करें इस्तेमाल

लहसुन का इस्तेमाल नाखूनों की मजबूती बढ़ाने के लिए किया जा सकता है। लहसुन में सल्फर जैसे तत्व होते हैं, जो नाखूनों को मजबूत बनाते हैं।

लाभ के लिए एक-दो कली लहसुन को पीसकर उसमें थोड़ा जैतून का तेल मिलाएं और इसे अपने नाखूनों पर लगाएं। 10-15 मिनट बाद हाथ धो लें। इससे आपके नाखून मजबूत होंगे और उनकी चमक भी बढ़ेगी।इस उपाय को नियमित रूप से अपनाने से आपके नाखूनों की सेहत में सुधार होगा।

नींबू का रस भी है फायदेमंद

नींबू का रस नाखूनों की सफेदी बढ़ाने और उन्हें चमकदार बनाने में मदद करता है।

एक कप गुनगुने पानी में नींबू के रस की कुछ बूंदें मिलाकर उसमें अपने हाथों को थोड़ी देर डुबोएं। इसके बाद अपने हाथों को साफ पानी से धो लें।नींबू में मौजूद विटामिन-सी आपके नाखूनों को पोषण देता है और उन्हें स्वस्थ बनाए रखता है।इस उपाय को हफ्ते में एक बार जरूर अपनाएं ताकि आपके नाखून हमेशा साफ-सुथरे और आकर्षक दिखें।

नारियल तेल से मिलेगी सुरक्षा

नारियल तेल आपके नाखूनों को टूटने-छिलने से बचाता है और उन्हें नमी प्रदान करता है।रोजाना नहाने के बाद अपने नाखूनों पर नारियल तेल लगाएं और हल्के हाथों से मालिश करें। इससे आपके नाखून मजबूत होंगे और उनकी प्राकृतिक नमी बनी रहेगी।

इसके अलावा नारियल तेल में मौजूद विटामिन और फैटी एसिड आपके नाखूनों को पोषण देते हैं।इस उपाय को नियमित रूप से अपनाने से आपके नाखून हमेशा स्वस्थ और आकर्षक दिखेंगे।

बायोटिन सप्लीमेंट्स लें

बायोटिन एक विटामिन है, जो आपके नाखूनों की सेहत के लिए बहुत जरूरी होता है।

अगर आपके खाने में बायोटिन की कमी होती है तो आपके नाखून कमजोर हो सकते हैं। इसलिए बायोटिन सप्लीमेंट्स लेना फायदेमंद हो सकता है। इन घरेलू उपायों को अपनाकर आप अपने नाखूनों को प्राकृतिक रूप से सुंदर बना सकते हैं। इनका नियमित उपयोग करने से आपके नाखून मजबूत, चमकदार और आकर्षक बनेंगे।

ओलंपिक खेलों में होगी क्रिकेट की वापसी, पुरुष और महिला दोनों इवेंट में 6-6 टीमें भाग लेंगी

नई दिल्ली,(आरएनएस)। भारतीय क्रिकेट टीम के लाखों-करोड़ों प्रशंसक 2028 लॉस एंजिल्स ओलंपिक खेलों का बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं. क्योंकि, अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक समिति (आईओसी) ने पुष्टि की है कि क्रिकेट 128 वर्षों में पहली बार ओलंपिक खेलों में वापसी करेगा. आगामी ओलंपिक में क्रिकेट की पुरुष और महिला स्पर्धा को लेकर अब एक बड़ा अपडेट सामने आया है।

खेलों के महाकुंभ ओलंपिक में क्रिकेट का खेल टी20 फॉर्मेट में खेला जाएगा, जो 2028 में लॉस एंजिल्स में होने वाला है. जब क्रिकेट 128 साल बाद 2028 में ओलंपिक खेलों में वापस आएगा, तो केवल 6 टीमें ही प्रतिष्ठित गोल्ड मेडल के लिए दावेदार होंगी. पिछली बार 1900 में पेरिस में एक मैच के रूप में ओलंपिक में खेला गया क्रिकेट, एलए 2028 खेलों से वापसी करेगा और चार साल बाद 2032 में ब्रिस्बेन में भी खेला जाएगा।

आयोजकों ने बुधवार को पुष्टि की कि एलए टूर्नामेंट टी20 फॉर्मेट में खेला जाएगा जिसमें पुरुष और महिला दोनों इवेंट में 6-6 टीमें भाग लेंगी. प्रत्येक स्पर्धा में कुल 90 खिलाड़ी भाग लेंगे. जिससे प्रत्येक टीम को 15 सदस्यीय टीम का नाम देने की अनुमति मिलेगी.क्रिकेट स्पर्धा के लिए 2028 खेलों में क्वालिफिकेशन कैसे मिलेगा. इसकी पुष्टि होना अभी बाकी है. अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट परिषद के अंतर्गत 12 फुल मेंबर नेशन हैं, जबकि 90 से अधिक देश एसोसिएट मेंबर के रूप में टी-20 क्रिकेट खेलते हैं।

'पूरी रात सो नहीं पाया', तीरंदाज रजत चौहान कंपाउंड आर्चरी के एलए 2028 ओलंपिक में शामिल होने से रोमांचित

नई दिल्ली ,(आरएनएस)। भारत के शीर्ष तीरंदाज रजत चौहान के लिए सपना हकीकत में बदल रहा है, क्योंकि कम्पाउंड तीरंदाजी 2028 लॉस एंजिल्स ओलंपिक खेलों में पदार्पण करने के लिए तैयार है। 2014 एशियाई खेलों के स्वर्ण पदक विजेता, जो हमेशा ओलंपिक पदक का सपना देखते थे, ने 2016 में अपने दाहिने हाथ पर प्रतिष्ठित पांच ओलंपिक छल्लों का टैटू भी बनवाया था। चौहान ने गुरुवार को कहा, यह पूरे भारत के लिए गर्व का क्षण है, क्योंकि कंपाउंड तीरंदाजी टीम को आखिरकार खुद को साबित करने का मौका मिला है। मैंने 2016 में ओलंपिक टैटू बनवाया था और अब मैं पूरी रात सो नहीं पाया हूं। मैं बहुत उत्साहित हूं। कम्पाउंड तीरंदाजों के लिए पहला ओलंपिक पदक 2028 ओलंपिक खेलों में प्रदान किया जाएगा, क्योंकि अंतर्राष्ट्रीय ओलंपिक समिति ने घोषणा की है कि कम्पाउंड मिश्रित टीम स्पर्धा को लॉस एंजिल्स में तीरंदाजी कार्यक्रम में शामिल किया जाएगा।तीरंदाजी में, कंपाउंड मिक्स्ड टीम का मुकाबला अब पांच और इवेंट्स के साथ जुड़ गया है - पुरुषों और महिलाओं की व्यक्तिगत स्पर्धा, पुरुषों और महिलाओं की टीम स्पर्धा, और मिक्स्ड टीम स्पर्धा। इसके जुड़ने से, अब तीरंदाजी में कुल छह पदक उपलब्ध होंगे। 1972 में तीरंदाजी को ओलंपिक खेलों में पुन: शामिल किये जाने के बाद यह पहली बार है कि प्रतियोगिता में एक नई धनुष-शैली को शामिल किया गया है। 1972 में रिकर्व पुरुष और महिला व्यक्तिगत स्पर्धाओं के साथ तीरंदाजी को ओलंपिक कार्यक्रम में फिर से शामिल किया गया। 1988 में टीम प्रतियोगिताओं को शामिल किया गया और पांचवां तीरंदाजी पदक रिकर्व मिश्रित टीम को शामिल करके टोक्यो 2020 में शुरू किया गया। मिश्रित टीम फॉर्मेट को मिलाकर, कंपाउंड तीरंदाजी में यह पक्का किया गया है कि लॉस एंजिल्स में भी पुरुष और महिला एथलीटों की संख्या बराबर बनी रहे।कंपाउंड एक नए तरह का धनुष है, जो अमेरिका में बना है। इसमें कैम और पुली का इस्तेमाल होता है जिससे तीर बहुत ताकत से दूर तक जाता है। 1995 में वर्ल्ड आर्चरी चैंपियनशिप में पहली बार दिखने के बाद से, इसे बेहतर बनाने के लिए बहुत काम किया गया है। यह धनुष शैली 2013 से विश्व खेलों में तथा हाल ही में अमेरिका, एशिया, यूरोप और प्रशांत क्षेत्र में आयोजित महाद्वीपीय बहु-खेल आयोजनों में शामिल रही है। राजस्थान में पुलिस उपाधीक्षक चौहान के नाम चैंपियनशिप में एक रजत पदक, एशियाई खेलों में स्वर्ण और रजत पदक, चार एशियाई चैंपियनशिप पदक (दो स्वर्ण और इतने ही रजत) दर्ज हैं।

गुजरात ने राजस्थान को चटाई धूल, साई सुदर्शन ने खेली अर्धशतकीय पारी

-प्रसिद्ध कृष्णा ने लिए 3 विकेट

अहमदाबाद, (आरएनएस)। आईपीएल 2025 के 23वें मैच में गुजरात टाइटन्स ने अहमदाबाद के नरेंद्र मोदी स्टेडियम में राजस्थान रॉयल्स के बीच को 58 रनों से हरा दिया है. इस जीत के साथ गुजरात की टीम ने प्वाइंट्स टेबल में शीर्ष पर कब्जा कर लिया है. जीटी 5 मैचों में 4 जीत और 1 हार के साथ 8 प्वाइंट्स लेकर नंबर 1 पर पहुंच गई है, जबकि आरआर 5 मैचों में 2 जीत और 2 हार के साथ 7वें स्थान पर पहुंच गई हैं.

इस मैच में राजस्थान रॉयल्स के कप्तान संजू सैमसन ने टॉस जीता और पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया. गुजरात की टीम ने पहले खेलते हुए 20 ओवर में 6 विकेट खोकर 217 रन बनाए. इस लक्ष्य का पीछा करते हुए राजस्थान की पूरी टीम 19.2 ओवर में 159 रन पर ऑल आउट हो गई और 58 रनों से मैच हार गई. यह गुजरात की लगातार चौथी जीत है.

राजस्थान रॉयल्स के गुजरात टाइटंस से जीत के लिए मिले 218 रनों के लक्ष्य का पीछा करते हुए शिमरोन हेटमायर ने सबसे ज्यादा रन बनाए. उन्होंने 32 बॉल में 4 चौके और 3 छक्के के साथ 52 रनों की पारी खेली. संजू सैमसन ने 28 बॉल में 4 चौके और 1 छक्के के साथ 41 रनों की पारी खेली. उनके अलावा रियान पराग ने 26 रनों का योगदान दिया, लेकिन अपनी टीम को जीत नहीं दिला पाए. गुजरात के लिए प्रसिद्ध कृष्णा ने सबसे ज्यादा 3 विकेट चटकाए. राशिद खान और साई किशोर ने 2 विकेट लिए. मोहम्मद सिराज, आवेश खान और कुलवंत खेजरोलिया ने 1-1 विकेट हासिल किया.

राजस्थान रॉयल्स की पूरी टीम पर लगा भारी जुर्माना

अहमदाबाद, (आरएनएस)। राजस्थान रॉयल्स के कप्तान संजू सैमसन पर बुधवार को अहमदाबाद के नरेंद्र मोदी स्टेडियम में गुजरात टाइटन्स के खिलाफ इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) के मैच में धीमी ओवर गति बनाए रखने के लिए 24 लाख रुपये का जुर्माना लगाया गया है.आईपीएल ने एक मीडिया बयान में कहा, राजस्थान रॉयल्स के कप्तान संजू सैमसन पर अहमदाबाद के नरेंद्र मोदी स्टेडियम में गुजरात टाइटन्स के खिलाफ इंडियन प्रीमियर लीग 2025 के मैच नंबर 23 के दौरान धीमी ओवर गति बनाए रखने के लिए जुर्माना लगाया गया है. इसमें कहा गया, चूंकि यह आईपीएल की आचार संहिता के अनुच्छेद 2.22 के तहत उनकी टीम का सीजन का दूसरा अपराध था, जो न्यूनतम ओवर-रेट अपराधों से संबंधित है, इसलिए सैमसन पर 24 लाख रुपये का जुर्माना लगाया गया. बयान में आगे कहा गया है, इम्पैक्ट प्लेयर सहित प्लेइंग इलेवन के बाकी सदस्यों पर 6 लाख रुपये या उनकी संबंधित मैच फीस का 25 प्रतिशत, जो भी कम हो, जुर्माना लगाया जाएगा.

महेंद्र सिंह धोनी फिर बने चेन्नई सुपरकिंग्स के कप्तान, इस वजह से ऋतुराज गायकवाड़ टूर्नामेंट से बाहर

नई दिल्ली(आरएनएस)। आईपीएल 2025 के बीच चेन्नई सुपरकिंग्स को बड़ा झटका लगा है। चेन्नई सुपर किंग्स के कप्तान ऋतुराज गायकवाड़ आईपीएल 2025 से बाहर हो गए हैं। गायकवाड़ कोहनी की चोट के कारण टूर्नामेंट से बाहर हुए हैं। उनकी जगह चेन्नई सुपर किंग्स की कप्तानी एमएस धोनी करते हुए नजर आएंगे।

फ्लेमिंग ने गुरुवार को मीडिया को बताया, ' 'ऋतुराज गायकवाड़ कोहनी के फ्रेक्चर के कारण आईपीएल से बाहर हैं। एम एस धोनी कप्तान होंगे।卐 गायकवाड़ को जोफ्रा आर्चर की गेंद पर चोट लगी थी। आईपीएल 2025 में चेन्नई सुपर किंग्स का प्रदर्शन बेहद खराब रहा है। टीम ने ऋतुराज की कप्तानी में सिर्फ एक मुकाबला जीता है। चेन्नई सुपर किंग्स ने आईपीएल 2025 में अपने पहले मुकाबले में मुंबई इंडियंस को हराया था लेकिन उसके बाद से टीम ने लगातार चार मुकाबले गंवाए हैं। चेन्नई सुपर किंग्स को रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु, राजस्थान रॉयल्स, दिल्ली कैपिटल्स और पंजाब किंग्स के खिलाफ हार का सामना करना पड़ा।चेन्नई सुपर किंग्स के कप्तान रुतुराज गायकवाड़ कोहनी के फ्रेक्चर के कारण इंडियन प्रीमियर लीग से बाहर हुए हैं। बतौर कप्तान ऋतुराज गायकवाड़ का प्रदर्शन ज्यादा अच्छा नहीं रहा है। पिछले सीजन भी उनकी कप्तानी में टीम पॉइंट्स टेबल में पांचवें स्थान पर रही थी और प्लेऑफ के लिए क्वालीफाई नहीं कर सकी। इस बार भी टीम पांच मैच खेलते हुए सिर्फ एक मुकाबला जीत सकी और पॉइंट्स टेबल में नौवें स्थान पर है।

सुदर्शन ऑरेंज कैप की दौड़ में दूसरे नंबर पर पहुंचे

अहमदाबाद (ए)। गुजरात की जीत में अहम भूमिका सलामी बल्लेबाज साई सुदर्शन एक बार फिर सबसे अधिक रनों के लिए मिलने वाली ऑरेंज कैप की दौड़ में आगे निकल आये हैं। सुदर्शन ने यहां राजस्थान रॉयल्स के खिलाफ हुए मैच में 53 गेंदों पर 8 चौकों और 3 छक्कों की मदद से 82 रनों की आक्रामक पारी खेलकर अपनी टीम की जीत में अहम भूमिका निभाई। इस के साथ ही गुजरात ने लगातार चौथी जीत दर्ज कर अंक तालिका में पहला स्थान हासिल किया है। सुदर्शन के इस मैच को मिलाकर अब पांच मैच में 54.60 के औसत से 273 रन बनाये हैं। इससे वह ऑरेंज कैप की दौड़ में भी लंबी छलांग लगाकर दूसरे नंबर पर पहुंच गये हैं। वहीं लखनऊ सुपर जाएंट्स के निकोलस पूरन पहले नंबर पर हैं। पुरन ने अब तक 5 मैचों में 288 रन बनाये हैं। तीसरे नंबर पर कोलकाता नाइट राइडर्स के मिशेल मार्श हैं, मार्श ने पांच मैच में 265 रन बनाये हैं।आईपीएल में सबसे ज्यादा विकेट के लिए मिलने वाली पर्पल कैप की दौड़ में नूर अहमद पांच मैच में 11 विकेट लेकर पहले जबकि साई किशोर पांच मैचों में 10 विकेट लेकर दूसरे व मोहम्मद सिराज भी पांच मैचों में 10 विकेट लेकर तीसरे नंबर पर हैं। वहीं इस मैच के बाद गुजरात के प्रसिद्ध कृष्णा के अब पांच मैचों 8 विकेट हो गये हैं और वह आठवें नंबर पर हैं।

विदेश समाचार

चीन ने अमेरिका पर टैरिफ बढ़ाकर 84प्रतिशत किया, इस दिन से लागू हो जाएंगी नई दरें

बीजिंग(आरएनएस)। चीन और अमेरिका के बीच में जारी टैरिफ वार को लेकर बड़ा अपडेट सामने आया है। अब चीन ने अमेरिका के साथ जारी व्यापार युद्ध के बीच सीमा शुल्क को 34 प्रतिशत से बढ़ाकर 84त्न करने की घोषणा की। जानकारी के अनुसार, नई टैरिफ दरें 10 अप्रैल से लागू हो जाएंगी।

पिछले हफ्ते ही चीन ने कहा था कि वह सभी अमेरिका के सामान पर 34त्न टैरिफ लगाएगा। लेकिन अब उसने अमेरिकी टैरिफ में बुधवार को हुए और भी ज्यादा इजाफे के बाद यह फैसला लिया है। अमेरिका ने चीन के सामान पर 104 प्रतिशत शुल्क के लागू करना का फैसला लिया है। व्हाइट हाउस ने कहा है कि चीन पर 104 प्रतिशत प्रशुल्क की व्यवस्था मंगलवार आधी रात के बाद प्रभावी हो जाएगी। व्हाइट हाउस की एक प्रवक्ता ने कहा कि राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने अमेरिका के श्रमिकों और उद्योगों की रक्षा के लिए जो उपाए किए है उसका दुनिया में असर दिख रहा है और करीब 70 देश अमेरिका के साथ व्यापार समझौते पर बातचीत करने को तैयार हो चुके है।महिला प्रवक्ता ने कहा कि दुनियाभर के देशों ने लंबे समय तक अमेरिका के श्रमिकों का हक लूटा जिसे जारी रखने की अनुमति नहीं दी जाएगी। प्रवक्ता ने इजरायल के प्रधानमंत्री बैंजामिन नेतन्याहू और श्री ट्रम्प की कल यहां हुई बैठक का उल्लेख करते हुए कहा कि इजरायल अमेरिका के खिलाफ आयात शुल्क खत्म कर अमेरिका के व्यापार घाटे को कम करने में सहयोग करने के लिए तैयार हो गया है।

रूस के खिलाफ NATO लेने जा रहा बड़ा एक्शन, मुख्यालय में बुलाई गई 30 देशों के रक्षा मंत्रियों की बड़ी बैठक

ब्रसेल्स(आरएनएस) नाटो रूस के खिलाफ बड़ी रणनीति तैयार करने का संकेत दिया है। इस बाद नाटो ने अपने मुख्यालय में 30 देशों के रक्षामंत्रियों की बड़ी बैठक बुलाई है। इसकी अगुवाई ब्रिटेन और फ्रांस कर रहे हैं, जिन्होंने बृहस्पतिवार को लगभग 30 देशों के रक्षा मंत्रियों की एक बैठक बुलाई है। यूक्रेन पर 3 साल से जारी युद्ध में लगातार हावी हो रहे रूस के खिलाफ अब नाटो ने बड़ा ऐक्शन प्लान तैयार किया है।जानकारी के अनुसार नाटो का कहना है कि बैठक का उद्देश्य रूस के साथ किसी भी भावी शांति समझौते की निगरानी के लिए, यूक्रेन में सेना तैनात करने की योजना पर चर्चा करना है। उत्तर अटलांटिक संधि संगठन (नाटो) मुख्यालय में होने वाली यह बैठक तथाकथित गठबंधन में शामिल देशों के रक्षा मंत्रियों की पहली बैठक होगी। पिछले सप्ताह वरिष्ठ ब्रिटिश और फ्रांसीसी सैन्य अधिकारियों ने कीव की यात्रा की थी, जिसके बाद यह बैठक बुलाई गई है। उम्मीद है कि इसमें नेताओं के बीच पहले हुई बैठक में हुए समझौते को मूर्त रूप देने पर काम किया जाएगा। अमेरिका इस बैठक में भाग नहीं लेगा।

तेहरान ने अगर नहीं छोड़ा परमाणु हथियार कार्यक्रम तो ईरान पर हमले का 'नेता' होगा इजरायल : ट्रंप

वाशिंगटन (आरएनएस) राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने बुधवार को कहा कि यदि तेहरान अपने परमाणु हथियार कार्यक्रम को नहीं छोड़ता है तो इजरायल ईरान के खिलाफ संभावित सैन्य हमले का नेता होगा। ध्यान देने वाली बात यह है कि ट्रंप ने यह बयान इस सप्ताहांत मध्य पूर्व के ओमान सल्तनत में अमेरिकी और ईरानी अधिकारियों के बीच होने वाली वार्ता से पहले दिया है।ट्रंप ने इस सप्ताह की शुरुआत में कहा था कि वार्ता प्रत्यक्ष होगी, जबकि ईरान ने इस बातचीत को अमेरिका के साथ अप्रत्यक्ष वार्ता बताया। ट्रंप ने कहा, अगर इसके लिए सेना की जरुरत होगी, तो हम सेना का इस्तेमाल करेंगे। इसमें इजरायल की भूमिका स्पष्ट रूप से बहुत बड़ी होगी। वह इसका नेतृत्व करेगा।

यमन की राजधानी पर रातभर अमेरिकी हवाई हमले, तीन की मौत

सना (आरएनएस) यमन की राजधानी सना पर ताजा अमेरिकी हवाई हमलों में मरने वालों की संख्या बढ़कर तीन हो गई है और कई अन्य घायल हो गए हैं। चिकित्सकों और स्वास्थ्य अधिकारियों ने सिन्हुआ को यह जानकारी दी।

बुधवार देर रात हवाई हमलों में अल-नहदयन क्षेत्र को निशाना बनाया गया, जो घनी आवासीय बस्तियों से घिरा हुआ है।

छर्रे कई घरों पर गिरे और खिड़कियां टूट गईं, तीन लोगों की मौत हो गई। कई घायल नागरिकों को अस्पताल ले जाया गया।

यह उत्तरी यमन पर अमेरिकी हवाई हमलों की नवीनतम कड़ी है। अमेरिकी सेना ने 15 मार्च को हूती ग्रुप पर हवाई हमले फिर से शुरू कर दिए थे। इन हमलों का मकसद ग्रुप को उत्तरी लाल सागर में इजरायल और अमेरिकी युद्धपोतों को निशाना बनाने से रोकना है।

बुधवार देर रात हवाई हमलों में अन्य उत्तरी क्षेत्रों को भी निशाना बनाया गया, जिनमें लाल सागर के बंदरगाह शहर होदेदाह और कामरान द्वीप भी शामिल हैं, जहां अभी तक किसी के हताहत होने की सूचना नहीं है।

समाचार एजेंसी सिन्हुआ के अनुसार, अमेरिकी सेना ने अभी तक इस पर कोई टिप्पणी नहीं की।इससे पहले 9 अप्रैल को यमन के हौथियों ने बताया कि उन्होंने एक और अमेरिकी एमक्यू-9 ड्रोन को मार गिराया है। समूह के प्रवक्ता याह्या सरिया ने अल-मसीरा टीवी पर प्रसारित एक बयान में कहा, हमारे हवाई रक्षा बलों ने स्थानीय रूप से निर्मित सतह से हवा में मार करने वाली मिसाइल का उपयोग करके अल-जौफ प्रांत के हवाई क्षेत्र में एक अमेरिकी एमक्यू-9 ड्रोन को मार गिराया।

शेयर बाजार में पैसा लगाने वालों को डोनाल्ड ट्रंप ने दी सलाह, पोस्ट करते हुई कही ये बात

न्यूयॉर्क,(आरएनएस)। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने बुधवार को एक अहम घोषणा करते हुए 90 दिनों के लिए दुनिया के अधिकांश देशों पर लगे आयात शुल्क (टैरिफ) को स्थगित करने का फैसला किया है। हालांकि, इस राहत में चीन को शामिल नहीं किया गया है। इसी बीच ग्लोबल मार्केट में भारी उथल-पुथल के बीच अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने सोशल मीडिया पर एक नया पोस्ट किया है। सोशल मीडिया पर अपने पोस्ट में राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने लिखा है, शेयर बाजार में खरीदारी के लिए यह बहुत बढ़िया समय है। बता दें कि ट्रंप टैरिफ के ऐलान से दुनियाभर के मार्केट में हलचल है और अमेरिकी मार्केट बीते चार दिनों में 6 ट्रिलियन डॉलर से अधिक गिर गया था। इससे S&P 500 को तगड़ा नुकसान झेलना पड़ा। इतना हीं नहीं ट्रंप टैरिफ से भारतीय शेयर बाजार भी बीते सोमवार को करीबन 4000 अंक तक गिर गया था। बता दें कि वैश्विक बाजार में मंदी की आशंका के बीच बुधवार को अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने ज्यादातर देशों पर लगाए गए शुल्क को अचानक 90 दिनों के लिए स्थगित करने का फैसला किया, हालांकि उन्होंने चीन से आयात पर शुल्क की दर बढ़ाकर 125 प्रतिशत कर दी है। ट्रंप ने कहा कि ये देश अधिक अनुकूल शर्तों पर बातचीत करने के लिए राजी हैं। इस खबर के बाद मिनटों में शेयर बाजार में उछाल आया। एसएंडपी 500 में 7त्न से अधिक की बढ़ोतरी हुई, इससे 3 ट्रिलियन डॉलर का मुनाफा हुआ। इसका असर भारतीय शेयर बाजार पर भी पड़ा और सेंसेक्स-निफ्टी में कुछ रिकवरी देखी गई। बावजूद भारत समेत दुनियाभर के निवेशकों में शेयर बाजार को लेकर एक डर का माहौल बना हुआ है।

ट्रंप का बड़ा फैसला : 90 दिनों के लिए अधिकांश देशों पर आयात शुल्क स्थगित, चीन को राहत नहीं

न्यूयॉर्क (आरएनएस) अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने बुधवार को एक अहम घोषणा करते हुए 90 दिनों के लिए दुनिया के अधिकांश देशों पर लगे आयात शुल्क (टैरिफ) को स्थगित करने का फैसला किया है। हालांकि, इस राहत में चीन को शामिल नहीं किया गया है। ट्रंप ने चीन पर तुरंत प्रभाव से टैरिफ को 104त्न से बढ़ाकर 125त्न कर दिया है।राष्ट्रपति ट्रंप ने बताया कि 75 से अधिक देशों ने अमेरिका के साथ व्यापारिक मुद्दों पर सहयोग किया और टकराव का रुख नहीं अपनाया, इसलिए उन्हें यह राहत दी गई है। इस अवधि में एक सीमित 'रेसिप्रोकल टैरिफ' लागू रहेगा, जिसकी दर 10त्न होगी। चीन को टैरिफ राहत से बाहर रखते हुए ट्रंप ने कहा, चीन ने विश्व बाजार का सम्मान नहीं किया, इसलिए सख्त कदम उठाने जरूरी हो गए। चीन समझदार है, वे सौदा करना चाहते हैं लेकिन उन्हें तरीका नहीं आता। ट्रंप पर हाल ही में रिपब्लिकन नेताओं और व्यापारिक संगठनों का दबाव था कि वह टैरिफ में राहत दें, जिससे वैश्विक मंदी और ट्रेड वॉर की आशंका को कम किया जा सके। बताया गया है कि अमेरिका के बॉन्ड मार्केट में गिरावट और वित्त मंत्रालय की चेतावनी के बाद यह फैसला लिया गया।

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू स्लोवाकिया की अपनी राजकीय यात्रा के दौरान ऐतिहासिक ब्रातिस्लावा कैसल में स्लोवाक राष्ट्रपति पीटर पेलेग्रिनी द्वारा उनके सम्मान में आयोजित भोज को संबोधित करती हुई।

कलेक्टर ने की राशन हितग्राहियों से ईकेवाईसी कराने की अपील

राशन हितग्राहियों की विशेष अभियान चलाकर की जाएगी ईकेवाईसी

सीहोर(निप्र)। शासन द्वारा सभी राशन हितग्राहियों की ईकेवाईसी करने तथा दोहरे, अपात्र एवं साईलेन्ट राशनकार्डों का विलोपन करने के निर्देश दिए गए हैं। शासन के निर्देशानुसार कलेक्टर बालागुरू के ने संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए हैं, कि 30 अप्रैल तक जिले में विशेष अभियान चलाकर जिले के 10.28 लाख हितग्राहियों में से शेष रहे सभी 01.45 लाख हितग्राहियों कीईकेवाईसी कराई जाए। कलेक्टर बालागुरू के. ने निर्देश दिए हैं कि ईकेवाईसी के लिए शेष रहे हितग्राहियों की सूची पीओएस मशीन, स्थानीय निकाय, जेएसओ लॉगिन पर उपलब्ध है, जिसका प्रिंट निकालकर संबंधित अधिकारियों द्वारा ग्राम पंचायत, वार्ड कार्यालय, उचित मूल्य दुकान पर प्रदर्शित कराया जाए। उन्होंने निर्देश दिए हैं कि अभियान के अंतर्गत उचित मूल्य दुकान के विकेता, ग्राम पंचायत सचिव, रोजगार सहायक एवं वार्ड प्रभारी का दल गठित किया जाए तथा इस संबंध में दुकानवार आदेश जारी किया जाए। इसके साथ ही ईकेवाईसी के लिए दल द्वारा ग्रामवार एवं मोहल्लेवार कैंप लगाए जाएं। उन्होंने निर्देश दिए हैं कि पात्र हितग्राहियों के डाटाबेस में त्रुटिपूर्ण दर्ज अन्य व्यक्ति का आधार नंबर दर्ज होने पर सही आधार नंबर दर्ज कर पीओएस मशीन के माध्यम से सुधार किया जाए। कलेक्टर बालागुरू के. द्वारा जारी निर्देशानुसार इस अभियान की सतत मॉनिटरिंग के लिए अनुभागवार सभी एसडीएम को नोडल अधिकारी बनाया गया है। इसके साथ ही सभी नगर पालिका/परिषद सीएमओ एवं जनपद सीईओ को अभियान की प्रगति से नोडल अधिकारियों को अवगत कराने के निर्देश दिए गए हैं। कलेक्टर बालागुरू के. ने जिले के सभी हितग्राहियों से अपील की हैं कि वह अपनी ईकेवाईसी निर्धारित तिथि 30 अप्रेल से पहल कराएं, ताकि उन्हें खाद्य सुरक्षा अधिनियम के तहत राशन का लाभ आगे भी प्रदान किया जा सके।

जल गंगा संवर्धन अभियान के तहत जिले में संचालित की जा रही अनेक गतिविधियां

सीहोर(निप्र)। राज्य शासन के निर्देशानुसार प्रदेश के साथ ही सीहोर जिले मे 30 मार्च से 30 जून तक जल गंगा संवर्धन अभियान चलाया जा रहा है। इस अभियान के तहत जिले भर में जल संरक्षण से संबंधित अनेक गतिविधियां आयोजित की जा रही हैं। अभियान के तहत आमजन को जल संरक्षण के प्रति जागरूक करने के लिए दीवार लेखन, जागरूकता रैली, पोस्टर बैनर, ग्राम सभाएं, कलश यात्राएं सहित अनेकों गतिविधियां संचालित की जा रही हैं। अभियान के तहत जिले के अनेक ग्रामों में कूप मरम्मत, तालाब जीर्णोद्धार, डैम की साफ-सफाई सहित अनेक कार्य किए जा रहे हैं तथा नागरिकों को जल संरक्षण की शपथ भी दिलाई जा रही है। उल्लेखनीय है कि जल गंगा संवर्धन अभियान के अंतर्गत जिले में जल संरक्षण एवं संवर्धन से संबंधित खेत, तालाब, अमृत सरोवर, परकोलेशन टैंक, डगवेल, तालाब जीर्णोद्धार, जनभागीदारी के कार्य, कूप एवं बाउंड्री मरम्मत के कार्य किए जा रहे हैं।

कलचुरी समाज के कार्यकारी अध्यक्ष प्रदीप बिजोरिया के नेतृत्व मे किया वरिष्ठ समाजसेवी अखिलेश राय के जन्मदिन पर रक्तदान शिवर का आयोजन

सभी समाज के लोगों को करना चाहिए रक्तदान जिससे जरूरतमंद की जान बच सके : समाजसेवी अखिलेश राय

सीहोर(निप्र)। जिला चिकित्सालय के ब्लड बैंक में कलचुरी समाज के सीहोर के द्वारा रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया । जिसमें वरिष्ठ समाज सेवी अखिलेश राय ने रक्तदान करने वालों से भेंट की एवं समाज के सभी लोगों को रक्तदान करने की बात कही। इस वर्ष महिलाओं ने भी रक्त दान किया।समाजसेवी अखिलेश राय ने रानी राय और बालिका सृष्टि राय के रक्तदान करने पर भूरी भूरी प्रशंसा की और समाज की अन्य महिलाओं को सृष्टि राय से रक्तदान करने की प्रेरणा लेने की बात कहीं। सभी समाज के लोगों ने रक्त दान शिविर में बढ़ चढ़कर भाग लिया।इस अवसर पर प्रदीप बिजोरिया, परमानंद राय, निलेश राय ,हीरालाल जायसवाल डॉ.विजेंद्र जायसवाल, कृष्णा,,अभिषेक जायसवाल,रानी राय,सूरज राय, धर्मेंद्र राय, प्रेम राय,राहुल जाट,राजेश जायसवाल, सचिन राय,भविष्य मालवीय, सृष्टि राय,दीपक राय, राहुल राय,मोर सिंह जायसवाल,रविन्द्र सेनी,नकुल राठौर,नितेश राय,सतीश कुमार,जितेंद्र कुमार, नवीन सोनी, संजय राठौर ,चेतना शर्मा आदि मुख्य रूप से रहे।

नलजल योजनाओं के काम गुणवत्तापूर्ण तथा समय पर करें : कलेक्टर

सीहोर(निप्र)। कलेक्टरबालागुरू के. द्वारा जिले में चल रहे नलजल योजना के कार्यों समीक्षा तथा नगरीय एवं ग्रामीण क्षेत्रों में ग्रीष्मकाल के दौरान पेयजल उपलब्धता सुनिश्चित करने के उद्देश्य से कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में बैठक आयोजित की गई। बैठक में कलेक्टर बालागुरू के. तथा जिला पंचायत सीइओ डॉ नेहा जैन ने जिले में चल रहे नल जल योजना एवं जल जीवन मिशन के कार्यों की विस्तार से समीक्षा की। बैठक के दौरान कलेक्टर बालागुरू के. ने संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए कि जल जीवन मिशन के तहत वर्तमान में चल कार्यों को गुणवत्तापूर्ण ढ़ग से समय सीमा में पूर्ण कराना सुनिश्चित करें तथा जो कार्य पूर्ण हो गए हैं उन्हें पंचायतों को सौंपा जाए, ताकि उन्हें प्रारंभ कराया जा सके। उन्होंने कहा कि निर्माण एवं विकास कार्यों के दौरान यदि सड़कें एवं पाइपलाइनें क्षतिग्रस्त होती हैं तो विभाग के ठेकेदारों द्वारा उसकी तत्काल मरम्मत कराई जाए, ताकि आमजन को परेशानी न हो। उन्होंने निर्देश दिए कि संबंधित अधिकारी पेयजल सप्लाई संबंधी कार्यों की नियमित मॉनिटरिंग करें।

वैशाख महापर्व के दिव्य अनुष्ठान का शुभारंभ होगा

सीहोर(निप्र)। शिव प्रदोष सेवा समिति के तत्वाधान में एक माह तक आयोजित होने वाले शिव शक्ति दिव्य अनुष्ठान वैशाख महापर्व का शुभारंभ के लिए ध्वजारोहण दोपहर साढ़े बारह बजे शहर के गोपालधाम हनुमान मंदिर गंगा आश्रम में किया जाएगा। इस मौके पर एक दर्जन से अधिक कन्याओं के द्वारा पूर्ण विधि-विधान से ध्वजारोहण किया जाएगा।इस संबंध में जानकारी देते हुए शिव प्रदोष सेवा समिति के पंडित कुणाल व्यास ने बताया कि आागमी 12 अप्रैल से 13 मई निरंतर वैशाख महापर्व का आयोजन समिति के द्वारा किया जा रहा है। इसकी शुरूआत के लिए शुक्रवार को दोपहर साढ़े बारह बजे दिव्य अनुष्ठान का ध्वजारोहण किया जाएगा। उन्होंने बताया कि सीवन नदी के तट पर नूतन हिन्दू नव वर्ष के प्रथम चैत्र मास की चैत्र सुदी पूर्णिमा से वैशाख सुदी पूर्णिमा तक विशेष शिव-शक्ति छिवय अनुष्ठान शास्त्र अनुसार किया जाएगा।

12 अप्रैल का कथा के उपरांत किया जाएगा भव्य भंडारे का आयोजन

भगवान पर अटूट विश्वास होना चाहिए, यदि अटूट विश्वास है तो भगवान हर स्थिति में अपने भक्तों की रक्षा करते-संत गुलाबदास महाराज

सीहोर(निप्र)। जिला मुख्यालय के समीपस्थ तकीपुर-महुआखेड़ी में 108 पंडित दुर्गा प्रसाद कटारे और संत शिरोमणी गोपाल महाराज आदि के मार्गदर्शन में पांच दिवसीय भीलटदेव बाबा की कथा का आयोजन किया जा रहा है। कथा के तीसरे दिन संत गुलाब दास महाराज ने कहाकि भगवान पर अटूट विश्वास होना चाहिए, यदि अटूट विश्वास है तो भगवान हर स्थिति में अपने भक्तों की रक्षा करते हैं।

इस संबंध में जानकारी देते हुए सुरेश परमार गब्बर और मुकेश परमार आदिन ने बताया कि ग्राम में पांच दिवसीय कथा का आयोजन किया जा रहा है। इसका विश्राम 12 अप्रैल विशाल भंडारे का आयोजन भी किया जाएगा। कथा के दौरान जिला संस्कार मंच की ओर से जिला संयोजक मनोज दीक्षित मामा, शिव प्रदोष सेवा समिति के पंडित कुणाल व्यास और धर्मेन्द्र माहेश्वरी आदि ने संत महाराज का स्वागत किया।

संत गुलाबदास महाराज ने कहाकि पेड़, पौधे, नदियां, पहाड़, हवा, पानी जब किसी इंसान से भेदभाव नहीं करते हैं तो खुद को सभ्य और आधुनिक कहने वाला इंसान क्यों पंच तत्वों से बने इंसान से ही भेदभाव करता है। मौका पाकर उससे छल-कपट करता है। उसे प्रकृति से सीखना चाहिए। उन्होंने कहा नदियां अपना पानी नहीं पीतीं। पेड़ अपने फल नहीं खाते। वे पत्थर मारने

वालों को भी फल ही देते हैं। जबकि भगवान ने हर इंसान को समझ, विवेक व ज्ञान दिया है। वह अच्छे, बुरे को समझ सकता है। उनके अंतर को जानकर बुराई को त्याग सकता है, फिर भी वह ऐसा नहीं करता है। आखिर मानव की यह प्रवृत्ति उसे कहां ले जाएगी। उन्होंने कहा आपस में ही घमंड, भेदभाव करने और ऐसी नकारात्मक सोच रखने से समाज सभ्य कैसे बनेगा। उन्होंने शास्त्रों व संतों का जिक्र करते हुए कहा वे ईश्वर हर स्थान पर व्याप्त है। किसी धर्मग्रंथ में भेद नहीं करते। आखिर में सारे रास्तों से होकर इंसान ईश्वर के पास ही पहुंचता है। इसी प्रकार हर इंसान एक जैसे पंच तत्वों से बना है। उसे यह हमेशा याद रखते हुए शोषितों व जरूरतमंदों की हरसंभव मदद करना चाहिए। यही प्रभु की सेवा है। उसे पाने का रास्ता है।

हनुमान प्रकट उत्सव पर कल निकलेगा चल समारोह, आज अखंड रामायण की होगी शुरुआत

सीहोर(निप्र)। प्रति वर्ष अनुसार इस वर्ष भी मंडी क्षेत्र में हनुमान प्रकटोत्सव पर विशाल चल समारोह मंडी क्षेत्र के विभिन्न मार्गों से शनिवार को निकलेगा। हनुमान जन्मोत्सव के अवसर पर शुक्रवार को संजय नगर स्थित माता मंदिर पर दुर्गा मानस मंडल के सदस्यों द्वारा सुबह 10 बजे अखंड रामायण पाठ का शुभारंभ किया जाएगा।शनिवार को रामायण पाठ के समापन के बाद चल समारोह की शुरुआत होगी। हनुमान जयंती चल समारोह अध्यक्ष चेतन वास्तवार ने बताया कि लगातार 19 वर्ष से हनुमान जयंती चल समारोह का आयोजन हनुमान जन्मोत्सव समिति द्वारा किया जाता है। इस वर्ष भी 12 अप्रैल शनिवार को विशाल चल समारोह संजय नगर स्थित माता मंदिर से शाम पांच बजे निकाला जाएगा। जो मंडी क्षेत्र के राम मंदिर, माता मंदिर, मंडी चौराहा, बड़ा मंदिर चौराहा, रेस्ट हाउस होते हुए इंदिरा कॉलोनी, नरसिंहगढ़ नाका, पीठा क्षेत्र, पोस्ट ऑफिस रोड, जनता कॉलोनी से होते हुए एमपीइबी रोड स्थित श्री राम मंदिर पहुंचेगा। जहां पर आरती के बाद चल समारोह का समापन किया जाएगा। दुर्गा मानस मंडल और हनुमान जन्मोत्सव समिति ने सभी धर्म प्रेमियों से आयोजन में उपस्थित होने की अपील की है।

प्रकट हनुमान मंदिर समिति के तत्वाधान में कल भव्य भंडारे का आयोजन

सीहोर(निप्र)। हर साल की तरह इस साल भी छावनी युवा शक्ति संगठन के तत्वाधान में शहर के प्रकट हनुमान मंदिर समिति बड़ा बाजार में 12 अप्रैल को भव्य भंडारे का आयोजन किया जाएगा।

छावनी युवा शक्ति संगठन के पदाधिकारियों ने बताया कि आगामी 12 अप्रैल को हनुमान जन्मोत्सव के पावन अवसर पर शाम को आरती की जाएगी और उसके पश्चात रात्रि सात बजे विशाल भंडारे का आयोजन किया जाएगा। समिति ने सभी क्षेत्रवासियों और श्रद्धालुओं से भंडारे में आने की अपील की है।

राजेश मालवीय बने युवा विंग के प्रदेश अध्यक्ष

सीहोर(निप्र)। अखिल भारतीय मालवीय बलाई समाज संघ मध्य प्रदेश के प्रांतीय अध्यक्ष अनारसिंह मालवीय के द्वारा प्रांतीय संयोजक बाबूलाल मालवीय की अनुसंशा पर राजेश मालवीय को युवा विंग का प्रदेश अध्यक्ष नियुक्त किया गया। इस अवसर पर समाज के लोगों ने श्री मालवीय को बधाई एवं शुभकामनाऐं प्रेषित की है। बधाई देने वालों में प्रमुख रूप से बाबूलाल मालवीय प्रदेश संयोजक, मदन लाल मालवीय संरक्षक, कमल मालवीय कवि, मुन्ना लाल मालवीय, सत्यनारायण मालवीय,मनोहर सिंह मालवीय प्रांतीय सचिव, अमर सिंह मालवीय ग्रामीण जिला अध्यक्ष सीहोर, रामस्वरूप नेताजी जिलाध्यक्ष सीहोर, हरिचरण मालवीय सेक्रेटरी, राम सिंह मालवीय, अनोखी लाल मालवीय, देव सिंह मालवीय, देवकरण मालवीय, सुनील मालवीय ,दीपक भाई, मांगीलाल मालवीय मंडी, जोरावर सिंह मालवीय, जगदीश मालवीय बालापुरा, दशरथ मालवीय मुंगावली, जगदीश सोलंकी मुंगावली, देव सिंह मालवीय रानी मोहल्ला सीहोर, ओमप्रकाश जी परिहार,गुरुचरण मालवीय, हेमराज मालवीय, हरिचरण मालवीय आदि शामिल हैं।

ग्रामीणों को दिलाई पानी बचाने की शपथ ट्रैक्टर ट्राली से निकाला कुएं का मलवा

तालाब में ग्रामीणों ने किया श्रमदान निकाली मिट्टी

सीहोर(निप्र)। कराडिया भील ग्राम पंचायत में जल गंगा संवर्धन अभियान के अंतर्गत ग्रामीणों के सहयोग से कार्यक्रम आयोजित किया गया। राज्य शासन के द्वारा जल संरक्षण को लेकर शुरू किए गए जल गंगा संवर्धन अभियान के तहत पोखर निर्माण कुआं गहरीकरण साफ सफाई कार्य संपन्न कराया गया। ग्राम पंचायत के सक्रिय सरपंच संजय मीणा सचिव भारत वर्मा और रोजगार सहायक चेतन सिलावट सोशल आडिट सद्दाम खान के द्वारा ग्रामीण जनों को पानी बचाने की शपथ दिलाई गई। अभियान के दौरान जल संरक्षण के लिए पोखर निर्माण और गहरीकरण किया गया इस कार्य में ग्रामीण और जनप्रतिनिधियों प्रशासनिक कर्मचारियो के द्वारा श्रमदान किया गया। सरपंच सचिव जीआरएस एवं बीएसए द्वारा पानी की बचत और संग्रहण से होने वाले लाभों को बताया गया। श्रमदान मैं ग्रामीणों के द्वारा बाढ़ चलकर किस्सा लिया गया। जल गंगा संवर्धन अभियान में ग्राम कोटवार राजमल चौकीदार सहित ग्रामीणजनों की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

चर्च मैदान पर प्रशिक्षण शिविर का शुभारंभ, पहले दिन आए 100 से अधिक बच्चे

सीहोर(निप्र)। हर साल की तरह शहर की प्रतिभाओं को मंच देने के लिए चर्च मैदान पर जिला फुटबाल एसोसिएशन के तत्वाधान में 85 दिवसीय ग्रीष्मकालीन निशुल्क फुटबाल शिविर का आयोजन किया जा रहा है। जिसकी शुरूआत गुरुवार को फुटबाल एसोसिएशन के सचिव मनोज कन्नोजिया ने की। पहले ही दिन फुटबाल का खुमार मैदान पर दिखाई दिया और प्रशिक्षण में शामिल होने के लिए करीब 100 से अधिक बालक-बालिकाएं शामिल हुई।

जिला फुटबाल एसोसिएशन के मीडिया प्रभारी प्रियांशु दीक्षित ने बताया कि गुरुवार को शुभारंभ अवसर पर अंडर-10 के 35 बच्चे, अंडर-15 से लेकर अंडर-18 के करीब 70 बच्चे शामिल थे। जिन्हें कोच विपिन पवार, मनोह अहिरवार, ज्योति गौर, मधु रघाव और विशाल साइमंड आदि ने प्रशिक्षण प्रदान किया। यहां पर साल भर चर्च मैदान पर निशुल्क खेल की गतिविधियां संचालित होती है और सभी के सहयोग से यहां पर आने वाले खिलाड़ियों को निशुल्क रूप से खेल सामग्री का वितरण भी किया जा रहा है। नगर में आयोजित ग्रीष्मकालीन प्रशिक्षण शिविर में अपनी प्रतिभा दिखा रहे है। वहीं योग्य खेल प्रशिक्षकों द्वारा खिलाडियों को प्रशिक्षण प्रदान किया जा रहा है। अब नगर के सैकड़ों प्रशिक्षाणार्थी प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे है। प्रशिक्षकों द्वारा खिलाडियों को खेल के विभिन्न गुणों के विषय में विस्तृत रूप से अभ्यास भी कराया जा रहा है। एसोसिएशन के सचिव श्री कन्नोजिया ने प्रशिक्षण शिविर का प्रभारी आनंद उपाध्याय और मनोज दीक्षित मामा को बनाया है। आगामी दिनों में करीब 400 बच्चों को नेशनल फुटबाल प्रशिक्षक भी प्रशिक्षण देने के लिए समय-समय पर आऐंगे।

भाजपा जिलाध्यक्ष नरेश मेवाड़ा के मार्गदर्शन में कराया 13 लाख के विकास कार्य का भूमि पूजन

सीहोर (निप्र)। शहर को विकसित और व्यवस्थित विकास देने के लिए नगर पालिका परिषद सार्थक प्रयास कर रही है। जिससे शहर महानगर की तर्ज पर विकसित हो रहा है। उक्त विचार भाजपा जिलाध्यक्ष नरेश मेवाड़ा ने गुरुवार को शहर के वार्ड क्रमांक आठ में जारी करीब 13 लाख के विकास कार्य के विकास कार्य के भूमि पूजन के दौरान कहे।गुरुवार को नगर पालिका अध्यक्ष प्रिंस राठौर ने यहां पर करीब 13 लाख के रोड और नाली निर्माण का भूमि पूजन क्षेत्रवासियों से करते हुए कहाकि विकास के लिए भाजपा सरकार के पास धन की कमी नहीं है और हम मिलजुलकर शहर की आवश्यकताओं के अनुसार विकास कर रहे है। इसमें आप सभी का सहयोग जरूरी है। इस दौरान वार्ड पार्षद पूर्णिमा दिनेश कुशवाहा ने बताया कि भाजपा की डबल इंजन की सरकार के कारण ही वार्ड की सभी समस्याओं का निदान हो रहा है। हमारे परिषद के सक्रिय अध्यक्ष श्री राठौर के नेतृत्व में बिना भेदभाव के विकास कार्य पूर्ण कराए जा रहे है। इस दौरान क्षेत्रवासियों ने करीब 13 लाख से होने वाले विकास कार्य का भूमि पूजन किया गया। इसमें वार्ड के अंतर्गत आने वाले कलेक्ट्रेट के सामने रीता दुबे के घर से मैन रोड तक रोड और नाली निर्माण जिसकी लागत करीब साढ़े आठ लाख और कुशवाहा वाली रोड कीबर चार लाख की लागत से बनाए जाने वाले रोड निर्माण का भूमि पूजन किया गया। इस मौके पर मुख्य रूप से नगर पालिका उपाध्यक्ष विपिन सास्ता, प्रदीप बिजोरिया, कमलेश राठौर, प्रदीप गौतम, अजय पाल राजपूत, विरेन्द्र परमार, लोकेन्द्र वर्मा, विजय कोली के अलावा वार्डवासी और क्षेत्रवासी शामिल थे।

एक मई से लागू होगा स्मार्ट पीडीएस सिस्टम

पीडीएस के सभी हितग्राहियों को 30 अप्रैल तक ईकेवाईसी कराना अनिवार्य

सीहोर(निप्र)। खाद्य नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण विभाग द्वारा एक मई 2025 से स्मार्ट पीडीएस लागू किया जाएगा। स्मार्ट पीडीएस के सभी पात्र हितग्राहियों की ई-केवायसी 30 अप्रैल तक कराई जाएगी। उच्चतम न्यायालय के आदेशानुसार भी सभी पात्र हितग्राहियों का ई-केवायसी कराना अनिवार्य है। खाद्य नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण विभाग की अपर मुख्य सचिव द्वारा वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से इस संबंध में सभी कमिश्नर्स एवं कलेक्टर्स को निर्देश दिए गए। सीहोर कलेक्टर कार्यालय के एनआईसी कक्ष से कलेक्टर बालागुरू के. सहित सभी संबंधित अधिकारी वीसी के माध्यम से बैठक में शामिल हुए। अपर मुख्य सचिव खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण श्रीमती रश्मि अरूण शमी ने बुधवार को ई-केवायसी अभियान और न्यूनतम समर्थन मूल्य गेहूँ उपार्जन की वीडियो कान्फ्रेंसिंग से समीक्षा की। उन्होंने अधिकारियों को निर्देशित किया कि पात्र हितग्राहियों का ई-केवायसी कर दोहरे एवं मृत हितग्राहियों के नाम सूची से विलोपित करवायें। ई-केवायसी की सुविधा पीओएस मशीन पर उपलब्ध है। मोबाइल ऐप से भी ई-केवायसी किया जा सकता है। एसीएस श्रीमती शमी ने इस कार्य में लगी टीम ग्राम/मोहल्ले में जाकर ई-केवायसी करना सुनिश्चित करें। उन्होंने कहा कि ई-केवायसी अभियान के दौरान राशन वितरण प्रभावित नहीं होना चाहिए। इस कार्य में पंचायत एवं ग्रामीण विकास तथा नगरीय प्रशासन विभाग के अमले का भी सहयोग लिया जाये। एसीएस श्रीमती शमी ने गेहूँ उपार्जन की प्रगति की जिलेवार समीक्षा की। उन्होंने कहा कि उपार्जन केन्द्र पर बारदाना एवं हम्माल/तुलावटी की समुचित व्यवस्था करें। स्लॉट बुकिंग अनुसार उपार्जन केन्द्रों में तौलकांटों की संख्या बढ़ाई जाये। उन्होंने निर्देशित किया कि जिन किसानों द्वारा स्लॉट बुक कर लिया गया है, उनसे उपज विक्रय के लिये सम्पर्क करें। भारत सरकार द्वारा निर्धारित एफएक्यू मापदण्ड के गेहूँ का ही उपार्जन करें। उपार्जित गेहूँ के परिवहन पर विशेष ध्यान दें। असामयिक वर्षा से उपार्जित गेहूँ की सुरक्षा सुनिश्चित करें। किसानों को बैठने के लिये छायादार स्थल, पेयजल एवं जनसुविधा की व्यवस्था करें। बैठक में आयुक्त खाद्य कर्मवीर शर्मा, एमडी नागरिक आपूर्ति निगम अनुराग वर्मा, संभागीय आयुक्त, कलेक्टर और विभागीय अधिकारी उपस्थित थे।

स्वत्वाधिकारी, सम्पादक, मुद्रक, प्रकाशक कृष्णकांत सक्सेना की ओर से श्री बालाजी प्रिंटर्स, प्लाट नं.21,सेक्टर-एच,इंडस्ट्रियल एरिया,गोविंदपुरा भोपाल से मुद्रित तथा 09 वैशाली नगर ग्राम शेरपुर शंकर मंदिर के पास सीहोर म.प्र. से प्रकाशित।
ब्यूरो प्रमुख -भावना सक्सेना। स्थानीय प्रतिनिधि-मनोज दीक्षित, सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा। मो.9425025999 ई-मेल - dainikkshitijkiran@gmail.com, वेबसाइट- www.kshitijkiran.com